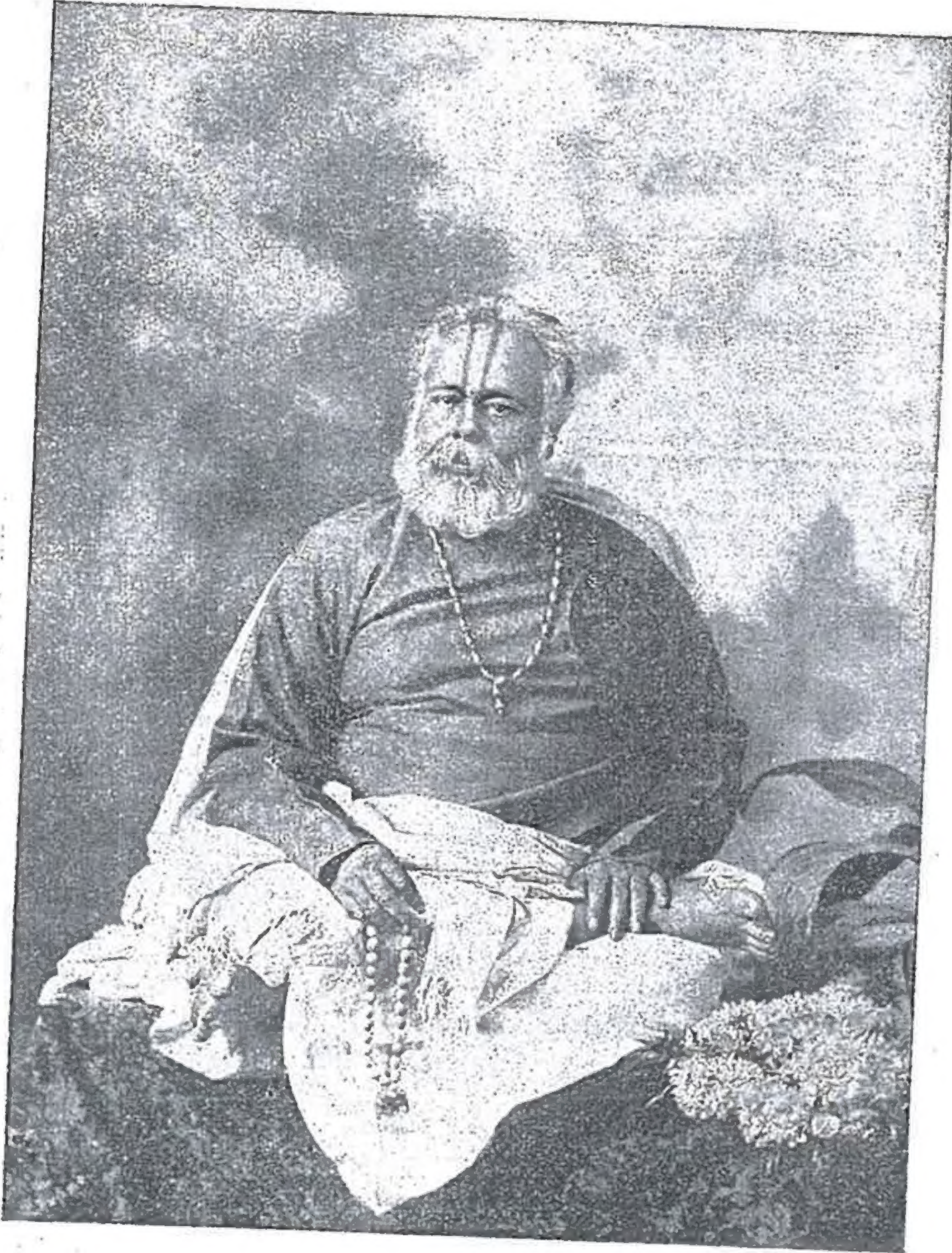
जातीय-रीति-दर्पण



गोस्वामिवर्य्य श्रीदेवकीनन्दनाचार्यजी महाराज

[प्रादुर्भाव—चैत्र शुक्ला ३ । १९१५ वि०]

विषय-तालिका

[बहिरङ्ग]

[अन्तरङ्ग]

"दो शब्द"

प्रस्तुत पुस्तक के साथ यथास्थान मेरा विचार कुलदेवता, गणपति, कलश, चौंतरा आदि प्रस्तावोपयोगी चित्रों के देने का था । एतदर्थ कितने ही घरों से प्राचीन चित्रों के मँगाने का उद्योग किया गया, किन्तु प्राप्त न हो सके। अतएव अपने यहाँ के ही जो चित्र प्राप्त हुए, उनके आधार पर नवीन चित्र जयपुर की कलम से तैयार कराये गये । किन्तु उनकी प्रामाणिकता में सन्देह रहा। फलस्वरूप ज्यों ज्यों सन्देह बढ़ता गया त्यों त्यों शास्त्रोक्त-सप्रमाण-सर्वोपयोगी चित्रों के निर्माण में अधिक बिलम्ब की सम्भावना हुई । इधर यज्ञोपवीत के उपलक्ष्य में ही जातीय महानुभावों की सेवा में पुस्तक पहुँचा देने का निश्चय होने पर भी चित्रादि के अन्वेषण-निर्माणादि में ही बहुत समय लग गया। अतएव अब अधिक विलम्ब न हो, यह सर्वोपयोगी महत्वपूर्ण साहित्य यथासमय शीघ्र ही सब महानुभावों के समीप पहुँच जाय; इस विचार से चित्रों के प्रकाशन का विचार स्थगित किया गया और प्रस्तुत ग्रन्थ जातीय महानुभावों के समक्ष उपस्थित किया गया है । सप्रमाण, सर्वाङ्गीण एवं सर्वोपयोगी चित्रों के निर्माण का प्रयास हो रहा है । यदि फलीभूत हुआ तो यथासम्भव चित्र पुस्तक के द्वितीय खण्ड में प्रकाशित किये जायेंगे । वैसे तो सम्प्रति सभी के घरों में प्रायः अपनी-अपनी कुल-मर्यादा-परम्परा के अनुसार चित्रों का संग्रह रहता ही है । अस्तु,

संशोधनादि में सतर्क रहने पर भी प्रेस की असावधानी से कुछ त्रुटियाँ रह गयी हैं, जिनके सुधार के लिये अन्त में 'शुद्धि-पत्रक' दिला दिया गया है । उसी में जो कुछ अपेक्षित बातें छूट गयी हैं, उनका भी समावेश करा दिया गया है। आशा है, त्रुटियों को सुधार कर जातीय महानुभाव प्रस्तुत ग्रन्थ का कृपया समुचित उपयोग कर मेरे प्रयास को सफल बनायेंगे और आगे के लिये उत्साहित करेंगे ।

भवदीय—

गो० श्रीवल्लभाचार्य



गोस्वामि चिरञ्जीवि श्रीगोविन्दलालजी बाबासाहब
बटु वेष में ।

* श्रीगोकुलेन्दुर्जयति *

'श्रीदेवकीनन्दनाचार्य-स्मारक-ग्रन्थ-रत्नमाला-रत्नम् ४'

जातीय-रीति-दर्पण

[प्रथम-खण्ड]

चतुर्थ-पञ्चम-गृहाधीश्वर गोस्वामि श्रीवल्लभाचार्यजी महाराज

—की—

आज्ञानुसार

प्रकाशक—

क० गोकुलानन्द शर्म्मा तैलङ्ग 'साहित्यभूषण'

श्रीदेवकीनन्दनाचार्य-विद्याविभाग,

कामवन (राज्य भरतपुर)

मिती —

वैशाख शुक्ला ११ सं० १९९७ वि०

गो० चि० श्रीगोविन्दलालजी महोदय के

यज्ञोपवीत-दिवस।

प्रकाशित

प्रकाशक—
क० गोकुलानन्द शर्म्मा तैलङ्ग 'साहित्यभूषण'
श्रीदेवकीनन्दनाचार्य-विद्याविभाग,
कामवन (राज्य भरतपुर)

आनन्दाद्रि (भरतपुर राज्य)

प्रथम संस्करण
३०० प्रतियाँ

वै० शु० ११।९७ वि०

मुद्रक—
बा० प्रभुदयाल मीतल,
अग्रवाल इलैक्ट्रिक प्रेस, मथुरा।

उपहार



श्रीमान् ....

....

....

"प्रस्तावना"



"आचारः परमो धर्मः"

—चाणक्य

प्रत्येक जाति अथवा समाज में कुछ परम्परागत विशेषताएँ होती हैं। उन विशेषताओं में उसकी मूल सभ्यता की छाप होती है। उन्हीं विशेषतासम्पन्न प्रचलित प्रणालियों को उसकी संस्कृति कह सकते हैं। संस्कृति का समाज में सजीव रूप से विद्यमान रहना अतीव आवश्यक है। संस्कृति समाज का प्राण है, उसके अस्तित्व की मूल भित्ति है। जिस प्रकार समाज के स्थायी कल्याण के लिये संस्कृति की अपेक्षा है, उसी प्रकार संस्कृति के इतिहास की भी अपेक्षा है। अतएव जातीय रीति-रिवाजों का प्रकाशन कितना महत्वशाली है, यह कहने की आवश्यकता नहीं-विशेषकर ऐसे समय में जब कि आज के धर्म-विरोधी देश-काल-वातावरण से प्रभावित होकर सभी समाज अपनी प्राचीन संस्कृति, वेषभूषा, सामाजिक-वैदिक प्रणालियों को भूलकर अपने पुरातन जातीय इतिहास एवं गौरव की द्योतक रीति-पद्धतियों के प्रति उपेक्षा-बुद्धि से काम ले रहे हैं।

हमारी शु० वै० वेल्लनाटीय जाति की सामाजिक पद्धति-प्रणालियों का सीधा सम्बन्ध दक्षिण से है, किन्तु इस समाज को उत्तर-देश में आये हुए कई शताब्दियों के व्यतीत हो जाने से हमारे आन्तरिक जीवन की गतिविधि में अधिकांश परिवर्तन हो गया है। रीति-रिवाजों के सुव्यवस्थित इतिहास के अभाव में दिन-अनुदिन हम अपने वास्तविक स्वरूप को विस्मृत सा किये जा रहे हैं और इसके परिणामस्वरूप जिस प्रकार सर्व-सामान्य को सम्प्रति इतिहास की अनभिज्ञता से असुविधा एवं कर्मलोप की सम्भावना है, उसी प्रकार भावी सन्तति भी इसी बिडम्बना में पड़ सकती है। यह जाति एक जगत्प्रसिद्ध जाति है। बड़े-बड़े पृथ्वीपाल एवं अस्सी-लाख वैष्णव-जनता के दीक्षा-गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य महाप्रभुचरण ने इसी जाति को जन्म से अलंकृत किया है। कहना न होगा कि

श्रीमदाचार्यचरण की अनेक विशेषताओं में आचार-पालन तथा वैदिक कर्मों में दृढ़ श्रद्धा रखने की विशेषता प्रधान है। यहां तक कि सर्वोत्तम-स्तोत्र में आचार्यचरण को 'कर्म-मार्ग-प्रवर्त्तकः' नाम से सम्बोधित किया गया है। अस्तु—उक्त जाति "धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः" के अनुसार आचार का यथावत् पालन करती हुई अपनी परम्परागत विशेषता की सुरक्षा करती आ रही है। वर्तमान वातावरण में अन्यान्य समाजों की भाँति इस जाति-समाज पर भी घातक प्रभाव न पड़ जाय, इसके लिये सचेष्ट रहना आवश्यक है। इसी कर्त्तव्य एवं व्यवहारों के यावच्छक्य संरक्षण के पवित्र उद्देश्य को लेकर जाति की सामाजिक- वैदिक रीतियों के सम्पादन को सर्वप्रथम समझा गया है।

शु० वै० वे० महासभा ने एतद्विषयक योजनाएँ समय-समय पर अपने अधिवेशनादि में निर्धारित कीं तथा उन्हें क्रियात्मक रूप देने के लिये पर्य्याप्त द्रव्य भी स्वीकार किया, किन्तु सभाकोष की असमर्थता एवं सर्वविध सहयोग के अभाव में वे योजनाएँ क्रियाशील न हो सकीं। अतएव इस कार्य की महत्वपूर्ण उपादेयता को ध्यान में रखकर इस कार्य में साधनाभाव से अधिक विलम्ब होते देख गोस्वामी श्रीवल्लभाचार्य जी महाराज की आज्ञानुसार श्रीदेवकीनन्दनाचार्य-विद्याविभाग ने गो० चि० श्रीगोविन्दलाल जी बाबासाहब के मंगल-यज्ञोपवीत-प्रस्ताव के उपलक्ष्य में श्रीदेवकीनन्दनाचार्य-स्मारक-ग्रन्थरत्न-माला के चतुर्थ-रत्न के रूप में 'जातीय-रीति-दर्पण' के नाम से शुभ लौकिक रीतियों का प्रस्तुत संग्रह प्रकाशित करने की सेवा स्वीकार की, एतदर्थ महाराजश्री के आदेशानुसार इस सेवा-भार के वहन में हम लोग प्रवृत्त हुए।

इसके पूर्व महासभा की ओर से जातीय शुभ कर्मों की रीति की कुछ पुस्तक मुद्रित कराके विशिष्ट महानुभावों के समीप संशोधनार्थ तथा सम्मत्यर्थ भेजी गयी थीं, किन्तु अधिकांश महानुभावों के यहाँ से बहुत समय व्यतीत होने पर भी यथोचित सम्मति प्राप्त न हो सकी। जिन महानुभावों ने सम्मति-सहित वापिस पुस्तक भेजने का अनुग्रह किया, वो भी आंशिक सम्मति रहीं। कुछ समय पूर्व गो० श्रीवल्लभाचार्यजी महाराज ने गो० श्रीद्वारकेशलालजी महाराज कोटा तथा गो० श्रीपुरुषोत्तमलालजी महाराज बम्बई वालों से गो० श्रीलालमनजी महाराज के घर की जाति में प्रसिद्ध प्राचीन पुस्तक की प्रतिलिपि प्रदान करने के लिये अनुरोध किया था। उक्त दोनों महाशयों ने स्वीकृति भी दी थी,

किन्तु कई वर्ष व्यतीत होने पर भी उक्त पुस्तक प्राप्त न हो सकी। फिर बहुत समय पीछे चेष्टा करने पर हमारे एक सजातीय मित्र के यहाँ से उस पुस्तक की एक प्रतिलिपि प्राप्त हुई। ऐसी परिस्थिति में प्राचीन लिखित उपलब्ध पुस्तकों के आधार पर इसका संशोधन किया गया। उनमें प्रमुखतः गोस्वामी श्रीलालमनजी महाराज, अमरेली वालों की पुस्तक की प्रतिलिपि, एक पुस्तक त्रिगृह श्रीगोवर्द्धनलालाजी से प्राप्त, एक पुस्तक स्व० त्रिगृह श्रीदेवजीलालाजी से प्राप्त, एक पुस्तक स्व० करञ्जी श्रीछन्नूलालाजी से प्राप्त, एक पुस्तक चतुर्थ-गृह श्रीगोकुलनाथजी के यहाँ की तथा श्रीदेवकीनन्दनाचार्य–पुस्तकालय, कामवन से प्राप्त दो-तीन पुस्तकों का अवलोकन संशोधन के समय किया गया। उक्त सभी प्राचीन लिखित पुस्तक एक ही शैली एवं अधिकांशतः एक ही भाषा में लिखी पायी गयीं। अतएव उन पुस्तकों में बहुमत मिलने से प्रस्तुत जातीय रीतियों को प्रामाणिक समझा गया। इसके अतिरिक्त जातीय वयोवृद्धों तथा प्रान्तीय उपाध्यायों की सम्मति तथा प्रचलित रीतियों के अनुभव को भी दृष्टिकोण में रखा गया। फिर श्रीकृष्णभण्डार, कामवन के पुराने चौपड़ों से भी एतद्विषयक पर्याप्त सहायता मिली। इस प्रकार उपलब्ध साहित्य के आधार पर पुस्तक की प्रेसकापी क० गोकुलानन्दजी द्वारा तैयार करायी गयी।

प्रस्तुत पुस्तक के संशोधन के समय एक विचार भाषा-शैली-सम्बन्धी उपस्थित हुआ। सभी रीति की प्राचीन पुस्तक ठेठ व्रजभाषा में पुरातन शैली में लिखी मिलीं, जिनमें विषय की असम्बद्धता, भाषा की अस्फुटता, पुनरावृत्ति कतिपय अपेक्षित बातों की अनुपस्थिति आदि बातें विचारणीय पायी गयीं। उस भाषा, शैली आदि को सम्प्रति व्यवहार्य रूप में संशोधित करने का विचार हुआ, किन्तु यह अनुपयुक्त समझा गया—यह सोचकर कि यह एक प्राचीन जाति-भाषा है, अथच एक प्रकार का जातीय इतिहास है, अतएव उसका संरक्षण करना आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। अतएव उस भाषा-शैली को अविकल रखा गया। जहाँ-तहाँ अस्पष्टता-निवारण की दृष्टि से संशोधन कर दिया गया है। इसी प्रकार असामान्य लेने-देने की रीति-रिवाजों को भी ज्यों की त्यों रख कर यथास्थान "यथाशक्ति" शब्द का विनियोग करके सर्वसामान्य के उपयोगी बनाने की चेष्टा की गयी है। लेन-देन, दक्षिणा, बाँट आदि के संशोधन में हमारा स्वतन्त्र अधिकार न होने से हमने किसी प्रकार का निजी मत निर्णय रूप में नहीं लिखा है। यह तो महासभा के अधिकार की बात है। अतएव उससे आशा है कि वह

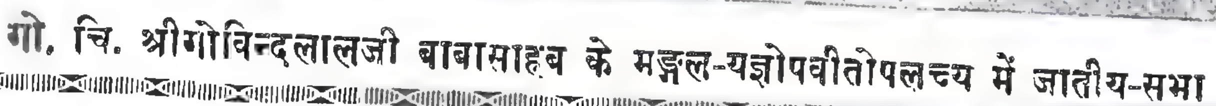
अपने किसी अधिवेशन में इस सम्बन्ध में देशकाल के अनुसार सर्वसाधारण के उपयोगी कोई एक सीमा निर्धारित करदे। अस्तु।

अन्त में सुविधा के विचार से परिशिष्ट-भाग जोड़ दिया गया है, जिसमें सामान्यतः सभी प्रस्तावों से सम्बन्ध रखने वाले विषयों का पृथक् रूप से उल्लेख कर दिया गया है तथा प्रस्तावों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का भावार्थ दे दिया गया है। ऐसे ही गणपति-कुलदेव के चित्र आदि का भी समावेश कर दिया गया है। अन्त में कुछ खाली पृष्ठ छोड़ दिये गये हैं, जिनमें अपने-अपने घर की विशेष रीति वा कोई याददाश्त लिखी जा सके। इस प्रकार प्रस्तुत पुस्तक को अधिक से अधिक सर्वाङ्गपूर्ण, सर्वसाधारण के उपयोगी एवं भावी जाति-समाज के लिये मार्ग-निदर्शक बनाने की यावच्छक्य चेष्टा की गयी है। तथापि यदि विशिष्ट परामर्श से कोई महानुभाव हमें सूचित करेंगे तो अग्रिम संस्करण में उसका सादर समावेश हो सकेगा।

माननीय त्रिगृह श्रीगोवर्द्धनलालाजी को आन्तरिक साधुवाद है, जिन्होंने सोत्साह अपनी प्राचीन लिखित पुस्तक देकर इस जातीय सेवा में हमें सहयोग दिया। साथ ही उन सभी महानुभावों को हार्दिक धन्यवाद है, जिन्होंने प्रस्तुत पुस्तक के संशोधनार्थ अपनी-अपनी लिखित पुस्तक देने का अनुग्रह किया। जिन्होंने आंशिक सम्मति प्रदान की, वे सज्जन भी धन्यवाद के पात्र हैं। हमें आशा है कि यह पुस्तक जाति-समुदाय के लिये उपादेय एवं संग्रहणीय होगी और इस प्रकार हम अपने एतद्विषयक सेवा-प्रयास को सफल समझेंगे।

आनन्दाद्रि
अक्षय-तृतीया, ९७ वि०

विनीत सम्पादक—
रेही पन्नालाल शर्म्मा
बागरोदी गिरिधारी शर्म्मा



गो. चि. श्रीगोविन्दलालजी बाबासाहब के मङ्गल-यज्ञोपवीतोपलक्ष्य में जातीय-सभा





श्रीशुद्धाद्वैत-वैष्णव-वेल्लनाटीय-महासभा

द्वारा

प्रस्तावित

जातीय-रीति-दर्पण

[प्रथम-खण्ड]

१—द्वितीय महाधिवेशन,	प्रस्ताव नं० ५
२—तृतीय-महाधिवेशन,	प्रस्ताव नं० १४
३—चतुर्थ-महाधिवेशन,	प्रस्ताव नं० ७
४—विशेषाधिवेशन कामवन (भरतपुर)	
५—षष्ठ-महाधिवेशन	तृतीय-दिवस

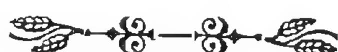
गो. चि. श्रीगोविन्दलालजी बावासाहब के मङ्गल-यज्ञोपवीतोपलक्ष्य में जातीय-सभा

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥

॥ श्रीमदाचार्यचरणकमलेभ्यो नमः ॥

 जातीय-रीति-दर्पण 



॥ अथ प्रथम ऋतु होय ताके प्रस्ताव की रीति ॥

जा दिन प्रथम ऋतु होय ता दिन दलम को मुहूर्त्त दिखावनो। जा दिन मुहूर्त्त होय ता दिन दलम लगे। जा स्त्री कूं ऋतु भयो होय सो दलम लगे पीछे भोजन करे।

ताकूं लहँगा, चोली, साड़ी, चादर किनारी के रंगीन पहरावने। फेर जा स्थान में ऋतु भयो होय ता स्थानसूं वाके आगे चनाकी दार की खिचड़ी की ३ ढेरी करे तिनमें ३ पेंड़ धरकें जा कोठामें दलम देनो होय ता कोठा में जाय। तहां हरदी को चौक पूरके उन कपड़ान कूं उतार दूलह के ब्याह की पीरी धोती पहरे और दूलह के ब्याह को उपरणा होय ताके चारों छोरन में चना की खीचड़ी बाँध हरदी के चौक में बिछावे। तापै वह दुलहन बैठे और दुलहन के पास दोऊ ओर दोय कुमारी कन्या बैठें, छुवें नहीं। कन्यान को नाम वलगुती है। जा सुवासनी स्त्री कूं ऋतु न होतो होय सो दलम देय।

दलम की विगत

दो तीर मँगाय हरदी सूं रंगनो। उनके भाल (नोंक) पे नाड़ा सूं दूब बांधनी। पीछे तीर दोऊ हाथन में लेके कच्चे दूध में बोड़कें दुलहन के ऊपर तेल चढ़ायवे की रीति सूं (पामन पे, घोंटून पें, कंधान पें, माथे पे)

तीन-तीन बेर छींटा देनो। ऐसे ही दोऊ बलगुतीन कूं हू दलम देनो। फेर हरदी के चून के ४ दीवा, ४ मुठिया तथा आरती १ बनावने। चौक के चार खूंट पे चना की दार की खिचड़ी की चार ढेरी करे, तिनपे चार दीवा धरे। ता पीछे दलम देवे वारी मुठिया वारकें आरती करे। आरती में दुलहन तथा बलगुती सुपारी डारें। दोनों कन्यानकूं तथा दलम देवे वारी कूँ तीन दिन को पिंडरू लगै। तीन दिन दलम देनो। चौथे दिन तेल उतारवे की रीति सूं (माथा पे, फिर कंधे पे, फिर घोंटू पे, फिर पाम पे) छींटा देकें दलम उतारनो। ऐसे ही बलगुतीन कों दलम उतारनो। फिर चौथे दिन न्हायवे को मुहूर्त होय तो न्हवानो। नहीं तो मुहूर्त होय ता दिन न्हवाय के श्रृङ्गार करनो। न्हायवे के बुलावा फिरें। फेर दूसरी जगह चौक लगै, तापै वैसे ही तीनों बैठें, दीवा, ढेरी फिर नहीं धरे जांय। फेर वैसे ही दलम चढ़ें उतरें। आरती होय, दुलहन सुपारी डारे। छूए के सगरे कपड़ा पीरी, पट्टू सहित धोबन के जाँय। छुए के चार दिन ताईं जाति की बहूबेटीन में चना की दार की खिचड़ी तथा पूआ को भोज होय। ताको निमन्त्रण पीरे अछत कटोरी में धरकें जाति की कुँवारी कन्या अथवा ऐवाती दे। दूसरे दिन के भोज सूं मूंग भात भी हो सके है, सामग्री पूआ की होय। स्नान के मुहूर्त में विलम्ब होय तो नहीं न्हाय तहां ताईं भोज होय, नहीं तो चार दिन तो अवश्य भोज होय। जितने दिन भोज होय उतने दिन के घर दीठ चार-चार पूआ के जाति में बाँट बटें। जाति में वायन गोसकी के बटें।

गोसकी के वायन की विगत

चामर, चना, हरदी की गांठ, आखो नोंन, तिलकुट इनको नाम गोसकी है। चामर तथा चना पस्सेन सूं बटें, नोंन तथा तिलकुट चुटकीन सूं बटें, हरदी को गांठ वायन प्रति १-१ बटें। या रीति वायन बटें। ये सब पीहर वारेन के करवे की रीत है, हाजर न होंय तो सासरे के करें।

स्नान की रीति !

जा दिन स्नान को मुहूर्त होय ता दिन हरदी की गोली बड़ी सुपारी के बराबर ४, खली की गोली नीबू के बराबर ४, गोबर की गोली ४, माटी की गोली ४ लेनी। नाइन न्हवावे। सौभाग्यवती ननंद अथवा ऐवाती बीच में ठाड़ी होय, सो नाइन के बासन में जल भरदे। पहिले खली लगावे, फेर माटी लगावे, फेर गोबर थोड़ो खाय और लगावे, फेर हरदी लगावे, ऐसे क्रम सूँ चार बखत न्हाय। अरीठा पीसकें माथो मिसले, हाथन की चूड़ी बड़ी कर नाड़ा लपेट ले। तिमनिया बड़ो करे, सो नाइन ले। और गहनान में सूं लाख निकरवाय सोनी पे धुवाय नई लाख भरवावनी। गोबर गोमूत्र छानकें पीनो। या प्रकार स्नान कर शुद्ध होय, नयो चूड़ा दांत को अथवा गुलाली पहिरे। न्हाय चुके तब साड़ी, चोली तथा कच्चो दूध बालक के हाथन दिवावने। शृंगार ननंद अथवा ऐवाती करे। शृंगार भये पीछे ५ फल गोद में देने, सास प्रभृति सगीन के पामन लगे। न्हवायवे वारी भी लाख के गहना बड़े करकें न्हवावे, तथा न्हवावे पीछे चूड़ी बदले। खड़ी माटी सूं न्हाय, गोबर, गोमूत्र छानके पीवे। न्हवायवे वारी कूं साड़ी चोली देनी। सबरे बासन खासा होंय, दलम देवेशरी सौभाग्यवती कूं साड़ी चोली देनी तथा बलगुतीन कूं ओढ़नी देनी। ऋतु समय को सवागा ननद कूं देवे की रीत है सो धोबन कूं दे देंय हैं, ताको निष्क्रय या दूसरो सवागा ननद कूं देनो। विवाह के धोती, उपरना न होंय तो नये पीरे रंग के ऊपर लिखे प्रमान पहरावनो। पहली छुई की छोत जापा बराबर गिने। जापा की तरह न्हाय। पहिले ऋतु सूं लेकें चार छुई तक ऐसे ही स्नान होय। स्नान के समय आरती होय। पहिली आरती के बायन भीजे चना के बटें। दूसरी आरती के बताशा बटें। तीसरी छुई गुप्त राखें। चौथी छुई की आरती के बायन रेबड़ी के बटें। पहिली छुई में चप्पन में खोचड़ी दुलहन कूं परोसी जाय, पातर में नहीं। ऋतुशांति पहली छुई में होय जाय तो फिर आरती नहीं होय। दूलह गाम में होय तो जा समय ऋतु

होय ता समय दूलह के यहाँ बधाई जाय। ता समय गाजाबाजा सूं दूलह के घर के आवें। दुलहन कों म्याने में बैठाय कें सवागा पहरे ही अपने घर लेजांय। दुलहन कूं तीन ढेरी खिचड़ी पे पांव धरवाय कें घर में ले जाय। वहाँ हरदी को चौक पूरके ऊपर लिखे प्रमाण दलम दियो जाय। खिचड़ी, पूआ को भोज होय, सो सामान पीहर सूं आवे और भोज सासरे में होय, प्रस्ताव होय। न्हायवे को मुहूर्त होय ता दिन न्हाय, चार दिन को नियम नहीं। दूलह गाम में होय तो पहिली छुई न्हायकें ऋतुसूं १६ दिन के भीतर समदिन में ऋतु शांति गर्भाधान होय, विषम दिन में नहीं और दूलह परदेश होय तो जब दूलह आवे ता पीछे की छुई पै मुहूर्त सूं ऋतुशांति होय। मुहूर्त सूं पहिले दूलह गाजाबाजा सूं बहू कूं लेके गृहवेश करे, ता बिरियां कलश लियो जाय, मार्जन होय, वार रुकाई होय, पुण्याहवाचन होय, सभा न होय। फेर बिछा-यत की तैयारी तथा बुलावा करके ऋतुशांति की सभा पूर्णाहुति के समय होय। तिलक, दक्षिणा, आरती, मंत्राक्षता होय। दक्षिणा पावली बटे। ऋतुशांति को भोज होय, ताको निमंत्रण पहिले दिन जाति में होय। भोज में सामिग्री उकर, सिखोरी होय तथा अङ्कुरी मूंग की होय। जाति में घर दीठ बाँट बटें।

गर्भाधानसंस्कार की रीति

गर्भाधान सूँ पूर्व मुहूर्त सूं ऋतुशांति होय, ऋतुशांति के दिन गर्भाधान को मुहूर्त होय तो अभिषेक भये पीछे दुलहन गाजाबाजा सूं पीहर शृंगार करायवे जाय, ता समय सासरे को नयो सवागा पहिरे। शृंगार ननद करे अथवा कोई और ऐवाती करे। शृङ्गार होय चुके तब दूलह के घर की बहू बेटी जायकें गाजाबाजा सूँ दुलहन कूँ ले आवें, ता समय फेर सभा होय, पहली सभा में तिलक मात्र होय, दक्षिणा मंत्राक्षता नहीं। सभा करके स्वस्तिपुण्या-हवाचन करके गर्भाधानसंस्कार होय ता समय दुलहन को पिता गोना देय। दोउ ओर ते विज्ञाप्ति होय, तापीछे तिलक, दक्षिणा, आरती, मंत्राक्षता होय।

फिर ऋतुशांति को भोज होय। बायन दमीदा के बंटें। गोना दिये के बायन दुलहन के पीहर सूं बतासे के बंटें। गर्भाधान के चामरन की खीर अथवा दूधभात करके दुलहन खाय, वामेंसूं जूठन पड़ी न रहे। जितनो खायो जाय उतने चामर नित्य करे। वे चामर बिनेमा साजे होंय हैं। सुपारी हू टूक टूक करकें बीड़ी में धरकें खाय। गर्भाधान के चामर मुट्ठी ५ और सुपारी ५ होंय।

दुलहन के पीहरिया गोना दें ताकी विगत

साड़ी १००, लंहगा ५०, चादर ५०, चोली २०० खलीती समेत। साड़ी, चादर, लहंगा, बसना सुद्धा देने। वासन—हांडा १, करछी १, पीतरको कटोरा १, थार १, तपेला १ पीतर को, चाँदी की लोटी अथवा झारी जल की १, प्याला तेल को १, काजर टीकी को बंटा १ साज सुद्धां, पलंगकसना साज सुद्धां। जमाई को पोशाक—जामा, नीमा, पाग, चीरा, उतरी, कमरबन्धा, सूथन इतनी पोशाक जमाई कूं तथा गहना दो, कड़ा तथा मोती देने। ताके संग दुलहन कों साड़ी, चोली, लंहगा, चादर तथा सोने को गहना १ भारी, अजबट, बिछिया, नथ, तिमनिया, टीकी, हाथन में मढ्यो चूड़ा अथवा हाथ को कछु गहना तथा रूपे की आरसी। पांच गहना सूं न्यून नहीं होंय और पहरावनी जमाई के दादा के तथा नाना के पेटकेन कों साड़ी उपरणा की देनी तथा उपाध्याय, पण्ड्या, धाय, दासो की पहरामनी देनी तथा जिनकूं विवाह में समधोरा दियो होय उन बहूबेटीन कूं पामन लगे की पहरामनी चार चार कपड़ा की देनी, भोज के रुपैया १०१) देनो या प्रमान गोना साजनो। भटजी की बेटी कों यासूं आधो गोना दियो जाय। गोना साजके अपने घर के सगेन की सभा करके तिलक करकें गाजाबाजा सों गोना लेके, बेटी के सासरे जानों। वहाँ सभा में गोना पढ़ायकें देनो। दूलह दुलहन घर के सवागा पहर पुण्याहवाचन पूर्वक गर्भाधानसंस्कार करें। दूलह दुलहन सवागा पहर के चोक बैठकें सब गोना लें। फेर पलंगपूजा होय। दुलहन आरती करे। ऐवाती गामनहारी प्रभृति कूं यथोचित बिदा करनी।

अठमासा प्रस्ताव की रीति

अठमासा को प्रस्ताव दिन दोय में अथवा चार में करनो। मुहूर्त दिखायकें कुंकुमपत्र भेजने, गणेश बैठावने। गीतारम्भ तथा ढोलपूजा होय। सीमन्त के एक दिन पूर्व वृद्धि, कुलदेवतास्थापन होय। वृद्धि निमन्त्रण सब मिलकें पहिले दिन करें, तामें सीमन्त की सभा तथा भोज को निमंत्रण करें। वारन पीरे अक्षत के बहूबेटीन में बुलावा देय। फिर बिछायत की तैयारी तथा बुलावा होय कें वृद्धि के दिन सभा होय। दक्षिणा १) अथवा ।) बँटे। भोजहू होय। अठमासा की वृद्धि में चक्की मूसर नहीं होय और सब होय। पीहर सूं गोठी साड़ी तथा हार ५ मुहूर्त सूं पहरायवे कूं आवें। सीमंत को वैदिक कार्य मुहूर्त सूं होय।

हारन की विगत

हार पवित्रा को १, हारगुंजा को १, हार गूलर को १, हार जौ को १, हार लौंग को १: ये पांचों हार साँची दुगदुगी के होंय। इन हारन कों सभा में दूलह दुलहिन कूँ मुहूर्त सूं पहरावें। वा समय साध वारे साध लावें। ता समय दायजा तथा गोना के अनुसार दादा, नाना के पेटकेन की पहरावनी अथवा घटती बढ़ती होय ता प्रमान देनी। हार जितने बन आये होंय तितने देनें।

अठमासे को वैदिक कार्य भये पीछे दुलहन पीहर में शृंगार करायवे जाय। शृंगार होय। पीहरिया मिश्री खवामें। पीछे दुलहन कूं गाजाबाजा सूं बहू बेटी सासरे लिवाय लामें।

अठमासो सजे ताकी विगत.

दुलहन कों सवागाः तामें लहंगा, चोली रेशमी कपड़ा के किनारीदार तथा चादर सूतरू रंगीन किनारी की, साड़ी गोठी (स्वेत धरती पे पीरे चित्र वेलबूँटा बहूबेटी केसर आदि सूं काढें हैं, ताको नाम गोठी साड़ी है) तथा दूलह के लिये साल और सब कपड़ा गोना की तरह साजनों तथा सगे कुटुम्बीन कूं पहरामनी। दूलह दुलहन कों यथाशक्ति गहना तथा हार मेवा, मिठाई, किराने तथा तर मेवा, गुञ्जा, पवित्रा, जौ, गूलर, लोंग, गेहूं, चना, चना की दार, दोनों इलायची, जायफल, सोंठ, पीपर, पीपरामूल, जीरा धनिया प्रभृति के यथारुचि करने-तथा इलायची की पहुँची करनी। तथा पकवान के हार सब-तामें पांच मुख्य सेव के लडुआ, बूंदी के लडुआ, गूंजा ठोर, सकरपारा, तथा टंडुल होय, लाल दर्याई को किनारी को माथा में पहरवे को। तथा भोज के रुपैया १०१) अथवा यथाशक्ति, तथा साध के पकवान नग २१ एक एक भाँत के अथवा जिन सामग्रीन के हार होंय उनके नग ५, ५ होंय। एक एक नग पक्के सेर अथवा आध सेर अथवा पाव सेर को होय। या प्रमाण अठमासा साज के सगेन की सभा कर तिलक करकें दूलह के यहां गाजाबाजा सूं जांय। वहां सभा होय, ऊँपर लिखे प्रमाण अठमासा पढ़ाय के दे। साध के टोकरा खासा में भीतर पहुँचाय दे। सवागा, गहना बेटी जमाईकूं देय, पहरामनी सब देय, भोजके रुपैया देंय, हार सब सभामें दुलहन कूं दूलह पहरावे। फेर दुलहनके पीहरके सम्बन्धी सवागा तथा गहना यथासम्बन्ध यथाशक्ति दें। परस्पर विज्ञप्ति होय। तिलक, दच्छिणा, मंत्राच्छता होय। दच्छिणा में रुपैया २) अथवा १) बटें। कुलदेवता कों दण्डवत् कर हार बड़े करें। दमीदा के बांयन बटें। चार बांयन बतासा के बटें। अठमासा के बाँटवे योग्य हार तथा साध के पकवान बहनबेटी, जाति, व्रतेश्वरीन में बँटें। तथा भोज के घर दीठ बांट बटें सभा पीछे बहूबेटी चौंतरा ऊपर आवें-दुलहन कूं टंडुल पहरावें। गोठी साड़ी पहरावें। इलायची की पहुंची पहरावें। दुलहन की मा हार देती

जाय, दूलह की मां हार पहरावती जाय। चादर उढ़ाय ग्रन्थिबन्धन करें, आरती करें। पीछे गोना की रीति सूं पामन लगें। फेर कुलदेवता की कोठरी में जायकें दण्डवत् करके हार बड़े करें। ता पीछे वाही दिन अथवा दूसरे दिन भोज होय। भोज में बूँदी के लडुआ, पांचों भात होंय। दूसरे दिन पीहरिया भोज करें, तामें चौक पूर कें पट्टा पीरी बिछायके दूलह दुलहन कों बैठाय कें साड़ी, चोली, पाग, इकलाई की पहरावनी दें। भोज में सामग्री सेव के लडुआ, पांचों भात करें। ऐसे ही दुलहन के सम्बन्धी सब को भोज करें। अथवा दूलह के सगेन को भोज करें अथवा दूलह के घरकेन को भोज करें अथवा दूलह दुलहन को ही जिमावें। चौक पूर कें पट्टा पीरी बिछाय ग्रन्थिबन्धन कर सवागा दें, तथा भोजन करावें। दूसरे दिन कुल देवता विसर्जन होंय। यदि वृद्धि अठमासा के दिन ही भयी होय तो कुलदेवता विसर्जन होय अन्यथा अठमासा के तीसरे दिन होय। दुलहन कूं आठवों महीना लगे तब सूं एक महीना को पिंडरू लगे। तब सूं जल, चिकनाई छुवे नहीं। नौमो महीना लगे तब माथे सूं न्हाय पिंडरू उतरे। गुड़धानी बंटे। गावनहारी प्रभति कूं विदा में साड़ी तथा यथायोग्य रुपैया देनो। विशेष श्रद्धावान् होंय सो या प्रस्ताव में ग्रहशांति हू करें हैं।

मंगलस्नान की रीति

पुत्र भयो होय तो मङ्गलस्नान को निमन्त्रण जाति में होय। बिछायत की तैयारी तथा बुलावो होय। पुरुष व्यक्तिन की सभा होयके मङ्गल-स्नान कूं जांय। स्त्रीजनन में दसूठन तांई नित्य गीत गवें। कलश जल सूं भर के ऊपर नारियल धरकें जौ की ढेरी पे जापा के कोठा में अहवाती धरे। जल जौन के ऊपर छिड़कती रहे। नाल छिदाई की मूँदरी दाई कूं देनी। पुत्र होय तो वाको पिता अपने कण्ठ में सूं एक यज्ञोपवीत उतार कें बालक के नाले पे ऊँचे सूँ धर देय। दूर सूँ माथो सूँघनो। कन्या होय तो नाड़ा नाले में धरनो। मङ्गल-स्नान पहिले नाई दूब बांधे, ताकूं पाग, उपरणा तथा रुपैया २) देने। और

भैयाबन्ध दूब बंधाई को रुपैया १) दें। फेर मङ्गलस्नान करवे कूं जांय। संग में जाति के, उपाध्याय, पण्ड्या तथा गामनहारी रहें, गाजाबाजा सूं जांय। गंधाक्षत की थारी, सुपारी, तीर्थ गङ्गा, यमुना होंय तो दूध, भोग पुष्प तथा भेट १), नान्दीमुख को १), गोदान को रुपैया १) इतनो लेके जांय। मंगलस्नान करके घर आवें। तिलक, दक्षिणा, मंत्राक्षता होय। दक्षिणा रुपैया १) अथवा यथाशक्ति बटे। वायन खोपरा की कटोरी खाँड़ भरके बटें।

मोटालू की रीति

बालक भये पीछे मोटालू मुहूर्त दिखायके तीसरे दिन अथवा पांचवे दिन होय। स्त्रीजन में चरुवा चढ़ायवे के लिये मोटालू के बुलावा देने। मोटालू की तैयारी करनी। कुरूकुट्ट करने--सो पुत्र भयो होय तो लोढी १ तथा केलू २ और कन्या भयी होय तो केलू १, लोढी २, केलू न मिले, तो केलू के ठिकाने ईंट लेनी। इन तीनोंन कूं हरदी सूं रंगके नाड़ान में हरदी की गांठ बांधके तीनोंनसूँ जुदे-जुदे बांधने, तीनोंन कूं काजर सूं दोय-दोय आंख करनी। चौक पूरके तीनोंन कूं ठाडे धरने। पुत्र भयो होय तो केलू दोऊ ओर धरने, बीच में लोढी धरनी—कन्या भयी होय तो लोढी दोऊ ओर धरनी, बीच में केलू धरनो। आगे भीजे चना की दोय ढेरी करनी, तथा बीच में सूखे चामर धरने, तामें पावली १ धरनी। चनान पे टका-टका धरनों।

चरुआ चढ़ायवे की रीति

माटी को कलश लाल एक, जामें कारो छींटा न होय, ऐसो गाजा-बाजा सूं गायवेवारी कुम्हार के घर जायके ले आवें। ता कलश कूं भींजी

हरदी सों रंगके वाके गरे सूं नाडा को कठला बांधनो। कठला बनायवे की विगत—हरदी की गांठ १, सोंठ की गांठ १, पीपरामूल की गांठ १, हरड़ बड़ी १, बच की गाँठ १, छल्ला लोहे को १, छल्ला लाख की चूड़ी को १, इतनी वस्तु नाड़ा में बांधनी । ऐसी तरह के कठला चार करने। तिनमें एक कठला चरुवा के गले सों बांधनो, दूसरो जापा की मेंड में बालक के बिछौना में राखनो, तीसरो घी मांगवे की थारी में धरनों, चौथो कुरूंकुट्टू कों पहरावनों। और कांसे की थारी में केवको तथा सुपारी, हरदी धरकें कुरूंकुट्टू के आगे धरनो और चूल्हा १ उठाऊ माटी को होय ताकूं भीजी हरदी सूं रंगनो। कुरूंकुट्टू के पास चौक पूरकें चूल्हा धरकें तापे रंगे कलस को चरुवा चढ़ावनो। सो चरुवा जच्चा की सास चढ़ावे । सास न होय अथवा सास विधवा होय तो और सौभाग्यवती नजीक की सगी होय सो चढ़ावे। जच्चा की सास, जिठानी प्रभृति सगीन कूं सवागा देनो। साड़ी, चोली, चादर, लहंगा तथा गहना १ देनो। सास कूं गहना पांच देनों वा रोक रुपैया यथाशक्ति देनें। विधवा बहूबेटीन कूं मुकटा रेशमी तथा चादर सफेद, लहंगा, चोली रेशमी देनों । गहना में चौकी, डोरा अथवा रोक रुपैया यथासम्बन्ध देनों।

बहूबेटीन सूं साथिया धरायवे की रीति

साथिया की थारी साजवे की विगत—कुंकुम, अच्चत, सुपारी, महंदी, गोबर, पिसी भीजी हरदी, चांदी तथा सोने की सात सींक, तामें २ सोने की, ५ चांदी की, गुड़ की डेली १, घी को बटेरा १, सोने चांदी के साथिया दोय-दोय, तथा रुपैया रोकड़ा १) तथा रुपैया १) न्यौछावर को। या रीति सूं थारी साज के गाजाबाजा सूं मोटालूवारे के घर जाय, साथिया धरे ।

मोटालू के दिन भैयाबन्धु तथा जातिकेन के पठायवे की रीति

चामर सेर ऽ१, हलदी की गांठ ५, नारियल के गोला २, पान १००, खपरा को रुपैया १), सुपारी १०, या प्रमान पठावनो।

घृत माँगवे जांय ताकी रीति

गंधाच्चत की एक थारी में काजर के पूतरा २ लिखें। तापे चरुवा चढाई की बखत को कठला १ नाडा को तथा कटोरी २ चांदी की धरे। चाँदी की कटोरी १ पूतरा में औंधी धरे, दूसरी कटोरी में घी मांगे, सो चार घर गाजाबाजा सों जानों। प्रथम तो घर में बड़ो होय, ताके पास सूं वा चांदी की कटोरी में लेनो, दूसरी कटोरी वापे ढांकनी। घर में जो बड़ो होय सो घी की कटोरी में घी डार वा थारी में सूं कठला लेके छाती सों लगायकें पाछो वा थारी में धरे। ता पीछे चार घर मांगवे जाय, सो चारों घर को घी वाही कटोरी में एकठो करे। तामें बेटा होय तो चार घर घी मांगे, बेटी होय तो तीन घर घी माँगे। सो वा घी में बच अथवा जौ घिसकें बालक कूं चटावे। जो पुत्र भयो होय तो कतरनी के ऊपर घिसे तथा कन्या भयी होय तो सरोता पे घिसे। फिर मोटालू की आरती बालक की तथा जच्चा की होय, तामें रुपैया ५) वा २) डारने। जापे के घरके द्वारपे काजर के पूतरा दोय, एक-एक दोऊ ओर करने। आरती भये पीछे जच्चा कूं खायवे कूं देनो, सो मूंग की दार की खीचड़ी चप्पन में तथा घी बटेरा में देनो। पातर, दोना दस दिन ताईं न देनो और वो चप्पन, बटेरा तीसरे दिन को जूंठन को एक ओर ढांक रखनो। याकी नौमे दिन पूजा होय। जाति में वायन गुड़ की डेली, भीजे चना बटें।

छठी की रीति

छठी के पहिले दिन अथवा छठी के दिन पुरुष तथा बहूबेटी सभा करके वृद्धि की सी नाईं छठी नौंतवे कूं जाति में जाँय। फिर बिछायत तैयारी तथा बुलावा करकें सभा करनी। छठी की पूजा करनी। छठी में दक्षिणा रुपैया २) अथवा १) बाँटनो। ज्योतिषी जन्माक्षर बांचें ताकूं मोहर अथवा रुपैया ५) अथवा यथाशक्ति देनों और आरती में रुपैया १०) अथवा ५) अथवा २) यथा शक्ति यथात्साह डारने। छठी के दिन बहूबेटीन में वायन प्रमान तमोल बांटे। रुपैया अथवा पावली घरको बंटे और सगे संबंधीन की ओर सूं सम्बन्ध प्रमान घटती-बढ़ती बँटे। बेटी होय तो वायन बतासा के बटें, बेटा होय तो वायन रंग मेवा के बटें। छठी के भोज में फेनी अथवा चन्द्रकला, खाजा, सोंठ की बुकनी औट्यो दूध, मैदा की जीरा पूरी, या प्रमान भोज होय। ताई प्रमान घर दीठ बांट बटें।

छटावर बहनबेटी लावें ताकी विगत

पुत्र भयो होय तो फेनी अथवा चन्द्रकला के नग २१, बेटी भई होय तो फीके खाजा नग २१ एक छबड़ा में धरकें पीरे वस्त्र सूं ढाँकके वापे चौमुखा दीवा चून को करके धरनों, तेल पूरनो। फेर वा दीवा कों प्रगटा के गाजाबाजा सूं छटावर लेके बहनबेटी आवें, सो छटावर छठी के पास धरें।

छठी के ऊपर साड़ी धरनी, सो ओहार की साड़ी कहावे। तामें पीरी वथा छापा की तथा महमद तथा पटोरी, सो जितनी बहन-बेटी होंय तितने साड़ी रेजा (कपड़ा) धरने, सो बहन-बेटी कूं जाँय। और सब सगे होंय सो चना की दार की खीचड़ी सवा सेर तथा तेल को मलड़ा १ लावें। सो चना की दार की खीचड़ी तो छठी के दीवा के नीचे डारनी, तेल दीवा में डारनो। छठो बहनबेटी ऐंपन सों लिखें सो चाँदी को कटोरा बहनबेटी कों जाय।

छटी की तैयारी की विगत

छटी के पास नंगी तरवार तथा बंसी तथा रई नेती तथा छड़ी धरनी। एक कटोरी कांसा की घी भरकें पास धरनी, धारा करवे के लिये और छटी के आगे चौक पूरकें चना की दार की खिचड़ी ऽ५। सेर धरनी। तापै कूंडा १ तेलको भरकें धरनो। तामें लंबी बाती मोटी दोय धरकें दीवा के समय दीवा प्रगटावनो सो आखी रात रहे। वा दीवा के पीछे चौक पूरकें पट्टा विछावने। पूजा करवे के लिये गन्धाक्षत की थारी १, कुंकुम अक्षत, सुपारी धरनी। थारी १ आरती की तैयार करकें राखनी। छटावर आवे, सो छटी के पास धरनी। छटावर में आये होंय सो सब नग तथा घर की सामग्री छटी की भई होय सो एक छवड़ा में साज कें छटी कूं भोग धरने। तामें २१ नग धरें। छटी पूजा भये पीछे आरती होय, तामें मुठिया दोय वारे, मुठिया २ थारी में राखे। सो पीछे वोही आरती जच्चा कूं होय, तब मुठिया २ रहें सो वारें। तिलक, दक्षिणा होय। भोज भये पीछे स्त्रीजन रात में जागरन करें। तहाँ पिछली रात तमोल बटें। घर के तमोल सूं आधो नाना के घर को, तासूं आधो फूफी और बहन के घर को, तासूं आधो और सगेन को तमोल बंटे। जिनके यहाँ ते छटावर आवे, तिनकूं १।), ओहार की साड़ी १ तथा १ पीरी साड़ी छटा-वर की देनीं।

नौमे दिन चप्पनपूजा की रीति

नौमे दिन मोटालू के दिन को जो जूठन चप्पन बटेरा राख्यो होय, ताको पूजन जच्चा करे। पूजा की विगत—चौक पूरके पीरो टूक बिछायके वापे जच्चा बैठके वा चप्पन की पूजा कुंकुम अक्षत सों करे और चून को चौमुखा दीवा वा चप्पन में चार पूरी अथवा खाजा धरकें धरे। टका १ धरे। वा दीवा की आरती जचा बचा कूं होय। पीछे जच्चा बाहर आयके तारा देखकें

खाटपे बैठे। फेर दाई वा चप्पन कूँ दीवा सहित बाहर लावे, टका काढ़ ले दीवाकूं चौराहे में धरे, चप्पन कूँ बाहर डारदे।

जच्चा कूं शुद्ध स्नान ग्यारहवें दिन करायवे की रीति है, परन्तु स्नान मुहूर्त सूं होय है। जा दिन मुहूर्त होय, जच्चा के माथे की लट धुवाय देनी और ग्यारहवें दिन ऋतुस्नान के विगत के अनुसार स्नान करावनो।

जच्चा दसूठन न्हाय तादिन बटे ताकी विगत

हरदी की गांठ, पिसी हरदी की बुकनी, खड़ी के टूक, चोरीठा (चामर को चून) मीठो तेल या प्रमान जाति में वायन बटें।

गंगापूजी की रीति

श्रीगङ्गाजी तथा श्रीयमुनाजी विराजते होंय तो वहाँ जायकें गङ्गापूजी करनी। न विराजते होंय तो घर में कलस धरकें गङ्गापूजी करनी। गंगापूजी के दिन जच्चा बच्चा खड़ी सू न्हांय। जा कोठा में जापा भयो होय तामें शुद्ध भये पीछे पलंग के चार पाये के ठिकाने तथा पलंग के मध्य में चूनहरदी को चौक पूरके चना की दार की खिचड़ी को ढेर करकें वापे चून को चौमुखा दीवलो तेलबाती करके प्रगटावनो। तथा नाल गाड़ो होय ता ठिकाने हू चौक पूर खिचड़ी धर चौमुखा दीवा प्रगटावनो, नाल गड्यो होय तहाँ बालक कूँ लेकें जच्चा जाय, वा ठिकाने कंकू अच्छत सों पूजा करे और सोबड़ के घर में सब जगह कंकू अच्छत डारे, पीछे घर की भीत में तीनों ओर ऐंपन के थापान की दुहेरी पंक्ति दोउ हाथन सों दे। पुत्र भयो होय तो ठाडे दे और पुत्री भई होय तो आडे थापा दें। छुरी १ पीरे कपड़ा में लपेटके पास राखे और घर में चौक पूरके भीजे चना की ढेरी करके वापे लाल मृत्तिका को कलश जल भरकें धरनो। तापे आम के पतुआ तथा श्रीफल १ धरनो, साथिया करनो छबड़ा में गोवर की गौरी करके धरनीं। पट्टा पें जच्चा बैठके

बालक समेत वा कलश में गंगापूजा करे। सिन्दूर पहरावे; कंकू, अत्तत सों पूजा करे। बेटा भयो होय तो पाँच पकवान—गूंझा, माठ, लडुवा अथवा पूआ पूरी सुहारी छवड़ा में धरकें गंगाजी कूँ भोग धरे और बेटी भई होय तो पूआ भोग धरे। गौरी कूं सिन्दूर पहरावे, कुंकुम अत्तत सूं पूजा करके कलश में रुपैया १) डारे। तीर्थ होय तो वहाँ भेट करे। गंगापूजी की आरती होय, तामें रुपैया २) डारे। पीहरिया झगुली, टोपी, कड़ा, कठला, बेटीकूं सवागा पीरा, लडुवा के रोक रुपैया यथाशक्ति तथा खीचड़ी १।ऽ मन, घी ऽ१० सेर या प्रमान अथवा यथाशक्ति दें तथा सगे संबन्धी हू झगुली, टोपी, गहना आदि दें। वा समय बालक को नाम पाड़े, सो बालक की फूफी अथवा दादी नाम पाडें। वा बालक कूं पटोरा में संग कुरूकुट्टू धर के झुलावे। जापा के घर की देहरी तथा पोढ़ावे के घरकी देहरी जच्चा मांडे। पूजन पांच रंग के बिनोरान सों करे। ता पीछे घर की देहरी पूजके पीहर की देहरी पूजवे कूं नागपंचमी की नाईं जच्चा गाजाबाजा सूं जाय। देहरी मांड पिसी हरदी के लेपन सूं ५ साथिया मांड पान, सुपारी धरकें कंकू अत्तत तथा पांच रंग के बिनोरान सूं देहरी पूजे। भीजे चना तथा गुड़ की डेली भोग धरे। गंगापूजी के बायन भीजे चना के बटें। जितने बायन होंय उतने कटोरी चना देने। गङ्गापूजी पीछें जापा के कोठा में बालक भये के दिन को जो कलश है, वाहू कूं चौक पूरके पूजन करे। जाति में गुड़ अजवायन की पंजीरी के लडुवा दोय दोय घर दीठ बटें। अपने घर में कोई ऐवाती जेमती होय तो ऐवाती जिमावे। ऐवाती बेटा होय तो बेटी की माँ जीमें और बेटी होय तो बेटा की मां जीमें। घरकी ऐवाती होय, ताकूँ सवागा देय। दूरकींन कूं साड़ी, चोली, दत्तिणा दे। बतासा के बायन बटें।

कदाचित् बीच सें बालक को अशुभ होजाय तो काहू कूं बुलावे नहीं। मोटालू चरुवा घरमें होय, पांच थापा देके श्रीफल १ जचा की गोद में धरकें छटीपूजा, आरती, गङ्गापूजा सब होय। ताके पीछे नेगीन के नेग चुकावनें।

नेगीन के नेग चुकायवे की विगत

दाई कूं नाल छिदाई की मूदड़ी १, रुपैया १५), तंबोल को रुपैया १), गेहूँ सेर ऽ१०, गुड़ सेर ऽ१।, तेल सेर ऽ१।, लहंगा को थान एक छींट को, साड़ी, चोली १, बिदा के रुपैया ४)।

नाहिन कूं तंबोल रु० १), गेहूं सेर ऽ१०, गुड़ सेर ऽ१।, तेल सेर ऽ१।, लहंगा को थान १ छींट को, साड़ी चोली १।

मालिन कूं तंबोल रु० १), लंहगा को थान छींट को १, साड़ी चोली १ बिदा ॥) ।

बारिन कूं तंबोल को रु. १।), बिदा ॥), गेहूं सेर ऽ१०, तेल सेर ऽ१। गुड़ सेर ऽ१।, लहंगा को थान १, साड़ी चोली १ तथा लहंगा, साड़ी, चादर किनारी के मोटालू के दिन बुलावा समय देने।

ज्योतिषी कूं घड़ी की मोहोर १, जन्मपत्री के रु. ५), सेला १, पाग १।

धोवन कूँ तंबोल को रु. १), गेहूँ सेर ऽ१०, तेल सेर ऽ१।, गुड़ सेर ऽ१।, लहंगा को थान १ छींट को, साड़ी चोली १।

तासावारे कूं जन्मदिन सूं लेके गंगापूजी ताईं रु. ५), पाग, उपरणा।

नगारचीकूं जितने दिन बजावे तितने दिनके वृन्दावनी रुपैया पाग, उपरणा।

चारों गायवेवारीन कूं तंबोल के रु. ४), बिदा के रु. ४), लहंगा के थान छींट के ४, साड़ी चोली ४।

कुंडनी कूं तंबोल को रु. १), साड़ी चोली १, बिदा ॥)

बाहरवारे कूं वृन्दावनी रु. ४), गेहूँ सेर ऽ५, तेल सेर ऽ१।, गुड़ सेर ऽ१। पाग, उपरणा।

या प्रकार अथवा यथाशक्ति नेगीन कूं देनों।

जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन की रीति

जिनके यहाँ छठी नहीं होय, उनके यहाँ बारहवें दिन बरहीं को प्रस्ताव होय है, ताही दिन छटावर आदि बहन बेटी लावें बहन-बेटी तथा जाति के झगुली, टोपी, गहना हू याही दिन दें। जातकर्म, नामकरण होय। तिलक, दक्षिणा, आरती, मंत्राक्षता होय। जाति में पहरामनी यथोत्साह बटें। बायन बताशा के बटें।

जातकर्म, नामकरण ये दोनों प्रस्ताव पुत्र के बरही प्रस्ताव में अथवा जनेऊ में तथा कन्या के विवाह में वृद्धि होय, ता दिन होय। और अन्न-प्राशन छठे महीना अथवा पुत्र के जनेऊ तथा कन्या के विवाह समय होय। ता समय भैया-बन्धु आदि के देवे की रीति—पहरामनी भैया-बन्धु सब दें। पहरामनी २, छापा की साड़ी-उपरणा की जातकर्म और नामकरण की तथा अन्नप्राशन के सेव के लडुआ ५ तथा चोखा सेर ऽ१।, या रीति सों भैया-बन्धु सब दें। और उन्यां को रेजा (रूमाल) १ रेशमी गज १ को तथा रु० १) अथवा ।) सब जाति कें दें।

महिनान की आरती की विगत

बालक एक महीना को होय तब चौक पूरके बालक की माता बालककूं गोद में लेकें बैठे। आरती होय, भीजे चना बटें। ऐसे ही दूसरे महीना की आरती के दिन रेवड़ी अथवा इलायचीदाना, तीसरे महीना की आरती कूं दमीदा, चौथे महीना की आरती कूं रेवड़ी वा इलायचीदाना, पाँचवें महिना की आरती कूं मुठिया तथा छठे महीना की आरती कूं रंग मेवा बटें। षष्ठ पिंडरू (कसूमी छठ), संवत्सरादि वर्ष दिन की आरती कूं चना बटें।

चौथे महीना बालक कूं भूआ आखू चटावे, सो माखन-मिश्री चटावे, कुरता, टोपी तथा गहना देय। जाति में स्त्रीजनन में बुलावा देके भेले करके बतासा बांटने। आखू चटावे को भूआ कूं सवागा १ तथा गहना देनो।

छठे महीना बालक कूं अन्नप्राशन करावनो। चौक पूर के पीरी पट्टा बिछावनो। बालक की मा बालक कूं गोद में लेकें बैठे। एक मूंदड़ी सूं प्रसादी खीर पाँच बेर भूआ चटावे। वो मूंदड़ी भूआ लेवे।

मुण्डन की रीति

मुण्डन को प्रस्ताव पहिले वर्ष अथवा तीसरे वर्ष करनो। जाति में बुलावा निमन्त्रण करनो, बिछायत कर सभा करनी। चौक पूरकें पट्टा पीरी बिछाय गड़गड़ी की तैयारी करके गठजोड़ा सूं शृङ्गार करके बालक कों लेकें मातापिता बैठें। ऐवाती ग्रन्थिबन्धन करे। फेर पुण्याहवाचन करनो। फेर नाई कूं तिलक करनो, गेहूं सेर ऽ५।, गुड़ सेर ऽ१, परोत तथा पाग १, उपरणा १ देनो। फेर गाजाबाजा समेत चांदी की कटोरी में गड़गड़ी के मलड़ा को जल लेके नाई मुण्डन करे। चांदी की कटोरी न होय तो कटोरी में रु० ५) अथवा रु० २) डारने। बालक पिता की गोदी में बैठे। मुण्डन के बार झेलवे कूं सब बहनबेटी चौक के आगे आय बैठें तथा ऐवाती बैठें। एक बहनबेटी हाथ में पाँच कपड़ान के सवागा तथा साड़ी, कपड़ा दोऊ हाथन में ले। तापे पीरी की साड़ी १ घड़ी करके धरे, तापे सुहारी ८ धरे, पीछे नाई मुण्डन करे, सो कटोरी नाई कूं जाये। पास अहवाती बैठे सो बार उतरें, उनकों लेकें बहनबेटी के हाथ में सुहारी पे धरती जाय। मुण्डन भये पीछे तीनों जने वा गडगडी के जल सों न्हाँय,

बहनबेटी न्हवावें। फेर शुद्ध जलसूं न्हांय। कपड़ा, गहना पहर तिलक कर बालक कूं पहराय दूसरे चौकपै गठजोड़ा सूं बैठें, बालक के माथे पे कंकू को साथिया करें। प्रसादी चन्दन लगावें। जामा, टोपी, प्रसादी वस्त्र पहरावें। पीछे कर्ण छिदावने। कान छेदवेवारे कूं परोत तथा रु० १।) देनों। आरती करनी, आरती में रु० २) अथवा रु० १) उरनो। तिलक, दक्षिणा, मंत्राक्षता करनी। दक्षिणा रु० १) अथवा पावली बटे। बायन मुंडन की सुहारी तथा कर्णच्छेदन के बतासा बटें। सवागा १ मुख्य बहनबेटीनकूं देनो। औरन कूं साड़ी देनी। विधवा कूं मुकटा, धोती देनी। बार गायन के खिड़क में डारने। बारन कूं तोलके उनके बराबर सोनो बहनबेटीन कूं बाँट देनो और न्हायवे के कपड़ा तीनोंन के मुख्य बहनबेटी के जांय।

मुंडन भये पीछे दसवें दिन अथवा दस दिन पीछे आछो वार देखकें फेर मुण्डन करनो, सो घर में सीख लिवावे की सी नाईं करनो। जाति में बुलावा नहीं होय। शिखा नहीं राखनी।

चुटिया के प्रस्ताव की रीति

चुटिया पाँचवें वर्ष करनी, प्रस्ताव मुंडन की नाईं करनो। पूवा १ चोटीपे धरके उतनी चोटी रखनी, बाकी मुंडन करावनो। बार झेलवे के सवागापे सुहारी के ठिकाने पूवा ४ धरने। बायन पूवा के बँटें। नाई कूं मुंडन की भाँति सब देनो। बहनबेटीन कूं बार झेलवे को यथाशक्ति गहना आदि देनो।

मार्कण्डेयपूजा की रीति

बालक कों ५ वर्ष लगे ता दिन पहिली मार्कण्डेयपूजा होय, ताको निमन्त्रण बुलाया करामनो। फेर चौक पूर पट्टा पीरी बिछाय, सभा करके बालक सहित गठजोड़ा सूं चौक बैठें। पुण्यावाचन करकें मार्कण्डेय पूजा होय। फेर आरती होय, फेर पण्ड्या वर्षफल बाँचे,

ताकूँ दच्छिणा २), सदा १) देनो। फिर तिलक दच्छिणा, मन्त्राच्छता करनी। दच्छिणा १) सदा टका बाँटे। भोज में सामग्री सेव के लडुआ होंय। प्रभून के भेट १) करनो तथा सामग्री अरोगावनी। बड़े होंय तिनकूँ नमस्कार करें। सब न्यौछावर करें।

अच्छर दिखायवे की रीति

पाँचवें वर्ष अच्छर दिखावने। जाति में निमन्त्रण करके सभा करनी। चौक पूर पट्टा पीरी बिछायकें गठजोड़ा सूँ पुण्याह वाचन करनो। कांसे की थारी में चामर भरकें मूंदड़ी सों अच्छर लिखवावने। अच्छर को पूजन करनो। आरती, तिलक, दच्छिणा, मन्त्राच्छता मुण्डनवत् होय। दच्छिणा रुपया अथवा पावली लेखें बँटें। बायन सेव के लडुआ बाँटने। चोखा समते मूंदड़ी थारी उपाध्यायजी के जाय।

पहली हठड़ी के दिन आरती होय। दच्छिणा पावली बँटें। गीत गवें। बायन बतासा बँटें।

यज्ञोपवीत की रीति

जनेऊ के मुहूर्त्त को निश्चय कर मुहूर्त्त सूं एक महिना पहिले विदेश में सगे होंय तथा स्वजाति के होंय, तहाँ सब ठिकाने आछे दिन कुंकुमपत्र लिखने। कुंकुम के छाँटा देने।

निकट सगे बेटी जमाई तथा सासरे वारे होंय, तिनकूं ये कुंकुमपत्र आग्रह-पूर्वक आसामी के हस्ते पठावनो। फेर जो प्रस्ताव में आवें तिनके उतरवे की, भोजन की, कुल देवता विसर्जन होंय तहाँ ताईं खातिरी करनी। स्नेही होंय तिनकूं भी पत्र लिखनों।

जनेऊ ७ वर्ष, ८ वर्ष, ६ वर्ष, ११ वर्ष ताईं होय, आगे नहीं रहे। प्रस्ताव के १०-१५ दिन पहिले मुहूर्त सूं गीत बैठें। तादिन प्रभूनकूं सामग्री अरोगवानी। वाई दिन छोटे गणेश भण्डार में बैठें। बांस की सुपड़ी में हरदी की

गाँठ लच्छा सूं बाँधके तामें गणेश बैठावनो । गणेश बैठें तहाँ ताईं वर की माता भूखी रहे । पाँच वस्तु—गुड़, कंकु, नाड़ाछड़ी, सुपारी, नारियल पहिले मँगावनी तथा अन्न मँगावनो । वा ही दिन दूलह को बागा ब्यौतावनो । जामा जरी को, नीमा केसरी मलमल को, सूथन खीनखाप को, पाग, उत्तरी, पटुका, रूमाल ब्योतावनो । किनारी लगवे के कपड़ान में किनारी लगवावनी । दर्जी कूं परोत— ऽ५ सेर गेहूं, ऽ१ सेर गुड़, रु० १।) देनो ।

बड़े गणेश बैठवे की रीति

जा दिन बड़े गणेश बैठवे को मुहूर्त्त होय, ता दिन गणेश बैठें । उबटने को प्रारम्भ होय, गड़गड़ी सूं न्हांय । वा दिन बारनपे बहू-बेटीन में पीरे अक्षत के पाँच बुलावा—गणेश बैठे के, गीतन के, घर की घोड़ी के, ढोलपूजा के, कढ़ाईपूजा के फिरावने । बारन कूँ साड़ी-चोली देनी, सो पहरके बुलावा कूं जाय । पीछे सब बहू-बेटीन कूं बुलायके इकट्ठी करनी । चौक पूरके सिल हरदी सूं रँग के धरें, तापै पाँच सौभाग्यवती गोबर के गणेश बैठावें । दूलह की माँ बाँक, चोटी टीका पहरके पट्टू पै बैठकें गणेश बैठावे, सिंदूर पहरावे, दूब चढ़ावे । पूजकें गुड़ को भोग धरें । पीछे गणेश के आगे वा ही सिलापे, सेर ऽ१। हरदी सब जनी फोड़ें, सो वा हरदी में बृद्धी के धोती, उपरणा रँगने, वे मण्डपपे सुखावने । थोड़ी हरदी जनेऊ के दूलह के वस्त्र रँगने कूं राखनी । सब जनी गणेश कूँ सिंदूर पहरावें, ताके पीछे आपस में पहिरें, ता समें रुक्मिणी-मङ्गल गामें । पीछे बाँस के छबड़ा ५ हरदी सूँ रँगे, कंकू अक्षत की थारी, पीतर की भारी पुण्याहवाचन की जल सूँ भरकें वहां धरनी। शिलापे सूँ गणेश कूँ एक छबड़ा में पधराय पाँचों जनी मैदा की सेव पाव भर की करें । फिर दूसरे छबड़ा में गणेशजी कूं पधराय उड़द की पीठी की बड़ी एक पाव की तोड़ें। फिर दोयपूजा करनी, नाड़ा बाँधनो, साथिया करनो, बजावनो और परोत धर गावनहारीन कूँ देनो । बन्दनवार

बाँधनो, माली कूँ परोत देनो। चित्राम करावनो, ताको परोत चित्रकार कूँ देनो। कढ़ाई पूजा करनी, बालभोग के चूल्हानपे हरदी को चौके देनो। रामकटोरा १, हरदी सूँ रंगकें वा में घी, टका १, सुपारी १, गुड़ की डेली १ धरकें मैदा सूं चूल्हे के ऊपर की भीत में चिपकावे। पीछे तिलक करके ताको परोत बालभोगिया कूँ देनो। सामग्री के प्रारम्भ में प्रथम लडुवान के सेव भूंजने। फेर पाटिया तथा चटाई की सेवा होय। प्रस्ताव को चोंतरा कारीगर करे, ताकूँ परोत और पाग, उपरणा देनो। फेर तीन छबड़ा लेके अहवाती गावनहारी ढोल-तासा सहित खदानापे मृत्तिका लेवे जाय तथा एक ऐवाती पीतल की झारी जल सूँ भरके ले जाय तथा एक ऐवाती कंकू, अक्षत की थारी में गणेशजी बैठायकें ले जाय। सेव को लडुवा, पुष्प, एक टका लेके जानो। सो गारे को खदानो होय, तहाँ जायके, पूजके, लडुवा-टका धरकें मृत्तिका तीनों छबड़ान में भरकें लावनी। सो घर के द्वारपे आयके अहवाती वा झारी में सूँ जल की धारा देते देते कुलदेवता बैठायवे की कोठरी में जाय। वे गणेशजी पीछे शिलापे बैठाय देनो। मृत्तिका में सूं आधी तो अंकुरार्पण के लिये राखनी, आधी बाहर चौंतरा बने, तहाँ राखनी। यदि चौंतरा पहिले को होय तो खदाने की मांटी लीपवे में अथवा वेदी के उपयोग में लानी। गणेश को परोत बहन-बेटी कें जाय, तामें चामर मन १८ अथवा ऽ१। सेर, गुड़ सेर ऽ५, रु० १।) होय। गणेश बैठे के गिंदोरा तथा तिलचाम्मरी, चार बेर के बतासा बाँटने। और अञ्जुली की ज्वार मन १८ होय, सो गायनेवारी कूँ, डोमनी कूँ तथा धोबी, बारी, नाऊ, मालिन कूँ बाँटनी। गामनहारी, माली, चितेरा, बालभोगिया, कारीगर कूं परोत गेहूं ऽ१ सेर,गुड़ ऽ१।सेर,रु० १।) के प्रमान देने। गणेश बैठें ता दिन सूँ अथवा कुलदेवता बैठें ता दिन सूँ नगारा बैठावने। नगारा को पूजन करकें नगारची कूं ऊपर लिखे प्रमान परोत देनो। गणेश बैठें, तब सूं लेकें कुलदेवता बैठें ता ताईं कोई अच्छो दिन देखकें घर की बहू-बेटी चूड़ा पहरें

तथा और बहू-बेटीन कूँ पहरावें। ताको परोत ऊपर लिखे प्रमान मनिहारी कूँ देनो। बड़े गणेश यदि वृद्धि कूँ बैठें तो गणेश के अतिरिक्त और सब रीति-भांति पहिले सूँ कोई आछो दिन देखकें प्रारम्भ करनो।

घर की घोड़ी गवे ताकी रीति

जा दिन बड़े गणेश बैठें, ता दिवस ही घर की घोड़ी को आरम्भ होय, किन्तु छोटे गणेश बैठे पीछे भी गववे की रीति है। वा दिन बहू-बेटीन में अच्चत के बुलावा जांय। फेर तीसरे प्रहर बहूबेटी भेली होंय। दूलह को शृंगार होय, कमलपत्र होय। प्रसादी बीड़ा २, बरफ़ी २, माला २, छोगालूम पुष्पन की, बायन के दमीदा के टोकरा तथा बतासा के टोकरा ये सब साजकें पीरी के छन्ना सूँ ढाँक के दूलह की माता तथा और सब अहवाती गावनहारी, ये सब सङ्ग लेकें गाजा-बाजा सूँ परिक्रमा फिरकें लावें। फेर बहू-बेटीन में दूलह जाय, दूलह कों माता तिलक करकें माला, छोगा पहरावे। सामग्री गोदी में धर बीड़ा २ हाथ में दे। फेर दूलह उठके यथासम्बन्ध सबन कूँ नमस्कार करे। माता रु० ५), २), १) न्योछावर करे। बायन बटें। या रीति यथासम्बन्ध सब जाति वारे तथा व्यवहार वारे न्योछावर करें, घोड़ी गवावें। तामें बीड़ा नग २, रु० १) यथायोग्य और यथास्थिति करें और दमीदा, बतासा आदि के बायन यथासम्बन्ध बँटें। कुलदेवता स्थापन के पहिलें-पहिलें घोड़ी गवायी जा सकें हैं।

घर की विनेकी की रीति

जा दिन शुभ मुहूर्त्त होय, तादिन घर की विनेकी काढ़नी। सभा को तथा भोज को वा हीं दिन निमन्त्रण करे। जाति को जायके कटोरी दिखावे। पण्ड्या संग जाय। ऐसे ही वारन बुलावा करे। पीछे रात कूँ सभा की बिछायत होय। फिर मसाल, पटचारण संग लेके बुलावा होय। सब स्त्री-पुरुषन की सभा होय। यथावकाश गवैयान को संगीत होय। मालिन सेहरा १, माला २ लावे। ताकूं परोत गेहूं ऽ५ सेर, गुड़ ऽ१। सेर, रु० १) सेहरा की

देनो। जब-जब सेहरा आवे, तब-तब नेग परोत याही प्रमान दियो जाय। सेहरा तथा पोशाक जो गणेश बैठवे के दिन न्योंताई होंय सो सब सभा में धरनी। फेर उपाध्यायजी मन्त्र पढ़ पोशाकपे अच्छत डारें। कुल में अथवा जाति में वृद्ध होय, सो दूलह के पाग बाँधे। फेर सब पोशाक, गहने पहरावे। ताके पीछे दूलह बहू-बेटीन में जाय सो सौभाग्यवती केसरी चन्दन को कपोलनपे कमलपत्र मांढें, काजर आँजें। नमस्कार करके बाहर आय पुरुषन सूँ नमस्कार कर चौंतरा पे पीरी पट्टा पे माता-पिता के संग बैठे। गठजोड़ा अहवाती बाँधे। फेर सेहरा उपाध्यायजी बाँधें, माला पहरावें। आज्ञा माँग इष्टदेव को नमस्कार कर स्वस्ति पुण्याहवाचन करे। फेर आरती होय, तामें १०), ५), २) डारें। फेर ज्योतिषी लग्नपत्र बाँचे, ताकूँ ५) अथवा २) तथा पाग, उपरणा देनो। फिर तिलक होय। दच्छिणा रु० १) अथवा ।) बाँटनी। बहूबेटीन में बायन रङ्गमेवा के बँटें तथा दमीदा बंटें। ता पीछे दूलह के संग मनसेरू बहूबेटी गावनहारी सङ्ग चलकें दूलह घोड़ीपे बैठे। घोड़ी को पूजन दूलह करे। घोड़ी के चिरवादार कों रु० १।), नारियल देनो। घोड़ा, हाथी, चमर, मोरछल, छडीदार, सिपाही, भगतन, भभैया, तासा, नगारा, ढोल, मसाल, पलीता, आतिशबाजी आदि जो बन सकें, सो सब संग लेकें गाजा-बाजा सूँ बिनेकी श्री......के मन्दिर की परिक्रमा हो जाय, ऐसे क्रम सूँ फिरे। बहूबेटीन में घोडी चढ़ी की चादर छडी की अथवा छापा की बँटें। विधवान कूँ सफ़ेद चादर बँटें। बिनेकी फिरके घर आवे। सब समुदाय अपने-अपने घर जाय। दूलह पीरी पट्टा पें ठाड़ो होय, राई नोन न्योछावर होय। फेर उपाध्यायजी अच्छत डारके सेहरा बड़ो करें। सेहरा कों छबड़ा में धर अहवाती कुलदेवता की कोठरी में धरें। फेर दूसरे दिन भोज होय, तामें सामग्री मगद की होय। वा ही दिन साँझकूँ नाना के आडी की बिनेकी निकसे, तामें दूलह की पोशाक नई घर की सूँ हलकी होय। बायन में बतासा बंटें। फिर भूआ, मोसी, बहन तथा और सगे

बिनेकी काढ़ें। चिनेकी बहुत होंय तो जनेऊ भये पीछे होंय। तिनमें सेहरा नहीं, सेहरा के ठिकाने पुष्पमाला टाँकें। काजर न आँजें, सूथन न पहिरें। वायन बतासा के बँटें। और भोज के बाँट घर दीठ बँटें, तामें गोस्वामिवर्ग में नग ४ के तथा भट्टवर्ग में नग २ के बाँट जाँय अथवा सर्वत्र नग २-२ के जांय।

ग्रहशान्ति की रीति

ग्रहशान्ति के पहिले दिन जाति में कटोरी सभा देखवे की तथा भोजन की पठावनी। ग्रहशान्ति के प्रातःकाल बहूबेटीन में बुलावा पीरे अच्छत के दिवावने। प्रभून कूं नये वस्त्र धरावने, राजभोग में मगद की सामग्री आरोगावनी तथा मैंदा की पूरी तथा साग ४ तथा पना आदि आरोगें। सखड़ी में धोवा दार, भात, कढी, तिलबड़ी, सेव, पापड़, बड़ी को झोल, सेव मीठे, या प्रमान यथाशक्ति करें। ग्रहशान्ति के प्रारम्भ में जाति में पुण्याहवाचन को बुलावा करावनों। तिलक, दक्षिणा होय। पुण्याहवाचन की दक्षिणा हाजर होंय तितनेन कूं टका लेखे देनो। दूलह कों गड़गड़ी सूं न्हंवावनो। तीनों जने नये वस्त्र पहरकें प्रस्ताव करनो। ग्रहशान्ति के वरण-समय ऋत्विज, आचार्य कूँ धोती, उपरणा देने। तामें आचार्य १, ब्रह्मा १ तथा ऋत्विज ७, अथवा ४ होंय। पूर्णाहुती समें बिछायत की तैयारी तथा बुलावा करके जाति की सभा करनी। आरती होय, तामें रु० १) डारनो। तिलक होय। दक्षिणा पावली बाँटनी। मन्त्राक्षता होय। वरण के आचार्य कूं दक्षिणा रु० २) देनो। ऋत्विज दक्षिणा रु० १) देनो, आचार्य, ऋत्विजन कूं भोजन करावनो अथवा सीधा देनो। जाति को भोज होय। मैंदा की पूरी तथा मगद के घर दीठ बाँट बटें। प्रस्ताव की आचार्यदक्षिणा, पूर्णपात्र, ब्रह्मदक्षिणा के रु० ३) उपाध्यायजी कूं देनो। स्नान के वस्त्र तीनोंनके तथा ग्रहमण्डल की सब वस्तु, वरुणकलश वरण के आचार्यकें जाँय। ग्रह की चौकी, चरुस्थाली और आज्यस्थाली पण्ड्या के जाय।

पीहरिया होंय, सो चौकपे यथाश्रद्धा पहरावनी देंय । गोदान प्रत्यक्ष अथवा निष्क्रय ५) वा १।) दें । भूरसी १) वा ।) दें । यदि पहिले ग्रहशान्ति न बन सके तो यज्ञोपवीत के पीछे हू हो सके है।

तेल चढ़वे की रीति

गणेश बैठे पीछे मुहूर्त्त होय, ता दिन तेल चढ़े । बृद्धि पहिले तेल चढ़ाय के उतार लेनो । कुंकुम अक्षत की थारी, पिसी हरदी, दूब, प्याला वा कटोरी में तेल धर तैयारी करनी। दूलह चौंतरापे पट्टा पीरीपे बैठे । वाके दोऊ ओर जाति के बालक ४ बैठें, तिन पाँचोंन के हाथ में मैदा पूरी ४ अथवा २ सीरा धरकें हथोना दे । दूलह की माता तथा बहनबेटी, अहवाती तीन बेर तेल चढ़ावें। दूर्बा दोऊ हाथन में लेके हरदी मिले तेल में बोड़के चढ़ावें। पहिले पाँव, फिर घोंटू, फिर कन्धा, फिर माथा, या क्रम सूं तेल चढ़े। पाछो मुहूर्त्त सूं उतरे—पहिले माथा, फिर कंधा, फिर घोंटू, फिर पाँव, या क्रम सूं तीन बेर उतरे। यदि अधिक दिन तेल चढ़ो न राखनो होय तो बृद्धि के दिन ही तेल चढ़ायकें उतार लेनो। मैदा, पूरी तथा सीरा के जाति में बाँट बटें । भट्टवर्ग में तेल चढ़े, गोस्वामीन में नहीं । केवल मथुरेशजी के घर में तेल चढ़वे की रीति है । सो बृद्धि के दिन ही तेल चढ़ायके उतार लें ।

बृद्धि-निमन्त्रण की रीति

बृद्धि के पहिले दिन दोपहर पीछे सब जाति में पण्डया जाय । बृद्धि-निमन्त्रण करवे को बुलावा कर आवे । ता पीछे साँझ कूं सबनकूं बहूबेटीन सहित भेले करनो । पाग, जामा, सूथन की पोशाक करें । फेर तिलक करि सुपारी सबनकों देनीं । गंधाक्षत की थारी, नौता की कटोरी लेकें परचारक तथा पण्डयाजीकों संग लें । गाजा-बाजा, मसाल सहित बृद्धि-निमन्त्रण कूँ जांय । प्रथम श्रीनाथजी के टीकेत के यहाँ, ता पीछे उपाध्यायजी के यहाँ,

ता पीछे सब जातिकेन के घर-घर सबरें जांय। जो नहीं आये होंय, तिनकों संग लेते चलें। घर के द्वारपे जायकें नमस्कार करें, सुपारी ४ दें, फिर कटोरी दिखावें। कटोरी लेकें "अमुक अल्ल के, अमुक के पंती, अमुक के नाती अमुक के अमुक के यज्ञोपवीत की काल वृद्धि है, ताकी सभा देखवे कूँ (जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन पहिले न भये होंय तो कहनो—'जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन की सभा देखवे कूँ') तथा भोजन करवे कूँ तथा यज्ञोपवीत की सभा देखवे कूँ तथा चारों भोजन में भोजन करवे कूँ सकुटुम्ब सपरिवार पधारोगे। या रीति निमन्त्रण कर अपने-अपने घर कूँ जाँय। बहूबेटी हू या रीति सूँ गायवेवारीन कूँ संग लेकें, कटोरी पीरे अक्षत की लेके बाजा-गाजा सहित निमन्त्रण कूँ जाँय। बायन कूँ जौ को चून, भीजी पीसी हरदी, हरदी की गांठ, चामर को चून, खली के टूक, तेल की हांडी, तामें परी सब संग लें। जाति में बायन घर दीठ गाँठ १, टूक १, परी तेल १, चौंटी चून १, या प्रमान सबरे घर-घर बँटें। संग में गंधाक्षत की थारी तथा सुपारी ले जांय। जाके घर जांय, सो परस्पर अक्षत लगावें, सुपारी दें और ये कहें—"वृद्धि देखबे कूँ कह जांय हैं।" या रीति बहूबेटी निमन्त्रण कर घर-घर जांय। जो नहीं आयी होंय, तिन बहूबेटीन कूँ संग लेती जांय।

वृद्धि के दिन की रीति

प्रातःकाल स्नान कर नूतन वस्त्र तीनों जने पहिरें। प्रभूनकों नूतन वस्त्र किनारी के धरावने। सामग्री आरोगावनी। सेव के लडुवा, तवापूरी मैदा की, जीरापूरी, मोंन की पूरी, सेव वेसन के फीके, बड़ा की छाछ, अनसखड़ी में होंय तथा पाँचों भात, पाटिया की सेव, मूँग की धोई दार, तीनकूड़ा अथवा कढ़ी, बड़ी, पापड़, तिलबड़ी आदि, सांग ४ सखड़ी रसोई में होंय। बहनबेटी सौभाग्यवती होय, ताकूँ रसोई करवे कूँ बुलावनी। ताकूँ हाथ १० की पीरी साड़ी, चोली देनी। वा के पास परचारगनी राखनी, ताकूँ अहवाती होय तो पीरी साड़ी, नहीं तो छायल,

चोली देनीं। रसोई करवेवारी चूल्हानपे हरदी को चौक पूरे, ताके परोत में चोखा ऽ९ सेर, गुड़ ऽ१। सेर, रु० १।) ताके जांय। भोज की रसोई सब वो ही करे। ताकी बिदा में गहनो देनो। रसोई में बासन, मसोदा जो चहिये, सो देनो।

बहूबेटीन में वृद्धि तथा चक्कीमूसर तथा जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन के पीरे अच्छत के बुलावा पठावने। चौंतरापे मण्डप छवावनो। मण्डप छवाई को नेग रु० १।) तथा परोत कुण्डिया, मिश्र, व्रतेश्वरीन कूँ देनो तथा कलसा चोंटावने। कलशा के चित्र ४, चौंतरा की पीठक को चित्र १, कुलदेवता को चित्र १, गणेशजी को चित्र १ सिद्ध करावनो, सो चित्र बहूबेटी कागद के पाठानपे लिखें। बहूबेटी न लिख सकें तो चित्रकार लिखे। चौंतरा की पीठकपे काठ को सूआ बैठावनो, ताको नेग और परोत खाती कों देनो। फिर बिछायत की तैयारी करावनी।

फिर चौंतरापे चौक पूरके पट्टा पीरी बिछाय पुण्याहवाचन की तैयारी करनी। जाति में बुलावा पठावनो। गणेश के दिन की हरदी सूँ रँगे वस्त्र धारण कर दूलह कूँ लेके गठजोड़ा सूँ चौक बैठनों। पीरे वस्त्र कुलदेवता विराजें तहाँ ताईं पहिरने। पुण्याहवाचन कर प्रस्ताव को प्रारम्भ करनो। तिलक होय, पुण्याहवाचन की दच्छिणा हाजरी टका लेखे बाँटनी। कुलदेवता तथा मातृकास्थापन की तैयारी करनी। टोंटीदार कुल्हड़ा में शाखा पधरावनी। कुलदेवता पधारें, ता समय सूँ दो बातीं को दिया बड़े कूंड़ा में कुलदेवता विराजें तहाँ ताईं अखण्ड जुड़े। ताकी सम्हार राखवे कूँ आश्रित अथवा ऐवाती रहे, सो रात्रि में वहाँ सोवे। छन्ना सूँ कोठरी झड़े। चार नग की पातर सखड़ी, अनसखड़ी कुलदेवता के भोग आवे, सो दीपक सम्हारवेवारो लेय। वृद्धि में ऐवाती जिमायी जांय, तिनकूँ पीरी की साड़ी देनो। जाति में वृद्धि को भोज होय, घर दीठ बाँट बटें। कुलदेवता को टोंटीदार कुल्हड़ा कुम्हारके सूँ आवे, ताको नेग तथा परोत वाकूँ देनो। दण्ड में बँधे धोती

उपरणा होंय सो घर में राखे जांय तथा कुलदेवता की तारी घर में राखी जाय और सब कुलदेवता तथा मातृका को साहित्य बहनबेटीन कूँ जाय।

भात की रीति

दूलह की माता यथावकाश गाजा-बाजा सूँ पीहर के सगे होंय, तिनके यहाँ जाति की बहूबेटी तथा गामनहारीन कूँ संग लेकें भात नोंतवे जाय। भातैन कूँ तिलक करे। चामर ।ऽ सेर अथवा ऽ५ सेर, गुड़ की भेली ४ अथवा १, नारियल ५, रु० ५ नगद, या प्रकार वस्तु भात नोंतवे में भातैन कूँ देय। पीछे साँझ कूँ सभा में भात पहिरें। भात पहरायवे के बुलावा जाति में पीरे अच्छत सूँ दिवावने। सांझ कूँ वृद्धि की सभा होय, तामें दूलह के मातापिता दूलह कूँ लेके चौकपे बैठें। ता समें नाना, मामा भात की पहरावनी लावें, सो पहरावें। जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन पुत्र के जनेऊ में तथा कन्या के विवाह में होंय, तामें तिहेरी पहरावनी देंय। वृद्धि की पीरी की, जातकर्म की छापा की, नामकरण की छायल की अथवा छापा की, अन्नप्राशन को उन्यों को रेशमी रेजा तथा रु० १) दें तथा बेटी, जमाई कूँ सवागा गहना, वर के पिता कूँ साल, वर कूँ सेला, (वर के पिताकों तथा वरकों सवागा पूरे करने), बाकी के जितने सगे होंय, तितनेन कूँ रङ्गीन उपरणा चार-चार हाथ के और साड़ी पीरी की तथा विधवा बहूबेटीन में मुकटा तथा ऐसी ही साड़ी, उपरणा की पहरामनी चार कट्टन की हू देंय। कट्टन उपाध्याय, पण्ड्या, धाय और दासी कूँ देने। सब सगेन कूँ भात पहरायवे की श्रद्धा नहीं होय तो वर के दादे के पेट की तो पहरावनी भात की अवश्य होय। भात के संग रु० १०१) अथवा ५१) भोज के देय। सब जाति के उन्यों देंय, तामें रेशमी रूमाल १ तथा रु० १) अथवा ।) यथासम्बन्ध देंय। भैयाबन्धु हू उन्यों देंय और अन्नप्राशन के सेव के लडुआ ५ तथा चामर ऽ१ सेर सब देंय। फेर परस्पर विज्ञप्ति होय। फेर जाति में पहरावनी बँटे। आज न बँट सके तो यज्ञोपवीत की सभा में बाँटनी।

पहरावनी बटे ताकी विगत

पहरामनी में साल १, पाग १, पटुका १, थान १, साड़ी छापा की अथवा रङ्गीन किनारी की १, ये पाँच कपड़ा धरने। गहना में मूंदरी अथवा डोरा सांकरी अथवा कड़ा अथवा रोकड़ धरनो । या प्रमान सगे, सम्बन्धी, जातिकेनकूँ यथासम्बन्ध उतार-चढ़ाव की पहरावनी देनी। जाति में उपाध्यायजी तथा आश्रित, व्रतेश्वरी, मथुरास्थ आदि जे पहरावनी पाते होंय, तिनकूँ देनी। बाकी और अपने सगे परदेश में होंय, तिनकूँ हूँ पहरावनी यथाशक्ति पठाय देनी। और जिनको बेटा बिना ब्याहो होय, तिनकूँ जुदी बिना साड़ी की पहरावनी देनी। जनोई न भई होय तो पहरामनी में इकलाई अथवा अँगरखी, टोपी धरे। जिनके बेटी बिना ब्याही होय, ताकी पहरावनी में ओढ़नी १ धरनी। उपाध्यायजी, पण्डयाजी, मुखियाजी, बड़े चौबेजीकों जाति बराबर देनी। पुरुष दीठ पहरावनी बँटे। सो समस्त जाति में अथवा हाजरी बँटवे की रीति है। विधवा बहूबेटीन कूँ पहरामनी में मुकटा, खन अथवा धोती कापड़ा तथा गहना देनो । फेर आरती होय, तामें रु० ५) अथवा रु० २) डारने। तिलक होय, दक्षिणा रु० १) लेखे बँटें। चार पाउली जातकर्मादिक चार प्रस्ताव की मेली रु० १) होय, नहीं तो कुलदेवता पधारे की ।) बटे। मन्त्राक्षता होय। दूसरे दिन जो ८ ब्रह्मचारी जेमें उनकों भोजन निमन्त्रण की अष्टवर्ग की सुपारी देनो। सभा उठे पीछे चौंतरा के पास पेंड़ा करके बहूबेटी आवें, चक्कीमूसर होय। चाकी तथा मूसर तथा चप्पन दोय हरदी सूँ रँगने। नागरबेल के पान १-१ नाड़ा सूँ चाकीमूसर के बाँधने। चना ऽ।, गेहूं ऽ। न्यारे न्यारे हरदी सूँ रँगने। चप्पनन में धरने। गणेश कूं चौकीपे बैठायकें सब बहूबेटी सिंदूर पहिरावें। सेव को लड्डुआ १ भोग धरें। पीछे गणेश कूं थारी में पधरावें। फिर बहूबेटी मिल एक संग चना दरें। पीछे गेहूं को चप्पन चाकीपे धर मूसरसों सब मिल गेहूं कूटें तथा हरदी कूटें। पीछे सब बहूबेटीन कूँ सिंदूर पहराय अक्षत लगावें। ता पीछे वर सहित

गठजोड़ा सूँ चौंतरापे मातापिता बैठें। बहनबेटी दरे गेहूं तथा चना की खिचड़ी तथा मूँदरी १ थारी में धरके तीनों जनेन के ऊपर तीन बेर उछालें, सो मूंदरी बहनबेटी लेय। चक्कीमूसर की थोड़ी खिचड़ी धर राखनी, सो दूसरे दिन यज्ञोपवीत-लग्न-समय काम आवे। फिर आरती होय, आरती में २) अथवा १) रु० डारनो। पीरी की साड़ीन के बायन बँटें। तीन बेर के बतासा बटें। भात पहिरे के मुठिया के बायन बँटें। भातै भात पहरायबे की साबोनी बाँटे। ता पीछे भातैन कूँ चौकपे बैठायके वर की माता आरती करे तथा बूरा को पना प्यावे। फेर गणेश बैठे के दिन की हरदी में तथा चक्कीमूसर की हरदी में दूलह के कपड़ा—कोपीन ३, मुड़बन्धा १ हाथ बारह को तथा उपरणा दोय, हाथ चार-चार के कोर छेड़ा रँगके मण्डप के ऊपर सुखावने।

जनेऊ के दिन की रीति

यज्ञोपवीत होय, ता दिन प्रभून कों नये वस्त्र तथा सेहरा को शृंगार धरानो, सामग्री आरोगावनी। बिछायत करावनी। जाति में स्त्रीपुरुषन में सभा को बुलावा प्रस्ताव सूँ कछुक पहिले करावनो। पुण्याहवाचन कर प्रस्ताव आरम्भ करनो। तिलक होय। दक्षिणा हाजरी टका लेखे बटे। चौलसंस्कार में नाई कूं मुण्डन प्रमान कटोरी, नेग, परोत देनो। फिर बटुकभोजन की तैयारी करनी।

वड़ग साजवे की विगत

वड़ग साजे ता ठिकाने चून, हरदी को चौक पूरनो। बुलावा देनेवारी वारिन आंबा के दो पतुआनको बड़क बनायकें लावे, ताकूँ नेग, परोत दियो जाय। फेर चौकपे अथवा अष्टदलपे चामर ऽ५ सेर बिछावने। तापे रेशमी पीताम्बर अथवा मुकुटा अथवा रेशमी हाथ चार को अथवा छापा की साड़ी बिछावनी, तापे आंबा की पातर बड़ी १, दोना ८ धरने। फेर वापे

सेर ऽ४ को भात जुदो करो होय सो सब धरनो । तामें पहिले १ बटेरा में सेव भरके धरनो, पीछे और सब वस्तु धरनी । चाँदी की कटोरी अथवा छालिया में घी धरनो, तामें रु० १) डारनो । भात के प्रमान मूंग, तीनकूड़ा, धोई दार, मीठी कढ़ी, मीठे शाक, भीजे बड़ा, मैदा की पूरी, चून की पूरी, तवापूरी, सामग्री पाँच प्रकार की धरनी—बूँदी के लडुवा, सेव के लडुवा, गूझा, माठ, चन्द्रकला, एक-एक सामग्री के पाँच-पाँच नग धरने, ऐसे २५ नग धरने । सामग्री जो भीख में होय सो ही छोटी-छोटी बड़क में होंय । अपनी सगी होंय तथा और बहूबेटी हू सब बड़क में भोजन कूं बैठें। तिनकों साड़ी, चोली देनी । अष्टवर्ग के ब्रह्मचारी आठ जिमावने, तिनकूँ दक्षिणा ।), =), -) लेखें तथा उपरणा देनो । बड़क के पीरी पट्टा तथा साज बारिनकें जांय । फेर दूलह भोजन करके हाथ धोय, सुपारी लेके बाहर जाय, यज्ञोपवीत धारण करे ।

यज्ञोपवीत पहरे पीछे ब्रह्मसम्बन्ध की रीति

यज्ञोपवीत पहरे पीछे दर्शन को समय देखकें दण्ड, सेहरा सहित श्रीमहाप्रभून के सेव्य निधि विराजते होंय, तहाँ जायके ब्रह्मसम्बन्धदीक्षा लेनी । संग में भेट, सामग्री, नारियल आदि ले जानी । जनेऊवारो दुबारा न्हाय नहीं, वा ही अपरस सूँ जो बड़े गोस्वामी होंय तिनसूँ ब्रह्मसम्बन्ध करावे । पीछे घर आयके बाकीको जो वैदिककर्म रह्यो होय सो करे । ताके पीछें सभा करनी । ता समय माता प्रभृति घरकेन की भिक्षा होय । ताके पीछे और सबन की भिक्षा होय ।

भिक्षा डारवे की रीति

दूलह चौकपे ठाड़ो होय । मुड़बन्धा बाँधके सेहरा बाँधनो । मुञ्जीमेखला पहरनी, दण्ड हाथ में लेनो । भिक्षा को थार मामाके सूँ आयो होय सो लेके दूलह चौकपे ठाड़ो रहे । दूलह को पिता थार पकड़े रहे । प्रथम भिक्षा

दूलह की माँ देवे कूँ चौंतरापे चादर ओढ़के आवे। दूलहकों तिलक करके शाल उढ़ावे। गहना पाँच पहरावे । ताकी विगत—हाथ के कड़ा अथवा पहुँची तथा मुदड़ी तथा कान में मोतीजोड़ तथा गले को गहना १ सोने को या मोती को तथा सोने को यज्ञोपवीत १, या रीति सूँ गहना ५ पहरावे अथवा जो बन आवें सो पहरावे। ता पीछे थार में चामर मन १।ऽ अथवा ।।ऽ१ सेर अथवा ऽ५। सेर, गुड़ की भेली ५ अथवा १, श्रीफल ५ अथवा १, मोहोर १ अथवा रु० ५) तथा पाँच पकवान—गूझा बड़े ५, माठ ५, खाजा मीठे ५, चन्द्रकला अथवा सेव के लडुवा ५, बूँदी के लडुआ ५, ये पाँच पकवान के २५ नग भये, सो ऽ१, ऽ।। अथवा ऽ। के करने, सो भिक्षा में देनें। ता पीछे दादी भीख दे। पीछे फूफी, फिर नानी, फिर मोंसी ता पीछे सब जाति के यथासम्बन्ध भिक्षा दें। भिक्षा में चामर ऽ५ सेर अथवा ऽ१। सेर, दूधघर के नग ५, सेला अथवा इकलाई १, कछु गहना अथवा नगद यथासम्बन्ध, यथाशक्ति देनो। न्यौछावर करनी। ये सब भिक्षा घर में रहे। मातृभिक्षा फूफी कूँ जाय। मातृभिक्षा के गहना होंय सो घर में रहें, उनके बदले में कछु गहना अथवा नगद फूफी कूं देनो । मातृभिक्षा की सामग्री, फूफी की आड़ी सूँ जाति में बटे। ता पीछे सभा में गठजोड़ा सूँ बैठें, आरती होय। आरती में मुहर १ अथवा रु० १०) अथवा ५) यथाशक्ति डारे। न्यौछावर करें। पीछे तिलक होय। दक्षिणा २) अथवा १) बँटे। "ॐ अग्ने तेजस्विन्" ये मन्त्राक्षता होय। पीछे सब जातिकेन कूँ संग लेकें वृद्धि के निमन्त्रणवत् गावत-बजावत सबन के घर भोजनपंक्तिके चार भोजन को निमन्त्रण करनो अथवा सभा में ही निमन्त्रण करनो। बेहूबेटीन में बायन दमीदा के बटें। मण्डप के चारों आड़ी कौनेनपे चौरी बँधे। चना की खीचड़ी, हरदी की गांठ, सुपारी नीचे के बासन में धरनी। ऊने बासन की चौंरी बँधे। चौंरी को नेग परोत कुम्हार कूँ देनो । चौंरी बाँधवे-वारेन कूँ ४ लडुआ देने। ता पीछे भोज होय। जनेऊ सहित ४ भोज होंय।

भोज मण्डप के चौक में होंय। वहाँ सुभीता नहीं होय तो अन्यत्रहू होंय, पर मण्डप के नीचे दो-चार ब्राह्मण अवश्य भोजन करें, मण्डप सूनो नहीं रहे।

भोज की सामग्री की विगत

पहिले भोज में बूंदी के लडुआ, सिखरण, बिलसारू, बुरा, ओट्यो दूध, मैदा की जीरापूरी, मौन की पूरी, सेव, सुजेना, तिलबड़ी, ढेवरी और सखड़ी में मूँग, भात ५, छड़ियल दार, तीनकूड़ा अथवा कढ़ी, पाटिया के सेव, पापड़, बड़ी को साग, या प्रमान होय। मैदा की पूरी चार, बूरा बटेरा एक, बिलसारू बटेरा एक, सिखरन बटेरा एक, दूध लोटी एक, या प्रमाण घर दीठ बाँट देनो। दूसरे भोज की सामग्री चन्द्रकला और सब पहिले भोज प्रमान होय। तीसरे भोज में चन्द्रकला अथवा जलेबी, चौथे में घेवर, या रीति सों चारों भोज होंय। तिनमें तिलक-सङ्कल्प होय, मन्त्राक्षता होय। चार-चार सुपारी बँटें। चारों भोजन के घर दीठ बाँट बटें। जो भोज करवे कूं रह गयो होय, सो चार भोज सूँ पीछे होय। अग्नि को विसर्जन न होय, तहाँ ताईं अग्नि की रक्षा राखनी, ताकी सम्हाल कोई आश्रित राखे। ब्रह्मचारी दोनों समय मुञ्जी, मेखला, दण्ड धारण करके सन्ध्योपासन तथा हवन करे।

मेधाजनन, कुलदेवताविसर्जन की रीति

मेधाजनन में तथा कुलदेवताविसर्जन में तथा गङ्गापूजी में जाति को बुलावा, निमन्त्रण नहीं होय। गङ्गापूजी में स्त्रीजनन में बुलावा करनो। दूलह घरकी बिनेकी की पोसाक करे। पीछे स्त्रीजन सब आय जांय, तब गावत-बजावत यमुनादि नदी होय, तहाँ जांय। जो न होय तो घर में ही चौंतरापे चना की दार की खिचड़ी ऽ५। सेर पे घड़ा भरके धरे तथा रज की गौरी बनाय जमनाजी कूं तथा गौरी कूँ दूलह की मां सिंदूर पहरावे। दूलह कुंकुम-

अक्षत के छींटा दे। रु० १) भेट धरे, ।) गौरी के भेट धरे। खिचड़ी की मुट्ठी दोऊ ठिकाने धरे। पीछे आरती होय, तामें रु० १) डारनो। बतासा बटें। कढ़ाई सीरी होय, ताके कसार के लडुआ दोय-दोय जाति में घर दीठ बाँटने। चौरी के वासन तथा पट्टा को कसार जाति में बँटे। उपाध्यायजी कूँ निमन्त्रण के बांट, वायन, पहरावनी, दक्षिणा ८ देनी। फिर सब नेगीन की बिदा करनी। अन्तःपट की साल पण्ड्या कूं जाय। गायत्रीभेट, गायत्री लिखवे की थारी, सलाका, गायत्री की मूर्त्ति, उपदेश की भेट, उपदेश की साल उपाध्यायजी कूँ जाय। कुलदेवताविसर्जन भये पीछें मण्डप एक ओर धरदें। मण्डप के अतिरिक्त और सब सेहरा, माला, होम की भस्म, दीवा पालिका प्रभृति लेकें सौभाग्यवती गाजा-बाजासूं जलाशय में सिरावें और होम के स्थान में लाल मांटीसों लीप हरदीको साथिया मांढ़ें।

यज्ञोपवीत पीछे चार आरती होंय—महिनाकी, षष्ठपिंडरू (कंडूभी छठ), नवीनसंवत्सर तथा वर्षदिन की होंय। वर विनेकी की पोशाक पहिरे। बतासा बटें।



विवाह प्रस्ताव की रीति

वर के कुल में वृद्ध होंय सो कन्या के माता-पितानसों आग्रहपूर्वक कन्या मांगें। फेर दोऊन के जन्माक्षर ज्योतिषी कूं बुलाके मिलवावें। वर-कन्या को आयुष्ययोग, सन्ततियोग को मुख्य विचार करनो। जन्मपत्री नहीं मिलानी होय तो भाग्यबलपे हू सम्बन्ध हो सके है, ताकूं प्रीति-विवाह कहें हैं। फेर जाति में मुहूर्त्त सूं कुंकुमपत्र भेजे जांय तथा विशेष सम्बन्धीन के यहाँ आग्रहपत्र भेजे जांय।

सगाई की रीति

सभा को निमन्त्रण, बुलावा जाति में होय। बिछायत होयकें वर-कन्या दोनों के घर पुरुष तथा स्त्रीन की रात्रि कूं सभा होय। पीछे वर के यहाँ ते पुरुषव्यक्ति कन्या के यहाँ गाजा-बाजा सूं जांय। तब कन्या के ओर के ठाढ़े होयकें विज्ञप्ति के क्रम सूँ दोऊ आड़ी के नाम लेकें प्रश्न करें कि "गावत-बजावत अर्ध रात्रि के समय किंनिमित्त पधारे हो?" तब ऐसे ही वर की ओर के उठकें कहें कि "हमारे वररत्न है, आपके कन्यारत्न है, ताकी याचना कूं आये हैं।" पीछे वर कन्या के कुलवृद्ध ज्योतिषी सूं पूछें कि मेलापक कैसो है? तब ज्योतिषी कहे 'बहुत श्रेष्ठ है।' ता पीछे तिलक, सुपारी कर वर के यहाँ की सभा वर के घर पीछी आवे। कन्या वहीं रहे। पीछे पण्ड्या अथवा ज्योतिषी गन्धाक्षत की थारी में श्रीफल १, रु० १) धरके कन्याके यहाँ सूं गाजा-बाजा सूं वरके यहाँ आवे। पीछें वर कूँ चौकपे बैठायके तिलक करके निश्चय-नारियल और रु० १) दे। पीछे वर को कुलवृद्ध वा पण्ड्या अथवा ज्योतिषी कूं शाल अथवा पाग उपरणा और मूंदरी अथवा कछु नगद दे। पीछे तिलक दक्षिणा होय। पीछे बहूबेटी बाजा-गाजा सूं कन्या के घर ओढ़नी उढ़ायवे जांय।

ओढ़नी उढ़ायवे, चढ़ावा चढ़ायवे की विगत

सङ्ग में रेशमी घाघरी, किनारी की लालतास की बढ़िया ओढ़नी, रेशमी चोली तनकी, छापा की लाल साड़ी, गहना में टीका, गले की माला, हाथ के सोने के जौ जोड़ी, पाँव में तोड़ा तथा झांझन, कुल पाँच गहना १-१ अथवा हाथ पाँव को गहना, मिठाई की थारी ५, ४ या २, माला, बीड़ा की थारी १, न्यौछावर कूं रु० ५), २) अथवा १), वायन के दमीदा, बतासे, ये सब सङ्ग लेके जांय। फेर वर की माता कन्याकों गोदी में बैठाय कंकू की टीकी अच्छत लगावे। घाघरी, ओढ़नी तथा गहना पहरावे। बीड़ा खवावे। माला पहराय मिठाई की थारी, छापा की साड़ी, चोली हाथ में दे। न्यौछावर करे। पीछे परस्पर अच्छत लगाये जांय। पीछे वायन दमीदा, बतासा बटें। फेर पाछे घर आवें।

छोटे गणेश की रीति

प्रस्ताव के १०-१५ दिन पहिले छोटे गणेश बैठवे को मुहूर्त्त होय, ता दिन गणेशस्थापन होय, गणेश यज्ञोपवीत के प्रमान बैठावने तथा भण्डार की वस्तु मँगावनी। गीतारम्भ होय। बड़ी, पापड़ सब आरम्भ होय। वायन गुड़ की डेली अथवा बतासा के बँटें। दूलह के वस्त्र यज्ञोपवीत प्रमान ब्योंतावनों तथा कन्या के वस्त्र ओढ़नी, घाघरी, चोली दसतोइया की लाल दोय, पीरी दोय, हरी होय रेशमी तथा सफेद मलमल की दोय ब्योंतावने।

आगयौनी की रीति

ये प्रस्ताव विदेश सूँ बरात आवे, ता ही दिन होय अथवा पीछे हूं होय। आगयौनी के दिन दोऊ ओर को बुलावा फिरे। ग्राम के दरवाजेपे कन्या के घरतें घोड़ा, आतिशबाजी, मसाल, पलीता, तासा बाजा, सेहरा, माला ये सब जांय। विछायत होय। उतकी सभा के, इतकी सभा के दोऊ जगह

मेले होंय। दूलह घर को वागा पहरे। सेहरा, माला उपाध्यायजी पहरावें। जाति में तिलक होय। पीछे निश्चय नारियल लेके दूलह पूजा करके घोड़ीपे चढ़े, ताको नेग परोत चरुआदार कूँ देनो। घोड़ी के आगे जाति के चलें। पीछे बहूबेटी चलें। गामनहारी घोड़ी गामें। यदि सगाई पहिले न भई होय तो निश्चय-नारियल लेके कन्या के घर सूँ पण्डया अथवा ज्योतिषी आज आवे। निश्चय की दक्षिणा हू बटे।

कन्या के द्वार की रीति

द्वारपे पल्लवतोरण बाँधे। द्वारपे दोऊ समधी आलिङ्गन करके मिलें। फेर द्वारपे सुवासनी कलश लिये होय, तामें दूलह रु० १) डारे, सो वो रुपैया श्वसुर देय। ता पीछे मार्जन होय। फेर कन्या की माता दूलहकों तिलक करे। शाल अथवा रेशमी उपरणा उढ़ावे। डोरा वा कण्ठी अथवा अँगूठी पहरावे। दही, चामर वारें, आरती करें। आरती में रु० ५), २), १) डारें। वो भी श्वसुर देय। न्यौछावर करें। पीछे कन्या के सम्बन्धी स्त्रीपुरुष होंय, सो सब वरके तिलक करके उपरणा उढ़ावें, गहना पहरावें अथवा रु० १) हाथ में दें। पीछे तिलक, सुपारी होय। द्वारपे सूँ दूलह सहित सब परस्पर नमस्कार करके घर आवें। पीछे वर के यहाँ की बहूबेटीन कूँ कन्या के यहाँ की बहूबेटी बहार आयकें लिवा ले जांय। वहाँ दूलह की माता दुलहनकों गोद में लेय, ता समय बहूबेटी 'प्राणप्यारी' गावें। दुलहन के टीका कर अक्षत लगावें। माला पहरावें। बीड़ा खवावें। साड़ी, चोली, गहना १ दें। थारी १ मिठाई की गोद में दें, रु० १) न्यौछावर करें। सगाई पहिले न भई होय तो आज होय। बांयन बतासा दोऊ ओर के बटें। फिर अपने घर बहूबेटी जांय।

दूलह के यहां सीधा पठायवे की विगत

कन्या के यहाँ ते वर के यहाँ सीधा जाय, तामें मूंग मन १ऽ, चामर

मन १ऽ, चून मन १ऽ, दानों जौ चना को मन १ऽ, चना की दार ॥ऽ सेर, मैदा ॥ऽ सेर, घी ॥ऽ सेर, बूरा ॥ऽ सेर, गुड़ ॥ऽ सेर, वेसन ॥ऽ सेर, उर्द की दार ऽ८ सेर, तेल ।ऽ सेर, लवण ऽ५ सेर, हरदी ऽ२॥ सेर, हींग ऽ। सेर, जीरा ऽ॥ सेर, शाक, ऋतुफल, मिर्च ऽ१ सेर, घास के रुपैया ५), २), १) तथा सीधे के रु० २१), ११) अथवा ५), यथाशक्ति पठामनो ।

अनसखड़ी पठायवे की विगत

पूरी, मगद के लडुवा, बूरा, पना की मटकी, शाक दो, भुजैना, छोंकी दार, जीरापूरी, पूरी मौन की, पातर, दोना, बटेरा, ये सामान भोज को तथा बाँट को अनुमान सूँ करावनो । तामें सूँ आधो वर के यहाँ पठावनो । कन्या के यहाँ के सम्बन्धीन को कन्या के यहाँ भोज होय । सीधा लावें, तिन आदमीन कूँ एक-एक कूँ टका-टका दूलह के यहाँ ते देनो अथवा रु० १) इकट्ठो देनो । पीछे दोऊ जगे पूरी पनाको भोज होय । पीछे दोऊ ओर के जुदे जुदे पूरी मगद के बाँट बटें ।

बड़े गणेश बैठायवे की रीति

जा दिन मुहूर्त्त होय, ता दिन प्रातःकाल ही वारिन सों बुलावा दिवावने । जनेऊ के अनुसार पाँच बुलावा जांय । फेर बहूबेटी भेलीं करनी । पहिले गणेश दुलहन के घर बैठें । पीछे वर के यहाँ बैठें । सो कन्या के यहाँ वरपक्ष की ओर वर के यहाँ कन्यापक्ष की बहूबेटी गणेश बैठायवे आवें । हरदी, चून, उड़द की दार की पिट्ठी, कंकू, पीरे चोखा, सुपारी, पुष्प, दूर्वा, मैदा आदि की तैयारी करकें गणेश यज्ञोपवीत की भाँति बैठावने । सिंदूर पहरावनो तथा पहरनो । बन्दनवार बाँधनो । गणेश बैठवे की हरदी सूँ बृद्धि के वस्त्र रँगके मण्डपपें सुखाये जांय । गणेश की हरदी में सूँ थोड़ी हरदी धर राखनी, तासूँ दोऊ ठिकाने बृद्धि के दिन विवाह के वस्त्र रँगे जांय । ढोलपूजा, कढ़ाईपूजा, खदाने की मांटी, चौंतरा को निर्माण, गड़गड़ी स्नान,

चित्राम, उबटनो, नगारा बैठावनो, चूड़ा पहरनो आदि कार्य सब यज्ञोपवीत के अनुसार होंय, तिनके नेग परोत यथावत् दिये जांय । आजसूं ही घोड़ी, लाड़ी गवायवे को वरकन्या के घर प्रारम्भ होय । प्रथम घर की गवें। फिर क्रमसूँ सगे सम्बन्धी व्यवहारीन की गवें । घोड़ी, लाड़ी की विगत यज्ञोपवीत के अनुसार समझनी । ज्योतिषी लग्नपत्र बाँचे, वाकूँ तिलक कर रु० १) देनो । गणेश बैठे के तिलचामरी, गिंदोरा बटें । ढोल के, मृत्तिका लायवे के, कढ़ाईपूजा के बतासा बटें । गणेश को परोत बहनबेटी कें जाय । गणेश बैठवे की विशेष रीति जनेऊ प्रस्ताव में लिखी है, वहाँ देख लेनी ।

समावर्त्तन की रीति

समावर्त्तन के दिन जाति में कटोरी, बुलावा पठावने । विछायत करामनी । प्रथम पुण्याहवाचन कर प्रस्ताव आरम्भ करनो । ब्रह्मचारी के वेद-व्रत-समय-लोप तथा स्नातक-व्रत-लोपादिक के प्रायश्चित्त-सङ्कल्प होंय। कङ्कण बँधे । सींक होय, डाढ़ी होय तो डाढ़ी बने, नख लिये जांय, ताको नेग, परोत यज्ञोपवीत के अनुसार नाई कूँ दियो जाय । उबटनो लगाय गड़गड़ी-स्नान होय । दूलह मस्तकपे माला बाँधे, काजर आँजे, आरसी देखे । तीर्थयात्रा कूं ब्रह्मचारी वेष में दूलह जाय । ता समै ज्ञातिसमुदाय, स्त्रीजन सब आमें । कन्या की माता, भाई, सगे-सम्बन्धी आमें । कन्या को भ्राता जायके कहे "यात्रा कूं मति जाओ, हमारी बहन आपकों देंगे ।" तब पीछे आयके सासकों नमस्कार करे । तब सास तिलक करि अक्षत लगाय शाल अथवा इकलाई उढ़ावे, मूंदरी पहरावे । रु० १) न्यौछावर करे। समावर्त्तन के ब्राह्मण-भोजन जुदे करावने । गोदान करनो । तिलक, दक्षिणा, मन्त्राक्षता, आरती होय । भोज होय, घर दीठ बाँट बटें । वायन, बतासा बटें । पहरे भये धोती, उपरणा, मुड़बन्धा, मार्गशंवल, छत्र, दण्ड, सुवर्णमणि, नांदीमुखदक्षिणा, गोनिष्क्रय उपाध्याय कूँ देनो ।

तेल चढ़वे की रीति

तेल के दिन अपने-अपने घर वर-कन्या गड़गड़ी-स्नान करें। चौंतरापे पट्टूपे बैठें। जाति के कुंवारे लड़का, लड़की जितने होंय, तिनके पास बैठें। यज्ञोपवीत की रीति सूँ तैयारी होय, तेल चढ़े, सबकूँ हथौना दिये जांय। पीछे वर-कन्या के मुखपे हरदी को उबटना कर कुंकुम को कमलपत्र करें। ता ऊपर चुटकीनसों पीरे तथा धोरे चामर क्रमतें चिपकाय काजर आँजें। ऐसे सब बालकनके तेल चढ़ाय कमलपत्र कर काजर आँजें। पीछे वर-कन्या के पामनमें कुंकुम की मँहदी लगावें। एक-एक सुपारी, थोड़े-थोड़े चामर सबनकूं दें। आरती होय, न्यौछावर होय। तेल चढ़े तब आरती होय, उतरे तब नहीं। पीछे झारी सूँ अर्घ देत अपने अपने कुलदेवता के घर में वर कन्या की माता जांय। अर्घ के जलपे पाँव धरते वर-कन्या जांय। जहाँ कुलदेवता बैठेंगे, तहाँ हाथ के चामर पधरावें। पीछे बहूबेटीनकें कुंकुम, अक्षत लगाय बतासा बाँटें। तेल चढ़वे–उतरवे को विशेष क्रम यज्ञोपवीत प्रस्ताव में देखनो।

ग्रहशान्ति की रीति

ग्रहशान्ति यज्ञोपवीत के अनुसार होय। पहिले कन्या के यहाँ होय, फिर वर के यहाँ होय। सावकाश होय तो दोऊ जगह एक दिन होय। सावकाश न होय तो विवाह पीछे भी होय। गड़गड़ीसूँ स्नान होंय। सभा, तिलक, दक्षिणा, मन्त्राक्षता, भोज, वायन, बतासा आदि यज्ञोपवीत के अनुसार होंय। विशेष क्रम वहाँ देख लेनो।

निश्चयताम्बूल की रीति

निश्चयताम्बूल की सभा के बुलावा, कटोरी दोऊ ओरसों जाति में जांय। बिछायत करकें रात्रि कूँ दोऊ जगह सभा होय। पिछलो चार घड़ी दिन रहे तब दुलहन कूँ गड़गड़ी-स्नान करावे। दुलहनके मांग की चोटी करे, सिंदूर मांग में नहीं भरे। लहँगा, साड़ी, चोली पहराय शृङ्गार करे।

चौंतरा के नीचे चौक पूरे, पुण्याहवाचन को सामान धरे। छन्ना १ सफ़ेद अथवा पीरी को, तामें स्वस्तिक करनो, तामें सुपारी ६, चामर ऽ१। सेर बाँधके धरने। दूलह के वहाँ सभा होय। मेवा, मिठाई, फल प्रभृति की थारी १०१ अथवा ५१ अथवा २१ साज चौंतरापे धरे। गोद की साड़ीन की गांठ धरे। सांठान की फांदी १ धरे। दूलह शृङ्गार करे, तिलक करे। पीछे सब थारी टोकरान में धर पीरीन सूँ बाँध दुलहन के यहाँ पठावनी। सो थारी दुलहन के वहाँ चौंतरापे साजनी। दूलह के यहाँ ते सब मनसेरू बहूबेटी गावत-बजावत दुलहन के यहाँ जांय। दूलह अपने घर ही रहे। माला, बीड़ा, चूनरी की साड़ी १, हरी दस्तोइता की चोली १, गहना १, थारी मिठाई की १, श्रीफल नग ५ की थारी १, मेवा की थारी २, फल की थारी १, न्यौछावर के रुपया ५), २), १), या प्रकार दुलहन की सास संग लावे और दुलहन को ससुर अपने संग माला, बीड़ा की थारी १, नारियल के गोलान की थारी २, मिठाई की थारी १, मेवा की थारी १, साड़ी तास की १, कापड़ा पाट को १, गहना तथा मोहर, न्यौछावर कूँ रु० ५), २) १) तथा सफ़ेद अथवा पीरी के साथियावारे छन्ना में बँधी भई सुपारी ११, चामर ऽ१। सेर की पोटरी १ लावे। सास तथा ससुर की आड़ी की गोद की दसों थारी इकट्ठी लाई भयीं थारीन में ही गिनी जांय। दुलहन के घर आके कर्मणःपुण्याहवाचन होय। दोऊ समधी चौक बैठके करें। दुलहन संग नहीं बैठे। कन्या तथा वरपच्छ की आड़ी सूँ सगाई की भाँति विज्ञप्ति के क्रम सूँ दोऊ ओर के नाम लेके समधी ज्योतिषी सों मिलापक पूछें। ज्योतिषी लग्नपत्र बाँचे, ताकूँ यथाशक्ति दच्छिणा दें। प्रथम कन्या को पिता वर के पिता कूँ तिलक करकें ६ सुपारी की पोटरी दे। फिर वर को पिता तिलक करकें कन्या के पिता कूँ ११ सुपारी की पोटरी दे। फेर दुलहन की गोद-बैठावनी होय, सो प्रथम बहूबेटीन में होय। दूलह की मां दुलहनकों गोद लेय, कंकू की टीकी कर अच्छत लगावे। बीड़ी खवावे,

माला पहरावे। साड़ी, चोली, गहना देय, थारी देय, न्यौछावर करे। पीछे वर की और सम्बन्धिनी स्त्रीजन सब गोद लें। टीकी कर अच्छत लगाय साड़ी, चोली, गहना, रुपैया यथासम्बन्ध देंय। दूलह की मां सौभाग्यवती न होय तो पहिली गोद की रीति और सौभाग्यवती नजीक की सगी करे। पीछे दूलह की मां न्यारी गोद लेय। ता पीछे कन्या को भाई कन्या कूँ बाहर सभा में लावे। दाहिनी ओर सूँ पूर्वमुख वर के पिता की गोद में बैठावे। तब दूलह को पिता कंकू अच्छत की टीकी कर माला पहराय बीड़ी खवावे। साड़ी, चोली, गहना, मोहोर, थारी देय। न्यौछावर करे। फेर दूलह के सम्बन्धी गोद लें। साड़ी, चोली, गहना आदि यथासम्बन्ध दें। ता पीछे फेर बहूबेटीन में दुलहन जाय। दूलह की माता गोद ले। छापा की साड़ी, चोली दे। पीछे और सब सम्बन्धवारी गोद लें, अच्छत लगावें। केवल सास ही साड़ी, चोली आदि दूसरी बेर देय। पीछे बाहर थारी बटें। जितने जाके बालक होंय, तितनी थारी देनी। जाके बालक न होय, ताकूँ घर दीठ १ थारी देनी। उपाध्यायजी तथा पण्ड्याजी कूँ यथोचित थारी देनी। भीतर दोऊ ओर के बायन बतासा के बटें। फेर तिलक, दच्छिणा होय। वर के यहाँ सूँ दच्छिणा के कटोरा में टका ५ डारें। दच्छिणा ।) लेखे कन्या की आड़ी सूँ बँटे। वर को पिता अपने घर के तथा सम्बन्धीन की १०१ दच्छिणा लेय। पीछे जाति में दच्छिणा बटे। मन्त्राच्छता दोऊ समधीन की होंय। फेर घर जांय।

वृद्धिनिमन्त्रण की रीति

वृद्धि के पहिले दिन यज्ञोपवीतवत् गाजा-बाजासूँ निमन्त्रण होय। पहिले दोऊ जगह सगेन की सभा होंय। कन्या के पच्छ के वरपच्छ के यहाँ निमन्त्रण कूँ आवें। तिलक कर निमन्त्रण करें। पीछे दोऊ पच्छ मिल जातिकेन कूँ संग लेके घर-घर निमन्त्रण करें। वृद्धि की सभा और भोज तथा विवाह की सभा और चारों भोज तथा नागवल्लीपर्य्यन्त को निमन्त्रण कियो जाय।

ऐसे ही बहूबेटीन में सभा होयके निमन्त्रण होय । परस्पर अक्षत लगाय सुपारी दें तथा बृद्धि, ब्याह, भोजनपंक्ति चारों भोजन कूँ नौंते जांय हैं, ऐसे कहकें निमन्त्रण करें । फेर तेलखड़ी के दोऊ ओर के बायन बटें । वर-कन्या की माता ता पीछे यथावकाश पीहरियान कूँ यज्ञोपवीत प्रस्ताव की नांई भात नौंतें । विशेष रीति यज्ञोपवीत के अनुसार समझनो ।

वृद्धि के दिन की रीति

पहिले कन्या को उबटनो तथा गड़गड़ी-स्नान होय । ता पीछे निश्चय-ताम्बूल की गोद की चूनड़ी की साड़ी कन्या पहरे । माथा सूँ न ओढ़े, साड़ी बचे, सो कमर सों लपेटे । हरी चोली पहरे, चूड़ी बड़ी कर लेय । कदाचित् नथ पहिरी होय तो बड़ी कर छेद चन्दन सूँ मूंद दे । हाथन में गूजरी पहरे । तेल यदि पहिले न उतरो होय, तो आज उतरे । और यदि पहिले तेल न चढ़ो होय तो आज ही चढ़े और उतरे । वर के यहाँ हू उबटना होय । गड़ीगड़ी सूँ न्हाय तथा कन्या के यहाँ की तरह तेल की रीति होय । बृद्धि के भोज की रसोई यज्ञोपवीत के अनुसार सखड़ी, अनसखड़ी होय । सखड़ी रसोई बहनबेटी करें, ताको नेग आदि पूर्ववत् दियो जाय । कलशा, पीठक, कुलदेवता, गणपति के चित्र, काठ को सूआ, बन्दनवार, मण्डपाच्छादन, टोंटीदार कुल्हड़ा, शाखा आदि सब रीति जनेऊ के अनुसार करी जांय । पीछे बृद्धि को प्रस्ताव प्रारम्भ होय । जाति में बुलावा होय, पुण्याहवाचन होय । पहिले कुलदेवतास्थापन कन्या के घर होंय, पीछे वर के यहाँ होंय । कुलदेवता पधारें, ता समय कन्या के यहाँ सूँ वर के यहाँ पीरी साड़ी १, उपरणा २ की पहरामनी पठावनी, सो वर पहरे । वर के यहाँ सूँ भी कन्या के यहाँ पीरी की साड़ी १, ओढ़नी १, उपरणा १ पठामनो । कन्या वे पीरी के कपड़ा पहर कच्छ की साड़ी सूँ कुलदेवता पधरावे । दोऊ पक्ष के चौक बैठें, सो हू पीरे वस्त्र पहरें । कुलदेवता विराजें, तहाँ ताईं पीरे वस्त्र पहरें । कन्या के घर में कुलदेवता के पास कांसे की थारी दो धरें । एक

थारी में २१ भांत के सेव करें, दूसरी थारी में जीरा, पिसी हरदी, चोरीठा, कारी मिरच, सब टका टका भर न्यारे-न्यारे धरें। ये दोऊ थारी वृद्धिकंता के सामान के संग वर के यहाँ जांय, सो विवाह के दिन वर की माता, ऐबाती आदि कन्या के घर लावें। और वो जीरा विवाह के समय अक्षत के संग वर-कन्या के हाथन में धरें। वृद्धि भये पीछे दोऊ ठिकाने सभा जुड़े। पहिले सभा कन्या के यहाँ होय, फिर वर के यहाँ होय। भातई होंय, सो अपने सगे सम्बन्धीन कूँ इकट्ठे कर तिलक कर गावत-बजावत भात लेकें आमें। विशेष रीति यज्ञोपवीत प्रस्ताव में देख लेनी।

भात की रीति

वर के पिता की पहरामनी में शाल १ अथवा सेला १, पाग १, थान १, पटुका १ तथा वर के लिये सेला १ अथवा इकलाई १, वर की मां कूँ साड़ी, चोली, लहँगा, चादर रङ्गीन किनारी की भारी तथा गहना देय। वर के सगेन की पहरावनी साड़ी, उपरणा की होय तथा चार कट्टन दिये जांय तथा रोक रुपैया नगद १०१) अथवा ५१) दिये जांय। दुलहन के पिता कूँ तथा सगेन कूँ तथा कट्टन आदि कूँ या ही प्रकार पहरामनी रुपैया आदि दीनी जांय। वर के सेला के ठिकाने दुलहन कूँ ओढ़नी दीनी जाय। विशेष विवरण यज्ञोपवीत में देखनो।

कन्या के यहां भात पहरवे की रीति

कन्या के माता-पिता कन्या सहित चौक बैठें। पीरी की पहरामनी घर की पढ़ायकें पहिले चौकपे दें, पीछे भात को सवागा, गहना पढ़ायके दियो जाय। फिर सब पहरामनी यथाक्रम पढ़ायी जांय, नगद रुपैया दिये जांय। फेर सब भातै यथाक्रम, यथाशक्ति भात पहरावें। भैयाबन्धु सब पीरी की पहरामनी दें। जातकर्मादिक आज भये होंय, तो नाना आदि सम्बन्धी तथा भैया-बन्धु सब यज्ञोपवीत के अनुसार तिहेरी पहरामनी दें तथा उल्यां को

रेजा तथा रोकड़ी दें। अन्नप्राशन के ठौर के नग २१, ११ अथवा ५ यथासम्बन्ध दें। फेर कन्या को पिता जाति में व्रतेश्वरीन सहित पहरामनी बाँटे। पहरामनी की विगत यज्ञोपवीत के अनुसार समभनी। फिर तिलक, दक्षिणा, मन्त्राक्षता होय। दक्षिणा रु० १) अथवा ।) बटें।

फेर कन्यापक्षवारे अपने यहाँ की सभा पीछे कन्या के पिता के अतिरिक्त सब वृद्धिकन्ता को सामान ले गावत-बजावत वर के यहाँ आवें। कन्ता की दोऊ थारी कन्या की माता अथवा ऐवाती लावे और सीधा को सामान आसामीन के संग टोकरान में साज पीरी सूँ ढांक के लिवा जांय।

वृद्धिकन्ता के सामान की विगत

चून, मैदा, वेसन, चामर, मूंग, उड़द की दार, चना की दार, शाक ४, हरदी, लवण, हींग, मिरच आदि सब आग्योनी सूँ दूनो सामान तथा कन्ता की दोय थारी तथा बड़ी, पापड़, तिलबड़ी, सेव, मोटे पापड़ जुदे-जुदे करे होंय, सो २१ संग लें। मोटे पापड़न में चित्राम हू होय। निश्चय-ताम्बूल की सांठा की फांदी तथा रोकड़ा रु० १०१) अथवा ५१) अथवा यथाशक्ति ले जांय। आसामीन कूँ रु० २) अथवा १) इकट्ठो वर के यहाँ सूँ दियो जाय।

दूलह के यहां भात पहरवे की रीति

वर के माता-पिता वर सहित चौक बैठें। पीरी की पहरामनी घर की पहले पढ़ायके चौकपे देंय। पीछे भात को सवागा, गहना पढ़ायकें देनों। सब पहरामनी यथाक्रम पढ़ायी जांय। रोकड़ी रुपैया पढ़ाये जांय। पीछे और भातई यथाक्रम, यथाशक्ति भात पहरावें। पीछे भैयाबन्धु सब पीरी की पहरामनी दें। पीछे वृद्धि को कन्ता पढ़ावनो। दोऊ ओर की परस्पर विज्ञप्ति होय। पीछे दूलह को पिता जाति में व्रतेश्वरीन सहित पहरामनी बाँटे।

आज न बँट सके तो बहू आये के दिन बाँटे। पहरामनी की विगत जनेऊ के अनुसार समझनो। पीछे तिलक, दक्षिणा, मन्त्राक्षता होय। फिर दूलह सासकूँ नमस्कार करे, तब सास तिलक कर शाल उढ़ावे, मूंदड़ी पहरावे, रु० १) न्योंछावर करे।

ता पीछे दोऊ ठिकाने जनेऊ प्रस्ताव के अनुसार चकीमूसर होंय। तामेंकी थोड़ी खिचड़ी धर राखनी, सो विवाह के लग्न के समय काम आवे। दोऊ ठिकाने बायन, बतासा, साबोंनी, गिंदोरा आदि सब तथा पीरी के बायन आदि यज्ञोपवीत के अनुसार बँटें। पीछे आरती होय। दोऊ ठिकाने कुलदेवता कूँ भोग आवे। फेर भोज होय। भोज को सङ्कल्प कन्या तथा दूलह के पिता करें। भोज की सखड़ी तथा अनसखड़ी यज्ञोपवीत के अनुसार होय। भोज के घर दीठ बाँट बटें। वृद्धि की ऐवाती जिमावनी, तिनकूँ यज्ञोपवीतवत् पीरी साड़ी, चोली देनी। ता पीछे दोऊ जगह अहवाती गणेश के मुहूर्त्त की हरदी सूँ तथा चकीमूसर की हरदी सूँ विवाह के धोती, उपरणा रँगके मण्डपपे सुखावें। पीछे वर के यहाँ मण्डप के नीचे बहूबेटी मङ्गलसूत्र पोमें। एक-एक मोती के बीच-बीच में पोत, ऐसे मोती ११ पोमें। सब के बीच में तिमनिया के मनिया २ तथा मङ्गलसूत्र की कटोरी १ नाड़ा में पोने। याकों अंटलपूसा कहें हैं, सो विवाह में दुलहन पहरे। ता पीछे मातैन की आरती होय। विशेष रीति यज्ञोपवीत प्रस्ताव में देखनी।

विवाह की रीति

विवाह की लग्न तें डेढ़ प्रहर पहिले वर के यहाँ सूँ ऐवाती तथा गावनहारी तलमताट लेकै कन्या के यहाँ जांय। तलमताट की विगत— एक थारी में उबटना के बटेरा २, फुलेल की कटोरी १, कंकू, अक्षत, सुपारी, ये सब धरके सुवासनी ले जांय। कुलदेवता के घर में चौक पूर, पट्टा-पीरी बिछाय, कन्या कूँ वृद्धि के दिन वारी चूनरी, चोली पहरावे।

पट्टापे बैठाय कुलदेवता कूँ दण्डोत कराय उबटना करे । पास कन्या की माता बैठे । टीकी, अक्षत लगावे, गायवेवारी गावें । फेर खली सूँ गड़गड़ी के जल सूँ तथा शुद्ध जल सूं न्हाय । कन्यादान की रेशमी चूनड़ी, चोली तथा गहना पहराय कुलदेवता के आगे पीरी, पट्टापे अपरस में कन्या कूं बैठावनी । चूनड़ी धोय, सुखाय घर में धरनी, सो चतुर्थी-होम के दिन पहरे । फिर कन्यादान के गहने पहरे, ताकी विगत—चोटी चाँदी की १, चोटी सोने की १, शिवतिलक (बाँक) सोने को,हाथन में जौ की पहुँची चाँदी की, टीका जड़ाऊ, करणफूल सोने के, तिमनियां सोने के, बरा सोने के, खसिया सोने के, चांदी की मूंदरी, पामन में तोड़ा कड़ा, जेहर, पगपान, अनवट गोल अँगुरीन में, ये गहना पिता अपने घर सूँ कन्यादान कूँ पहरावे अथवा शक्त्यनुसार पाँच गहना तो करे ही । पीछे कन्या भौजी हरदी की गौरी बनाय पहले की रँगी शिलापे बैठावे । ताके ओर-पास हरदी की मुठिया १० धरे । तिनके पीछे हरदी के गणेश, महेश्वर पधरावे । कन्यादान को समय होय, तब तक दुलहन पट्टापे बैठे, गौरी के ऊपर पीरे अक्षत डारे । दुलहन के पीछे एक कन्या बैठे, सो दुलहन के ऊपर अक्षत डारो करे, ताकों ओढ़नी देनी । दुलहनकों न्हवाय, अहवाती गामनहारी तलमताट लेके दूलह के यहाँ आवें । पीछे दूलह भद्रासनपे बैठें, माता पास बैठे । दूलह के तिलक कर तलमताट आयो होय सो तामें सूँ उबटना करे । गड़गड़ी तथा शुद्ध जल सूँ स्नान कर शृङ्गार होय । मुखपे कमलपत्र होय, काजर अँजे । पीछे घोड़ीचढ़त की सभा होय । माता-पिता वर सहित चौकपे बैठें । उपाध्यायजी सेहरा बाँधें, प्रसादी माला पहरावें । इष्टदेवकों स्मरण कर, बृद्धन कूँ नमस्कार कर आज्ञा मांग दूलह पुण्याहवाचन करे । आरती होय, तिलक होय, दक्षिणा रु० १) अथवा ।) बँटे । स्त्रीजनन में दमीदा तथा घोड़ीचढ़त की चादर जनेऊ की रीतिके अनुसार बटें । पीछे दूलह निश्चय को नारियल, रुपैया हाथ में लेकें कुलदेवता कूँ दण्डोत कर बृद्धन कूँ नमस्कार करके चले । घोड़ी कूँ पूज, चाकरकों

रु० १।) तथा नारियल १ दे। घोड़ीपे चढ़ गावत-बजावत बिनेकी की भाँति सवारी की तैयारी करके उत्साह सों श्री......के मन्दिर कों दाहनों लेते भये दुलहन के द्वारपे जाय। मनसेरू घोड़ी के आगे चलें तथा बहूबेटी घोड़ी के पीछे चलें। गावनहारी घोड़ी गावें। कन्ता की थारी २ वर की माता अथवा अहवाती ले। पहिलेकी सांठा की फांदी की थारी, सिंघोड़ा दो, काजरटीकी को बंटा, हाथीदांत को चूड़ा, श्वेत दसतोइया की चोली, नाड़ाछड़ी ४, गहना को बंटा १, सेहरा दूसरो १, चून के दीवा २१, शकुनपिष्ट (चून की चिड़िया) ३ बिनके ऊपर नाड़ा सूँ पान बँधे, आचमन की लोटी १, सुपारी १०, चना की दार की चक्कीमूसर की खिचड़ी, हरदी गांठ २०, लाजा भुंजाई की तथा ज्येष्ठासन की पहरामनी २ साड़ी उपरणा की, चामर को टोकरा, पीरी के धोती, उपरणा कन्या के तांई, सूपड़ी १० बायन के लिये, चना की दार की खिचड़ी की पोटरी १, निश्चयताम्बूल की चामर-सुपारी की पोटरी, इतनो संग लेके चले। दुलहन के द्वारपे दूलह, समधी, बराती सब ठाढ़े होंय। समधी-समधी परस्पर कण्ठ सूँ मिलें। द्वारपे कलश में रु० ५), २), १) डारें। फेर मार्जन होय। सास दूलहके आग्योंनी की तरह तिलक करे, अँगूठी पहरावे, न्यौछावर करे, उपरणा उढ़ावे। या ही प्रकार सगे-सम्बन्धी उपरणा उढ़ावें, गहना अथवा नगद यथाशक्ति दें। आरती होय, दही चामर वारें। फेर भीतर पगमण्डापे चलें, तामें दीवा नहीं धरे जांय। कलश जेमनी ओर ले दूलह भीतर जाय। बराती प्रभृति भी भीतर जांय। दूलह श्वसुर कूँ नमस्कार कर पूर्वाभिमुख चौकपे बैठे। गोत्रोच्चारपूर्वक कन्यावरण होय। पीछे ज्येष्ठासन की पहरामनी बड़ी सारी कूँ देनी, वो पहरे। फेर वर और पोशाक सब बड़ी करे। फूल अथवा पीरी धरकें सेहरा पहरे रहे। ता समें कन्या को पिता वर कूँ पीताम्बर तथा रेशमी उपरणा पहरावे। गहना—कान के मोती चौकड़ा, हाथन के सोने के कड़ा जोड़ी, गले को गहना अथवा यथाशक्ति पहरावे। जनेऊ पहरावे। मधुपर्क होय। पीतर की

परात १ आगे धरी जाय, तामें वर के पाँव धोमें। ता पीछे चामर के टोकरान में वर पश्चिमाभिमुख तथा कन्या पूर्वाभिमुख बैठें। बीच में अन्तःपट रहे। कन्या को पिता कन्या को हाथ अक्षत, पुष्प, जल सहित सूधो अपने हाथ में राखे, ताके नीचे वर को हाथ सीधो राखे और पत्नी झारी में ते थोड़ी-थोड़ी जलधारा डारे। गोत्रोच्चारपूर्वक सङ्कल्प करके कन्या को हाथ वर के हाथ में देय। कन्यादान होय। ता समें मोहोर १ अथवा रु० ५) देने और सगे-सम्बन्धी तथा जाति के हू सब यथासम्बन्ध, यथाशक्ति गहना अथवा नगद कन्यादान देंय। यदि लग्न साधवे की शीघ्रता होय तो पिता के अतिरिक्त सब जने लग्न पीछे कन्यादान दें। फिर मङ्गलाष्टक पढ़ें। वर-वधू के हाथन में चक्कीमूसर की खीचड़ी, अक्षत तथा कन्ता को जीरा राखनो। लग्न के समय ज्योतिषी समय साधके घण्टानाद करे। शुभ मुहूर्त्त होय, ता समें अन्तःपट उत्तर की आड़ी खेंचनो। वर-वधू अक्षत परस्पर माथेपे डारें। पहिले वधू डारे। पीछे कुलदेवता के आगे जांय। दूलह के घर के धोती, उपरणा गौरीकें प्रसादी कर दुलहन पहरे। माथो उघाड़ो राखे तथा लांग की धोती पहरे तथा दुलहन के घर के धोती, उपरणा दूलह पहरे। कन्यादान की चूनड़ी उपाध्यायजी कूँ देंय। फेर दूलह के घर को शृङ्गार होय, तामें वृद्धि के दिन को मङ्गलसूत्र पोयो भयो दुलहन कूँ पहरायो जाय। नाड़ाछड़ी दूलह पहरावे। जो नयो गहनो होय सो पहिले गौरी कूँ धरायके कन्या को पहरावनो। शृङ्गार भये पीछे गौरी, गणेश, महेश्वर, तीनों देवतान की दोऊ पूजा करें। दुलहन सिंदूर पहरावे। पीछे सगरी सुवासनी गौरी कूँ सिंदूर पहरावें, फेर दूलह कूँ पहरावें। पीछे दूलह दुलहन कूँ सिंदूर पहरावे। टीकी लगावें। पीछे सेहरा बाँधें। पीछे संग में जो सूपड़ी आयीं हों, तिनसूँ खिचड़ी के बायन दूलह की माता दुलहन की माता प्रभृतिन कूँ दिवावे। दुलहन अपने छेड़ा सूं ढाँक के देय, लेनवारी हू छेड़ा सूँ ढाँक के लेय, या ही ते इनको नाम मूसबायन है। पीछे दुलहन कूँ आगें करके गठजोड़ा

सूँ दूलह विवाहस्थल में आय टोकरान में गठजोड़ा सहित बैठे। वर पूर्वमुख तथा कन्या पश्चिममुख बैठे, टोकरा बदलके धरने। दोऊ ओर चून के दीवा २१-२१ प्रगट करें। पीछे कपिलावाचन और मन्त्राक्षता बड़ी होय। या अन्तर में दूलह की माता दुलहन के यहाँ की दीवान की थारी चोरे। पीछे तिलक होय, कन्यादान की दक्षिणा रु० २) अथवा १) बटे। तामें दूलह को पिता अपने सगेन की दक्षिणा निश्चयताम्बूल प्रमान रु० १०१) लेय। स्त्रीजनन में कन्या की ओर के खीचड़ी के बायन बटें। सभा उठे। टोकरा के चामर अपने-अपने मान्य लें। मन्त्राक्षता के बिखरे चामर बारी लेय। यदि रात्रि ग्यारह घड़ी चली गयी होय तो स्थालीपाक दूसरे दिन सायं सन्ध्या भये पीछे होय और औपासन हू दूसरे दिन होय, तभी पहिलो भोज होय।

भोजनपंक्ति के ४ भोज के निमन्त्रण की रीति

जे भोजन के कटोरा होंय, तिनमें ते एक कटोरा सूँ अथवा मधुपर्क के कटोरा सूँ दोऊ ओर को चार दिन ताईं को निमन्त्रण होय। कटोरा कूँ पीरी के पट्टवस्त्र में लपेटकें छुवे नहीं, ऐसे निमन्त्रण करे। भोजनपंक्ति के निमन्त्रण में पहिले दुलहन के यहाँ के सगरे दूलह के पिता कूँ निमन्त्रण करें। ता पीछे ये विनकूँ निमन्त्रण करें। ऐसे ही जाति में दोनों आड़ी को गाजा-बाजासूँ बृद्धि के अनुसार निमन्त्रण होय। अवकाश न होय तो मन्त्राक्षता भये पीछे सभा में ही सबकूँ निमन्त्रण कर देंय हैं। फेर लाजा-भुजाई की पहरामनी वर के मान्य कूँ अथवा वर के सारे कूँ देनी। पीछे चौरी यज्ञोपवीत के अनुसार बँधे तथा नेग परोत आदि दिये जांय। चौरी की रीति यज्ञोपवीत में देख लेनी।

विवाह के होम की रीति

दुलहन के माता-पिता ग्रन्थिबन्धन कर गौरी की शिला चौंतरापे बहार पधरावें। अन्तःपट की चादर, निश्चय के छन्ना दोय, सप्तपदी को साज

उपाध्यायजी कूँ देनो। विवाह-होमादि, औपासनादि वैदिक कार्य होंय तथा आरती होय। ऐसे ही चतुर्थी-होमपर्य्यन्त सायमौपासन के पीछे आरती नित्य होय तथा दोनों समय वर-वधू नित्य होम करें। अग्नि तथा कुलदेवता के दीपक की सावधानी सूँ यज्ञोपवीतवत् सम्हार राखी जाय। पीछे हरदी होय।

हरदी की रीति

हरदी में दूलह के यहाँ सूँ स्त्रीजन गाजा-बाजासूँ आमें, सो आरती दोय लेती आमें, तिनमेंसूँ एक आरती हरदी में होय, दूसरी होम पीछे होय। दूलह-दुलहन कुलदेवता के आगे चौक में पट्टा पीरीपे बैठें। कुलदेवता कूँ दण्डवत् कर एक थारी में भींजी हरदी होय, सो परस्पर मुखपें लगावें। फुलेल लगावें। माथे में कांगसी करें। कुंकुम की महँदी लगामें। कुंकुम लगामें। परस्पर ओसरा सूं दण्डवत् करें। आरती करें, राईनोंन करें। इतनी रीति परस्पर करें। पीछे दूलह दुलहन कूं गोद में लेके दोऊ ओर की सम्बन्धनीन की गोद में बैठावे। पीछे दुलहन की माता सुपारी ६-६ दोऊन कों दे। दोऊन के उपरणा के छेड़ान में थोड़ी-थोड़ी खीचड़ी, हरदी की गांठ, १-१ सुपारी दाब बाँध देवे। पीछे वर-वधू बाहर आमें। या प्रकार प्रथम हरदी केवल स्त्रीजनन में ही होय, ताकूं चोर-हरदी कहें हैं। फिर भीतर समधमिलावा होय।

समधमिलावा की रीति

दोऊ समधिन पट्टापे बैठें। फिर दुलहन की मां दूलह की मां के पांय रँगे तथा सवागा दे। सवागा में चादर जरी की, साड़ी छड़ी की, लहँगा खीनखाप को, चोली भारी तथा गहना—नथ, तिमनिया, टीकी, अनवट, बिछिया, पायजेब, गूजरी प्रभृति अथवा यथाशक्ति दे। चामर ऽ५। सेर, गुड़ ऽ१। सेर तथा रु० १) को परोत दे और दूलह की मां दुलहन की मां कूं केवल परोत ही दे, तामेंसूं रु० १) पाछो फेर दे। चोखा, गुड़ राखले।

दूलह की माँ वे कपड़ा, गहना पहिरे। वर की और सगीन कूँ हू यथाविभव, यथाशक्ति सवागा, गहना आदि दिये जांय। पीछे दोऊ समधिन परस्पर पामन लगें, मिलें। दुलहन सूँ छोटे मामा, काका, मौसी, फूफी के बेटा भाईन कूँ एक-एक उपरणा दियो जाय। छोटे भाई न होंय तो उपरणा सगे बड़े भाई कूँ थामे को देनो। फिर यदि दूलह-दुलहन के यहाँ शंकुल लायवे, लेवे की रीति होय तो दूलह को पिता दूलह के यहाँ शंकुल लावे, तामें बूरा की सिखोरी, गुड़ की चकुली, फीकी चकुली, पीरी सुहारी, धोरी सुहारी नग प्रत्येक २१ अथवा ११ तथा पीतांचली दोय, इतनों लायके कुलदेवता के यहाँ धरे, सो देवविसर्जन पीछे दुलहन के घर की बड़ी बूढ़ी सौभाग्यवती के अतिरिक्त होंय सो पहरें। फेर चार दिन ताईं दूलह के सगे इकट्ठे होयकें वर के पिता के संग गाजा-बाजासूँ दुलहन के घर जेमे कूँ आमें।

हरदी के भोज की रीति

सब जगह खासा कर प्रस्ताव के चौंतरा के नीचे पूर्वमुख, उत्तरमुख दोय चौक चून-हरदी के बहूबेटी मांढ़ें। बिना पट्टा दोय पीरी बिछावें। आगे कांसी को थार १, कांसी के कटोरा २ मधुपर्क में आये होंय सो धरें। पातर बिछायके जल की झारी चांदी की अथवा पीतर की भरके धरें। दूसरी लोटी धरें। जितनी पातर होंय सो सब धरकें अनसखड़ी, सखड़ी साजें। सखड़ी के परोसना में पहिले दूलह के थार में सखड़ी के मीठे सेव बीच में धरें। ता पीछे और वस्तु धरें। दूलह को पिता पुरुषन में तथा दूलह की माता स्त्रीजनन में घी परोसे, तिनकूं घीपरोसाई को पटोरा, पीताम्बर, मूंदड़ी, गहना यथारुचि, यथाशक्ति दे। सो पहरके तथा ओढ़कें घी परोसें। घी परोसवे की कँसेड़ी और करछी होय सो दायजा के संग वर के यहाँ जाय तथा दूलह के भोजन के थार-कटोरा हू वा ही दिन जांय। पीछे सबन के तिलक होय। कन्या तथा वर के पिता भोज को सङ्कल्प "एकोविष्णुर्महद्भूतं" ये करें।

पीछे दुलहिन दूलह के हाथ में हाथसूं घी दे, तासूँ दूलह आपोसन लेय। आपोसन लिये पीछे दुलहन पांच कौर लेकें उठ जाय। फेर दूलह जेंमें। पीछे सब पंक्ति में दोऊ समधी कहें "अबरे भई है, चहिये सो मँगाय लेंगे।" सगरे कहें "बेग भई है, सुभोज्यमस्तु", ऐसे कहें। या रीति सूँ चार भोज होंय। प्रथम दिन के भोज में सामग्री माठ, सेव के लडुआ, बूंदी के लडुआ, चन्द्रकला, उपरोठा, ये पाँच पकवान परोसें। बिलसारू, सिखरन, दूधपूरी, बूरा प्रभृति सखड़ी, अनसखड़ी सब होय। भोजनोत्तर मन्त्राक्षता होय। चार-चार सुपारी बँटें। दूसरे भोज में सामग्री घेवर की तथा तीनकूड़ा बड़ी को होय। तीसरे भोज में सामग्री चन्द्रकला की, कढ़ी वा तीनकूड़ा होय। चौथे भोज में सामग्री जलेबी की, पकोड़ी की छाछ तथा कांजी होय। चारों दिन समधी कूँ और सगेन कूं मण्डप के नीचे बैठावने और सब एक ओर बैठें। फिर बहूबेटी जेंमें। चारों दिन भोज में भीतर चौक देके पट्टा बिछाय समधिनकूं बैठावे। दुलहन की मां के महँदी की तरह कंकू सूँ पाम मांड़े। कंकू की टिपकी देके अक्षत सूं पाम पूजे तथा और सब समधिन के हूं वैसे ही कंकू की महँदी लगावे, टीकी लगावे, पाम पूजे। मुख्य समधिन की आरती करें। मुख्य समधिन होय, ताकूं वा दिन की चोरी थारी में जिमावे अथवा और थारी-कटोरा में जिमावे। औरन कूं पातर धरे। जैमे पीछे सुपारी दे, बिदा करे। मण्डप के नीचे भोज की सुविधा न होय तो भोज अन्यत्र होय, किन्तु मण्डप के नीचे घरके अथवा ब्राह्मण भोजन करें, मण्डप सूनो न रहे। जो भोज रह गयो होय सो चार भोजन के पीछे होय। चार दिनके भीतर ही दुलहन कूं ब्रह्मसम्बन्ध होय। स्नान की आवश्यकता नहीं। अच्छे मुहूर्त्त में चार दिन के भीतर छोटी पठौनी करे।

छोटी पठौनी की रीति

छोटी पठौनी को मुहूर्त्त ४ दिन के भीतर जा दिन होय, ता दिन पहिले

स्त्रीन में अच्चत के बुलावा फिरें । पुरुषन में सभा होय । वर-वधू शृङ्गार करकें कुलदेवता के आगे दण्डोत कर, ग्रन्थिबन्धन कर, बड़ेन कूं नमस्कार कर बिदा होंय । दुलहन के पिता माता तिलक, टीका करें । १-१ श्रीफल तथा रु० १) दोऊन कूं दें । माता साड़ी, चोली दे । सिंघोड़ा दोय दुलहन के हाथ में दे । रु० १) कलश में डारवेकूं दे । सबन कूं तिलक होंय । पालकी में वर वधू आमें-सामें बैठकें गाजा-बाजासूँ दूलह के घर जांय । दूलह के दरवाजेपे मार्जन होय । दूलह की मां चामर-दही बारे । बहनबेटी मिलके आरती करें । बाररुकाई होय, तामें गहना अथवा रोकड़ी बहनबेटीन कूं यथाशक्ति दिये जांय । पीछे सुहारी तथा पीरी के पगमण्डापे चलके कुलदेवता के घर में जांय । पीरी की साड़ी बहनबेटीन कूं तथा सुहारी वारिनकें जांय । पगमण्डा के दोऊ आड़ी चून के दीवा जुड़ें । कुलदेवता कूँ दण्डोत करके चौंतरापे भद्रासनपे बैठें । पीछे दूलह की बहन दुलहिन के पाम पीतर की झारी में कच्चो दूध भरके धोवे, पीरे अँगोछा सूँ पोंछे । ताको नेग साड़ी, चोली दे । पुण्याहवाचन होय । दुलहन के यहाँ सूँ खीचड़ी सेर ८५, पहरामनी १ आवे, सो देके आरती होय । तिलक होय । दक्षिणा ।) अथवा =) बटें । वर-वधू खाई खांय । फिर दुलहन को भाई बहन कूं लिवावे आवे, ताकूँ पाग, इकलाई दें । पीछे केवल दूलह-दुलहन बाजा-गाजासूँ पाछे जांय । तब दुलहन दोय सिंघोड़ा संग ले जाय । फेर आछे मुहूर्त में दुलहन कूं नथ, चूड़ा पहराये जांय ।

नथचूड़ा पहरायवे की रीति

कुलदेवता विसर्जन भये पहिले जा दिन नथ, चूड़ा को मुहूर्त्त होय, ता दिन मण्डप के नीचे दुलहन की सास दुलहन की नाक के ऊपर कुंकुम की टिपकी लगावे । सुनार नाक छेदे, ताकूं गेहूँ को परोत दे, तिलक करें और और सास प्रभृति नाक छेदें तो चामर को परोत दें । दूलह की बहनबेटी

चूड़ा पहरावें, तब चूड़ी १ कांच की तथा चूड़ी १ लाख की पहिले पहरायके फेर लाल छापा को दांत को चूड़ा पहरावें । बतासा दोऊ बेर के दूलह की ओर के बँटें ।

दूसरे दिन सूं चौथे दिन तक हरदी की रीति

सांझ कूँ बहूबेटी गाजा-बाजासूँ हरदी लेकें जांय। गन्धाक्षत की थारी, आरती दो, राई-नोंन, कटोरी में फुलेल, उबटना, घोरी हरदी, फूल के गहना, गहना को बंटा, काजर-टीकी को बंटा, इतनो सब संग लेकें जांय । दूलह-दुलहन कुलदेवता के घर में जांय। पट्टापे बैठकें दण्डवत् करें । फेर हरदी लगावें। फुलेल मांथे में डारें। कांगसी करें । दण्डोत करें । इतनो दूलह-दुलहन परस्पर करें । पीछे दुलहन कूं गोद में लेके दूलह बाहर आवे। चौंतरा के नीचे पट्टापे दोऊ बैठें। दूलह बांये हाथ की चिट्टी उँगली सूँ तथा अँगूठा सूँ दुलहन की चोली की गांठ खोले । वा समय बहूबेटी 'डोलना' गामें। पीछे बहूबेटी दोऊन कें उबटना करें, शृङ्गार होय । छल्ला की चोटी होय । पीछे दुलहन की मां पट्टू झाड़कें फेर बिछावे। तापे वर-वधू बैठें। परस्पर कुंकुम की महँदी लगावें, दण्डोत करें । छेड़ान में जे सुपारी बँधी हों, ते खोलके पट्टूपे डारदें। फेर दुलहन की मां दोऊन कूँ ६-६ सुपारी दे । वे छेड़ान में बाँधें। पीछे परस्पर आरती करें । दूसरी आरती सायमौपासन के पीछे होय। दूलह दुलहन कूँ दोनों पक्ष की बहूबेटीन की गोद बैठावे। फेर दूलह दुलहन के सम्बन्धिनीन के हरदी लगावे। दुलहन दूलह की सम्बन्धिनीन के हरदी लगावे । दोनोंन की मां अपनी-अपनी थारीन में सूँ हरदी लगवावें। पीछे आपस में बहूबेटी हरदी खेलें। फेर अक्षत लगावें। फेर पुरुषन में हरदी, जूआ प्रभृति सब होय।

जूआ की रीति

वधू को पिता वर-वधू कूँ लेके दुलीचा के ऊपर अपने सगेन कूँ लेके

बैठे। पिसी हरदी भिजोयके थारी में धरे। गूलर के, बैंगन के, ऋतुफल के विलक्षण हार ५ पोयके टोकरी में धरे। लाल दरयाई की थैली २, तामें रु० ५) के टका अथवा रु० २) के एक थैली में धरे, दूसरी थैली में सुपारी सेर ऽ२ धरे। इतनी ही वस्तु वरको पिता लावे। पीछे सब जाति के आय चुकें, तब अपने-अपने सगे दोऊ ओर होयके वर-बधू कूँ जुआ खिलावें। तामें पहिले दुलहन सुपारी की मुट्ठी लावे और वर सूँ पूछे "एकी है कि बेकी?" वर की इच्छा आवे सो कहे। कहे प्रमान नहीं निकसे तो जितनी सुपारी होंय, तितने पैसा गिन देय। दूसरे दिन पहिले दूलह मूठ लावे। ऐसे तीनों दिन तीन-तीन मूँठ आवें। पीछे दूलह दुलहन के सगेन के मुखपे हरदी लगावे और दुलहन दूलह के सगेन के मुखपे हरदी लगावे। पीछे दुलहन कूँ गोदी में लेके दूलह दोऊ ओर के सगेन की गोदी में बैठावे। फेर ओसरे सूँ परस्पर दण्डोत करें। पीछे समधी परस्पर वे हार पहरामें। फेर भोज होय। ऐसे हरदी दो दिन और होंय। छैली हरदी कूँ बहूबेटीन में रँग की हरदी होय। चौथे दिन हरदी के समय जलघड़िया के हाथ दूलह के घर ते कन्ता की कावड़ आवे। ताकी विगत—चामर सेर ऽ५, चून सेर ऽ२॥, मैदा सेर ऽ२॥, घृत सेर ऽ१।, गुड़ सेर ऽ१, हरदी की गांठ ४५, पीसी हरदी ऽ।, कुंकुम ऽ=, सुपारी ४५, नोंन ऽ॥, कूल्हड़ा ३३, चना की दार की खीचड़ी सेर ऽ२॥, तीन खूँट के चार-चार पान के बीड़ा १००, तेल सेर ऽ१, रुई ऽ-, कूल्हड़ा रँगवे कूँ धोरी खड़ी ऽ=, सेहरा २, पुष्प की माला ४, प्रसादी केशर, अञ्जन, नागपसायन कूँ छापा की साड़ी १, नारीकुञ्जर को पटोरा रेशमी १, हरी दसतोइया की चोली १, लहँगा लाल रेशमी १, पुतरी की साड़ी १, वामें लाल दसतोइया की चोली १, जरी की ओढ़नी १ अथवा सेला जरी के पल्ले को वा उपरणा कोरो, जूती को जोड़ा १, इतनों कावड़ में जाय। जो कावड़ लेजाय, वाकूँ बेटीवारो तिलक करके रु० १) देय। दुलहन के यहाँ के दूलह के कपड़ा उन कपड़ान के पास दूसरे टोकरा में

धरें। तामें जामा, नीमा, पाग, चीरा, पटुका, उपरणा जरी की कोर को तथा स्थन तथा नागपसाइन के लिये कापड़ा होंय तथा सेहरा दोय एक छाब में धरें। जूती-जोड़ा धरें। छैली हरदी कूँ बहूबेटीन में रँग की होरी होय, तब गीले कपड़ान सों ही कन्ता आँजें।

कन्ता आँजवे की रीति

चौंतरा के नीचे चौक पूर पट्टा-पीरी बिछायके वर-वधू बैठें। ग्रन्थिबन्धन होय। आगे दोऊ ओर के कपड़ान के टोकरा धरें। उपाध्यायजी आयकें कपड़ा पढ़ावें। बीड़ा को टोकरा, सेहरा की छाब, कन्ता की थारी २, जलपूर्ण झारी आगे धरें। दुलहन की मां तथा और कोई सम्बन्धिनी दुलहन के पास बैठें। ऐसे ही दूलह की मां तथा और कोई सम्बन्धिनी दूलह के पास बैठें। इनमें गर्भवती तथा जाके बालक को मुण्डन न भयो होय, ऐसी स्त्री न बैठे और इनसों जुदी जा स्त्री कों ऋतुधर्म गयो होय, सो सौभाग्यवती स्त्री नागपसायन होय। वो चौंतरा के ऊपर ठाढ़ी रहे और जो-जो वस्तुएँ चारों बहूबेटी वर-वधून के ऊपर होयकें देती जांय, सो सब चौंतरापे धरे। पीछे पूर्ववत् दोय-दोय जनी दोऊ ओर वर-वधू के पास बैठें। नागपसायन वर प्रभृति सबन के तिलक-टीकी यथायोग्य करे। अक्षत लगायकें सबनकूँ बीड़ा २-२ देय। सबन की आरती करे, तामें बीड़ा डारे जांय। फिर परस्पर काजर आँजें। दूलह की माता सूखे कपड़ा पहरकें पीछे घर जाय। जो बहूबेटी कन्ता अँजावें, तिनकूँ तथा नागपसायन कूं विंडरू लगे, सो दूसरे दिन गौरी कूं सिंदूर पहरावे तहाँ ताईं रहे। कन्ता पहिले अँजे, पुरुषन में, हरदी की सभा पीछे होय अथवा यथासुविधा होय। जूआ प्रभृति नित्य की रीति सूँ होय। भोजनोत्तर वर-वधून के धोती, उपरणा, चोली और मण्डपपे सुखावने। वे सुखाये कपड़ा चतुर्थी-होम के समय पहरें। दूलह दूसरे वस्त्र पहरे। दुलहन निश्चयताम्बूल की चूनड़ी तथा हरी चोली

पहरे। हरदी के चार दिनन में जब अवसर मिले, तब दूलह के अनजाने दुलहन दूलह के छेड़ा की खीचड़ी को दाव चोरे। अनजाने न चोर सके तो हू चौथी हरदी में जानके चोरे। दाव-चुराई को गहना दियो जाय। चौथे दिन चतुर्थी-होम होय।

चतुर्थी-होम की रीति

पीछे अपर रात्रि में चौक पूर पट्टा, पीरी बिछाय वर-वधू गठजोड़ा सूं बैठें। गड़गड़ी की तैयारी होय। कन्या के पिता के नाई कों बुलाय दोऊ नख लिवामें, ताको नेग परोत, रु० १।) तथा पाग-उपरणा दें। फिर गड़गड़ी-स्नान होय। ता पीछे गठजोड़ा खोल शुद्ध जल सों स्नान करें। मण्डपपेतें धोती-उपरणा ले पहरें। ता पीछे चौंतरा के ऊपर चौक दे पट्टा, पीरी बिछाय गठजोड़ा सूं कर्म्मणः पुण्याहवाचन तथा चतुर्थी-होम करें। होम सूर्योदय सूं पूर्व हो जाय। वर-वधू की चूनड़ी की साड़ी, चोली, धोती, उपरणा नाई कों देने। फिर बड़ी पठौनी होय।

बड़ी पठौनी की रीति

बड़ी पठौनी के दिन सायङ्काल अथवा रात्रि में प्रस्ताव होय। ये प्रस्ताव कुलाचार-प्राप्त है। जाति में बुलावा करावनो। निश्चय के रुपैया की मुठिया १ बनावनी। पीछे ईशानकोण की चौरी में सूं मथनी १ काढ़नी। वामें उमा, महेश्वर, लक्ष्मीनारायण, गणपति, बसन्त को कलश मांड़नो। चप्पन ऊपर ढांके, तामें अष्टदल-कमल मांड़े। या को परोत वधू को पिता चितेरे कूं देय। विवाह के चौक के बीच में सर्वतोभद्रमण्डल पंचवर्णाक्षत सों मांड़े। दक्षिण कूं लोन को हाथी पश्चिममुख मांड़े। उत्तरकूं चामर को हाथी पूर्वमुख मांड़े। चौंतरा के नीचे तथा सामें मण्डल के आगे पंचवर्णाक्षत के दो चौक दोऊ आड़ी पूरे। खड़ी सूं कुल्हड़ा ३२ रँगके मण्डल के चारों आड़ी धरे। तिनमें कावड़ के सामान में ते सुहारी ७१, गुलगुला

१४१ कराय धरे । चना की खीचड़ीपे हरदी की गांठ ३३, सुपारी ३२ भीतर धरे। पट्टापीरीपे वरबधू गठजोड़ा सूं बैठें । पीछे वर के माता-पिता ग्रन्थिबन्धन कर गौरी कूँ मण्डल में पधरावें । गौरी की शिला माता पधरावे । गौरी स्त्री ही पधरावे, पुरुष नहीं । मण्डल में उत्तरदिशा की आड़ी मध्य में चित्र की मथनी धरे । भीतर चना की खीचड़ी थोड़ी भरे । हरदी की गांठ ५, बीड़ा २ भीतर धरे । चप्पन ढांक ऊपर सुहारी २, गुलगुला ४ धरे तथा कूलड़ान के ऊपर सुहारी २-२, गुलगुला ४-४ धरे । कूलड़ान के आगे चून के दीवा १-१ प्रगटावे । तेल पूरतो रहे । पीछे दुलहन की माता हाथ में चित्र की मथनी ले । दूलह की माता हाथ में सेहरा को छबड़ा ले । वा में बीड़ा ५ धरे । पीछे दूलह के ओर की एक जनी गहना को बँटा ले । दुलहन के ओर की एक जनी वस्त्रन की गांठ ले । नागपसायन जल की झारी ले । आगे दुलहन, पीछे दूलह ग्रन्थिबन्धन करके चलें । इनके पीछे दुलहन की माता, ता पीछे दूलह की माता, ता पीछे पोशाक की गांठ वारी, ता पीछे नागपसायन ऐसे मण्डल की तीन प्रदक्षिणा करें । पीछे और सब वस्तु तो धर दें, दुलहन की माँ चित्र की मथनी लेके मण्डल के भीतर बीच में पूर्वमुख ठाढ़ी होय । तब दूलह के घर की साड़ी तथा दुलहन के घर को नागपसायन को कापड़ा पढ़ाय मथनीपे धरे । पीछे दुलहन के नाना के सब सम्बन्धी एक-एक पहरामनी डोलू की दें, सो पढ़ाय मथनीपे धरे । पीछे मथनी मण्डल में धरे । पीछे दुलहन की मां जो ठाढ़ी है, ताको अञ्जली में पुष्प दे । नागपसायन झारी में सों जल दे, सो पुष्प, जल पिछवाड़े कूँ बैठे वर-बधून के ऊपर उछाल दे । ऐसें तीन बेर जल-पुष्प उछाले । पीछे मण्डल में ते निकस भीतर जाय । पहिले पढ़ाये साड़ी, कापड़ा नागपसायन कूँ दे और सब वस्तु घर में रहें । पीछे वर-वधू वस्त्र पहरें । शृङ्गार करकें कमलपत्र कराय काजर आँजें । वैदिक कार्य होय । फिर कलश को तथा गौरी को पूजन करें । दूलह गौरी कूँ तथा वधू कूँ सिंदूर पहरावे । पीछे बहूबेटी सब गौरी कूँ तथा

वधू कूँ सिंदूर पहरावें। वर-वधू सेहरा बाँधें। कन्या के यहाँ के खुपड़ी के वायन कन्या की मां वर के यहाँ की पाँच स्त्रीजनन कूं दिवावे। वधू अपने छेड़ा ते ढांक के देय। लेवेवारी हू ढांक के लेय। फेर वर-वधू हस्त्यारोहण करें। कन्या लोन के हाथीपे ठाड़ी रहे, वर चामर के हाथीपे ठाड़ो रहे। तब कन्या कहै "लोन को हाथी लेके चामर को हाथी देगोरे लोंडा ?" ऐसे ही वर कहै "चामर को हाथी लेके लोन को हाथी देगीरी लोंडी ?" ऐसे कह प्रदक्षिणा चले। सो लोन के पे वर ठाड़ो रहे, चामर के पे वधू ठाड़ी होय के पहिले वधू कहै "चामर को हाथी लेके लोन को हाथी देगोरे हरबोला ?" फेर वर कहै "लोंन को हाथी लेके चामर को हाथी देगीरी हरबोली ?"। फेर प्रदक्षिणा चले। चामर के पे वर ठाड़ो होय, लोंन के पे वधू ठाड़ी होय। फेर वधू कहै "लोंन को हाथी लेके चामर को हाथी देगोरे राजा ?" फेर वर कहै "चामर को हाथी लेके लोंन को हाथी देगीरी रानी ?" ऐसे कह पट्टा-पीरीपे ठाड़े होंय। फेर आरती के समय मण्डल के दीवानमें ते ५ दीवा थारी में धरके कन्ता अँजवे के समय की रीति सूँ आरती होय। नागपसायन करे। बीड़ा दे। बीड़ा ही आरती में डारे। पीछे तिलक होय। जाति में सुपारी के ठिकाने वर-वधू सबनकूँ बीड़ा २-२ दें। पीछे बहूबेटीन में जायकें बाँटें। बहूबेटीन में वर के यहाँ की चना की खीचड़ी के वायन बटें। अक्षत लगावें। फिर विदा होय।

वर-वधू विदा होयवे की रीति

वर-वधू कुलदेवता के यहाँ जांय। तब दोऊन कों सास सेव को लडुआ खवावे। कुल्ला कराय प्रसादी बीड़ा खवावे। पीछे सेव को लडुआ १, रु० १) रूपे की कटोरी में अथवा कांसे की कटोरी में धर दुलहन की माँ दुलहन के पेट सूँ पटोरा सूँ बाँधे। वर-वधून कूं तिलक-टीकी कर श्रीफल १, रु० १) दोऊन के हाथ में न्यारे-न्यारे दे। दुलहन के हाथ में सिंघोड़ा २ देय। सिखोरी २१ दुलहन के संग में पठावे। जब विदा होयके घर कूं

चले, तब गौरी की सिला तथा समित्समारोपण की समिधा १ व्रतेश्वरी अथवा और ब्राह्मण पालकी के साथ हाथ में लेके चलें। ताके आगे सब जाति के चलें। गाजा-बाजासूँ घर आवें। द्वारपे पहुँचें, तब कलश में रु० १), १) डारें। मार्जन होय। आरती द्वारपे होय। दही-चामर वारें। वाररुकाई होय, ताको गहना अथवा रोकड़ा यथाशक्ति बहनबेटी कूं दियो जाय। पीरी साड़ीनपे सुहारी २-२ के पगमण्डा होंय, सुहारी के पास चून के दीवला प्रगटायकें धरें। पीरी साड़ी बहनबेटी कूं तथा सुहारी वारिन कूं देय। भीतर कुलदेवता कूं दण्डवत् करके गौरी की शिला पधरावे, अगाड़ी सिंधोरा पधरावे। फेर चौंतरापे गठजोड़ा सूँ भद्रासनपे बैठें। पीछे पीतर की थारी में दूलह की बहन जितनी होंय, तितनी दुलहन के पाम कच्चे दूध सों धोवें। पीरे अँगोछा सूँ अँगोछें। दूलह १-१ साड़ी, चोली सब बहनबेटीन कूं पामधुवाई देय। दुलहन को पिता अपने घर सगेन की सभा कर दायजो साजे।

दायजा साजवे की रीति

वर-वधू की पहरामनी भेली तथा वर के पिता की तथा नाना, दादा के पेटकेन की तथा अन्य सगे-सम्बन्धीन की पहरामनी साजनी। इन सबन के बालकन कूं झगा, टोपी, ओढ़नी आदि धरने तथा उपाध्याय, पण्ड्या, दासी धाय, इनकी पहरामनी साजनी। भारी देवे की श्रद्धा न होय तो और सम्बन्धीन की सादा साड़ी, उपरणा की साजनी। बासन साजवे की विगत—जेमें के थार-कटोरा, भोजन की झारी, परात, घी परोसवे की कँसेड़ी, चोरी की थारी, मधुपर्क के कटोरा २, हांडा पीतर को १, करछी १, करवा १, सीधा के रु० १०१) वा ५१), सगाई के तथा निश्चयताम्बूल के गहना, कपड़ा, रोकड़ा, सांठा की फांदी तथा और सब मेवा देनी। दुलहन की गोद की मिठाई घर में रहे। कन्ता की थारी २, कड़ियल को उपरणा १, नगद रु० १), वायन तथा कन्यादान में जो आयो होय सो गहना तथा कन्यादान के रुपैया, ये सब साजनो। बेटी के निमित्त आयो होय सो घर में

रहे नहीं। या प्रमान सब साज सगेन की सभा कर तिलक कर सगेन कूं संग लेके कन्या को पिता पोशाक पहरके गाजा-बाजासूँ दूलह के घर दायजा ले जाय। भोजन के बासन रेशमी वस्त्र में लपेटके ले जानो। वहाँ जब वर-वधू पुण्याहवाचन कर चुकें, तब सब दायजो पढ़ायकें समधी कूँ समरवावें। जा-जा की पहरावनी होंय, ता-ता के नाम पढ़ायकें देंय। हाजर न होंय, तिनकी पहुँचाय दें। सब जाति के कड़ियल को उपरणा तथा रोकड़ी रु० १) दें। यथासम्बन्ध मुखदिखाई को सम्बन्धी गहना दें। दुलहन के सम्बन्धी सब पहरामनी दें। फेर दोऊ ओर की विज्ञप्ति होय। जो वृद्धि के दिन दूलह के यहाँ ते बागा न बटो होय, तो या समें जाति में बागा, पहरावनी यथा-सौकर्य्य दें। बहनबेटी आरती करें। आरती में रु० ५) अथवा २) डारें। फेर तिलक होय। दक्षिणा रु० ४), २), १) बहू आये की बटे। ये घोड़ीचढ़त की दक्षिणा सूँ दूनी बँटे। बहूबेटीन में बायन रङ्गमेवा, नारियल, गिंदोड़ा तथा खीचड़ी के बँटें। फेर नमस्कार कर सगरे घर जांय। बर के निकट-सम्बन्धी घर रहें। पीछे दूलह के माता-पिता ग्रन्थिबन्धन कर दूलह तथा दुलहन कूँ गोद में लेके चौक में नाचें। तहाँ टोकरा में ज्वार १।ऽ मन धरें। तामें ते और स्त्री उनपे पस्से-पस्से वार-वारकें डारें। पीरी ८-८ हाथ की वारें। न्यौछावर रु० २), १) करें। ऐसे ही और सम्बन्धी दूलह-दुलहन कूँ लेके नाचें। ज्वार वारें, न्यौछावर करें। वो वारी भई ज्वार और पीरी गावनहारी तथा कमीनन कूँ बँटे। कुलदेवता के यहाँ जाय दण्डोत कर सेहरा बड़ा करें। दुलहन के पेट की कटोरी सास खोले। इन्द्रवन्या की लाल साड़ी, हरी दसतोइया की चोली पहरावे। दूध में धोयके निश्चय के रुपैया की मुठिया पहरावे। दुलहन सास प्रभृतिन के पामन लगे। कच्चो दूध दुलहन की मां प्रभृति पीहरकीन के पेट सूँ लगावे। पीछे जो लडुआ पेट सूँ बँधो हतो सो दुलहन कूं खवावे। सब न खायो जाय तो पाँच कौर खवावे। पीछे भण्डार में तथा रु० १०१) की थैली में दुलहन को हाथ डरवावे। जितने

रुपैया दुलहन के हाथ में आवें, तितने को गहना बनवाय देनो। ता पीछे दुलहन की सास दुलहन को नाम धरे। ता पीछे दुलहन को भाई लिवायवे आवे। दुलहन कूँ पीहर ले जाय। ताकूँ पाग, इकलाई देनो। फिर कुलदेव-विसर्जन यज्ञोपवीत के अनुसार होय। कुलदेवता विसर्जन भये पीछे मण्डप एक ओर धरदें। मण्डप के अतिरिक्त और सब सेहरा, माला, होम की भस्म, दीवा, पालिका प्रभृति लेके सौभाग्यवती गाजा-बाजासूँ जलाशय में सिराय आवें। होम के स्थानपे लाल मांटी सों लीप हरदी को साथिया मांड़े। मोटे पापड़, निश्चयताम्बूल की गोद की मिठाई, चौरी के बासन जाति में घर दीठ बँटें।

गङ्गापूजी की रीति

गङ्गापूजी के दिन वर-वधू खड़ी सूँ न्हांय। पठौनी के दिन को शृङ्गार करें। श्रीयमुनाजी के तटपे गाजा-बाजासूँ जांय। वहाँ श्रीयमुनाजी कूँ सिंदूर पहरावें। रेणुका की गौरी बनाय वाकूँ सिंदूर पहरावें। यदि श्रीयमुनाजी नहीं होंय तो चौंतरा के ऊपर खीचड़ीपे कलश धर वाकूँ पूजें, सिंदूर पहरावें। रु० १) श्रीयमुनाजी की भेट करें। कलश होय तो कलश में डारें। गौरी की भेट करें, खीचड़ी मुट्ठी ५-५ तीरपे अथवा कलश के पास गौरी के आगे वर-वधू दोऊ धरें। गूंझा, माठ, सेव के लडुआ, बूंदी के लडुआ, सुहारी, ये ४-४ के हिसाब सूँ नग २० दोऊ जने भोग धरें। घर आये पीछे वर-वधू की आरती होय। बतासा बँटे तथा भीजे चना के वायन वर-वधू जाति में घर-घर बांटवे जांय। कढ़ाईसिराई के कसार के लडुआ दोय-दोय जाति में घर दीठ बँटें। पीछे जितने दिन दूलह गाम में रहे, उतने दिन सासरे में भोजन कूँ आवे। ऐसे ही दुलहन सासरे में भोजन कूं जाय, ताकूँ साड़ी-चोली १ नित्य दीनी जाय। गङ्गापूजी की विशेष बात यज्ञोपवीत में देख लेनी। गामनहारी तथा सब नेगीन कूँ यथोचित विदा देनी।

गुड़िया देवे की रीति

वर के यहाँ सूँ गुड़िया आवे। गुड़िया के जोड़ा १०१ अथवा ५१ दें। तामें वर-वधू सूँ आदि ले सब जाति के नर्त्तकी, गावेशरी, उपाध्याय, पण्ड्या सबन के प्रतिनिधि कपड़ान की गुड़िया बनायके दें। ताके संग खिलौना दें। गुड़िया के खिलौना तथा वासन सब छोटे मँगावने। हांडा २, करछी ७, कटोरी ४, झारी २, थारी २, परात १, कूंड़ी १, झर्झरा १, तबेला १, तवा १, सूप १, चलनी १, काठ के पीढ़ा २, हिंडोला १, पलना १, शय्या १, सिंहासन १, ढोल १, ओखरी-मूसर १, चाकी १, दतरा १, रथ १, डोली १, पालकी १, चोघरा १, इनके यथायोग्य के बिछौना-तकिया, गादी तथा चादर, रथादिक को साज, कनात, तम्बू, जाजम, मिठाई, खिलौना, खील, चना, साड़ी, चोली, दुलहन को काजर-टीकी को बंटा १, तामें टीकी की बंटी १, कुंकुम की बंटी १, सिंदूर की बंटी १, काजर की बंटी १, कांकसी१, लोंग-इलायची के बटुआ २, गन्धाक्षत की थारी १, ये सब साज गावत-बजावत सास लेके आवे। सब बहूबेटी संग आवें। दुलहन शृङ्गार करके माता सहित बैठे। फेर सब साज मांड़के वधू की टीकी कर गुड़िया के जोड़ साड़ी-चोलीपे धरके देय। रु० १) रोकड़ गोद में धरे। धानी, चना, बतासा बँटें। न्योंछावर होय। जैसे सगरे गौना सूँ आदि लेके प्रस्ताव होंय हैं, तैसे गुड़ियान के प्रस्ताव होंय। गुड़ियान के वैसे ही प्रतिनिधि जोड़ा बनें। गौना, अठमासा प्रभृति जापा तांईं पीहरिया करें और विवाह, जनेऊ, मुण्डन आदि सब सासरे के करें। फिर महिना को भोज होय।

महीना के भोज की रीति

महीना के भोज को निमन्त्रण कन्या के पिता की आड़ी सूँ होय। वर वधू खड़ी सूँ न्हांय। पठौनी की पोशाक करें। फेर बहूबेटी वर कूं संग लेके गाजा-बाजासूँ वधू के घर आवें। चौंतरापे चौक पूर पट्टा-पीरी बिछाय

तापे ग्रन्थिबन्धन करके बर-वधू बैठें। आरती होय, आरती में रु० २) अथवा १) डारें। फेर भोज होय। भोजन के समय पहरामनी २, रु० २), चामर सूँ भरी कँसेड़ी १, करछी १, पान को बंटा १, पान की डोली १, चूना-कत्था की डिबिया २, सुपारी, सरोंता, लोंग-इलायची के बटुआ २, आरसी १, इतनो वधू के पीहरिया पढ़ायके दें। भोजन में जातिकेन कूँ तिलक होय। सामग्री—बूँदी, मनोहर, मोहनथाल में सूँ कोई एक होय और प्रस्ताव की रसोई यथावत् सब प्रकार की करनी।

द्वादशी के भोजन की रीति

विवाह भये पीछे प्रथम द्वादशी के दिन अथवा दूसरी द्वादशी कूँ भोज में वर-वधू भोजन ते पूर्व भद्रासनपे ग्रन्थिबन्धन कर बैठें। आरती होय। वधू को पिता पहरावनी २, रु० २) पढ़ायके दें। भोजन में जातिकेन कूँ तिलक होय।

अन्य तीन आरतीन की रीति

षष्ठ पिंडरू (कंद्रभी छठ), सम्वत्सर तथा वर्षदिन की आरती उतरें। वर-वधू पठौनी की पोशाक कर गठजोड़ा सूँ बैठें। तिनमें वधू के पीहरिया पहरामनी दोय-दोय तथा रुपैया दोय-दोय दें। सगेन कूँ जिमावें। चारों आरतीन में भीजे चना दुलहन के यहाँ ते आवें और दूलह-दुलहन अथवा ऐवाती जाति में घर-घर जायके कटोरी सूँ वायन बाँटें।

पीहरियान की संक्रान्ति तथा अधिक देवे की रीति

संक्रान्ति के दिन खीचड़ी मन १।ऽ अथवा सेर ।।ऽ अथवा सेर ऽ५, लडुआ तिल के ३३, सेर-सेर को वा आध-आध सेर को अथवा पाव पाव सेर को, तिनमें आधे बूरा के, आधे गुड़ के तथा पहरामनी २, रु० ४) देंय। ऐसे ही सतुआ दें। वा दिन सतुआ के लडुआ ३३ देंय। पहरामनी, रु० २) देंय। अधिक आवे, तब अधिक दोय देंय, एक बड़ो, एक छोटो, तामें सामग्री—सेव के लडुआ ३१, सेर-सेर को नग अथवा ऽ।। सेर को नग। याते आधो छोटो दे। अधिक में पहरावनी दोय-दोय यथाशक्ति देय।


परिशिष्ट

१—कुंकुमपत्र

॥ श्रीहरिः ॥

स्वस्तिश्रीमत्सकलगुणगुणालंकृतेषु सौजन्यसुधासागरेषु श्री·········
अमुक महाशयेषु अमुकस्य नतयः (तथा शुभाशिषः—यथासम्बन्ध) समुल्लसन्तु शमुभयत्रास्तत्रपरञ्च—

यहाँ अमुक के अमुक प्रस्ताव को शुभ मुहूर्त्त अमुक मास, अमुक पक्ष, अमुक तिथि, वार को (विवाह होय तो—अमुक की चि० लाली के सङ्ग) निश्चित भयो है। आप कृपा करकें प्रस्ताव के पूर्व सकुटुम्ब सपरिवार वेग पधारेंगे। आपके घर को प्रस्ताव है, आपके पधारे सूँ प्रस्ताव की शोभा अधिक होयगी। आपको स्नेह क्षणएक भूलें नहीं हैं। स्नेह प्रतिक्षण वर्द्धमान राखेंगे। किमधिकं विज्ञेषु। मिति······।

प्रस्ताव की कुंकुमपत्री मुहूर्त्त सूँ लिखकें कुंकुम के छांटा देकें उचित समयपे यथासम्बन्ध आग्रहपूर्वक पठामनी। "श्री के नीचे बड़े होंय तिनकों "श्रीमत्प्रभुन आगें सुधि करेंगे, यहाँ सुधि करे हैं" ऐसे लिखनो तथा छोटे होंय तो "श्रीमत्प्रभुन आगें सुधि करें हैं, वहाँ सुधि करोगे" ऐसे लिखनो। याके अनन्तर विशेष सम्बन्ध होय, तहाँ आग्रह-पत्र पठामनो।

२—कटोरी तथा अक्षत के बुलावा

चांदी की कटोरी में पीरे अक्षत, सुपारी ५, हरदी की गांठ ५ पीरी के टूक में धरके घर के मान्यपात्र अथवा सजातीय द्वारा निमन्त्रण दियो जाय, ताको 'कटोरी दिखावनो' कहें हैं। कटोरी दिखायवेवारो पोशाक करके जाय। सङ्ग में पण्ड्या, व्रतेश्वरी जाय। घर के बड़े कूँ कटोरी दिखायी जाय, ता समें "अमुक अल्ल के, अमुक के पंती, अमुक के नाती, अमुक के पुत्र, अमुक को अमुक प्रस्ताव अमुक दिन को है, ता की सभा देखबे कूँ

तथा भोज में भोजन करवे कूँ सकुटुम्ब सपरिवार पधारेंगे।" ऐसे कहनो। कटोरी देखवेवारो अभ्युत्थानपूर्वक मिले, कटोरी देखे। खुले माथे कटोरी देखवे की रीति नहीं है।

बहूबेटीन में कांसे की कटोरी में पीरे अक्षत, सुपारी, हरदी धरके पीरी के कपड़ा में लपेटके वारन नौंता देय। निमन्त्रण पीछे प्रस्ताव की सभा तथा भोज के बुलावा समयपे कुण्डिया, मिश्र, तीर्थवासी, व्रतेश्वरी करें। पुण्याहवाचन को एक बुलावा होय। बुलावा पीछे पुण्याहवाचन में प्रतीक्षा नहीं करी जाय और सभा तथा भोज के बुलावा घंटा-घंटा भर के अन्तर सूँ तीन होंय। छेले बुलावा पीछे कछु प्रतीक्षा करके प्रस्ताव-कार्य प्रारम्भ होय जाय। ऐसे ही बहूबेटीन में कुण्डिनी बुलावा करे।

३-चौंतरा-निर्माण

दूलह अथवा दुलहन के हाथ सों चार हाथ लंबो, चार हाथ चौड़ो तथा एक हाथ ऊँचो चौखूंटो चौंतरा प्रस्ताव को बने। सो मुहूर्त्त सूँ प्रस्ताव के चौक के वायव्यकोण में पूर्वाभिमुख बने। खदाने की मांटी ताके मध्य में डारी जाय। चौंतरा के चारों आड़ी थोड़ी जगह छोड़ी जाय। पीठक सिंहासन रूप सूँ रहे। पीठक की सीढ़ी पाँच सूं लेके ग्यारह तक ऊंनी राखनी। यदि प्रस्ताव को चौंतरा पहिले को होय तो वाकूँ खदाने की मांटी सूँ लिपवाय देनो। यदि लिपवे योग्य न होय, पक्को होय तो खदाने की मांटी वेदी के उपयोग में आवे। चौंतरापे सुपेदी, चित्राम आदि करावने। दक्षिण आड़ी एक सीढ़ी चढ़वे कूँ रहे।

४-चौक

चौंतरापे अथवा अन्यत्र आवश्यकतानुसार, गेहूं के चून में हरदी मिलायके ऐवाती चौक पूरे। तापे बिना कील के दो पट्टा बिछें, तिनपे पीरी

८ हाथ अथवा ४ हाथ की बिछे, ताको अग्र उत्तर की आड़ी रहे । संस्कार्य कूँ लेके माता-पिता चौक बैठें । दक्षिण आड़ी माता बैठे, बायीं आड़ी पिता बैठे, बीच में संस्कार्य रहे । अभिषेक के समय पत्नी बायीं आड़ी बैठे। चौकपे ग्रन्थिबन्धन होय । माता के चादर के छेड़ा में तथा पिता के उपरणा के छेड़ा में पीरे अक्षत, सुपारी धरके ऐवाती ग्रन्थिबन्धन करे । ग्रन्थिबन्धन बड़ो होय, ता समय वापे अक्षत डारके बड़ो होय । तिलक के समय पहिले पिता के तिलक होय, फेर माता के चादरपे टीकी होय, फेर संस्कार्य के तिलक होय । तिलक दो बेर होय, अक्षत हू दो बेर लगाये जांय । आरती के समय आरती होय । आरती गेहूं के चून में हरदी डारकें बनायी जाय, चार मुठिया बनें, तेल पूरकें चार बाती डारी जांय । आरती समय पे बहनबेटी करें । मुठिया वारें । तीनोंन के हाथ में पीरे अक्षत तथा दो-दो सुपारी दें । चौक पे मुख्य होय सो अक्षत-सुपारी के संग नगद डारे । दूसरे अक्षत-सुपारी डारें । आरती भये पीछे आरती कूँ ऊँची अक्षत डारकें धरनी, धरती में नहीं धरनी ।

५—आसन-बिछायत

प्रस्ताव की सभा के पूर्व बिछायत होय । तामें गोस्वामी-बालकन को बड़ो गलीचा १, तासूँ मिलो गोकुलस्थवर्ग को बड़ो गलीचा १, ताके पास मथुरास्थवर्ग को बड़ो गलीचा १ बिछावने । चौंतरा के समीप उपाध्यायजी, बड़े चौबेजी, बड़े मुखियाजी, पण्ड्याजी के छोटे आसन बिछावने । विद्वद्वर्ग तथा भीतरिया प्रभृतिन कूँ जाजम, सतरञ्जी बिछावनी । सेठ साहूकार, स्नेही, मित्रवर्गन के लिये जाजम बिछावनी । गवैयान के लिये फर्श बिछावनो । बहूबेटीन में गोस्वामी, गोकुलस्थ तथा मथुरास्थन के लिये क्रमसूँ तीन गलीचा बिछावने तथा औरन के लिये जाजम एक बिछावनी । पीरी डारके चिक बँधवावनी, जैसे सामों न पड़े । चौक में चँदोवा बँधवानो ।

६—अभ्युत्थान

सभा में जो सजातीय आवें, तिनके लिये सब जने उठके अभ्युत्थान करें, परस्पर नमस्कार करें। अभ्युत्थान छोटे बड़े सबकूँ होय।

७—तिलक

पूर्व में तिलक को नियम ये हो कि सर्वप्रथम श्रीनाथजी के टीकैत के तिलक होतो, फिर क्रमशः सातों घरन के टीकैतन के होतो। फिर भट्टवर्ग में वयक्रम सूँ और दाक्षिणात्यन में सहभोज्यता के क्रमसूँ होतो। किन्तु अब या क्रम में महासभा द्वारा निर्धारित वयोवृद्ध-क्रम सूँ तिलक होयवे को नियम प्रचलित है। वाके अनुसार सभा में तिलक के अवसरपे तिलक होय। प्रथम प्रान्त के उपाध्यायजी, तदनन्तर दूसरे प्रान्तन के उपाध्यायजीन कूँ तिलक होय। पीछे वयोवृद्ध-क्रम सूँ गोस्वामी-बालकन के तिलक होय। ता पीछे गोकुलस्थवर्ग में वयोवृद्ध-क्रम सूँ तिलक होय। पीछे मथुरास्थवर्ग में तथा बड़े चौबेजी, बड़े मुखियाजी तथा प्रान्तन के पण्ड्यान कूँ तिलक होय। तिलक-अक्षत दो-दो बेर लगाये जांय। दक्षिणा के अनुसार सुपारी बटें।

८—पोशाक

प्रस्ताव की सभा में पाग, फेंटा तथा इकलाई तथा दुत्तो बगलबन्दी की पोशाक होय। वृद्धि-निमन्त्रण तथा छठी-निमन्त्रण में खिड़कीदार पाग, जामा, सूथन की पोशाक होय अथवा ऊपर प्रमान होय। मार्कण्डेयपूजा, ऋतुशान्ति, ग्रहशान्ति तथा यज्ञोपवीत की सभा में पाग, फेंटा नहीं होय, और सब सभान में पूरी पोशाक होय। कुलदेवता विराजे होंय, तब वर को पिता घोड़ीचढ़त तथा पठौनी के दिन पूरी पोशाक करे तथा. कन्या को पिता दायजा के समय पूरी पोशाक करे।

९-विज्ञप्ति

गोना देवे के समय तथा अठमासा देवे के समय, यज्ञोपवीत में वृद्धि के दिन भात देवे के समय, विवाह में वृद्धि के दिन भात देवे के समय तथा पठौनी में दायजा देवे के समय परस्पर विज्ञप्ति होय । सो दोऊ आड़ी के मान्यपात्र अथवा सजातीय करें । पहिले देवेवारे की आड़ी सों विज्ञप्ति होय । तामें (लेवेवारेन के सब सम्बन्धीन के नाम लेने) "इनसों इतते (फेर देवेवारेन के सब सम्बन्धीन के नाम लेंने) ये विज्ञप्ति करत हैं कि जो आप लायक कछु बनि नहिं आयो है, यथाशक्ति तुलसीपत्र दियो है, सो बहुत करि मानोंगे ।" फेर लेवेवारे की आड़ी सूँ विज्ञप्ति होय कि (देवेवारेन के सब सम्बन्धीन के नाम लेने) "इनसों इतते (लेवेवारेन के सब सम्बन्धीन के नाम लेने) ये विज्ञप्ति करत हैं कि जो आपने या समय में इतनो दियो है, सो आप ही सों बनि आवे, आप तो हमारो घर बसायो है ।"

१०-कुलदेवता की तारी

कुलदेवता की स्वर्णप्रतिमा गोल कुण्डादार चतुर्भुज विष्णुमूर्ति की तैयार करायी जाय, सो टोंटीदार कुल्हड़ा के गरे में नाड़ासूँ बँधे, ताकूं कुलदेवता की तारी कहें हैं, सो विसर्जन पीछे घर में राखी जाय ।

११-कुलदेवता की शाखा

गोस्वामी-बालकन के तथा करञ्जीन के यहाँ शाखा करञ्ज (कंजा) की आवे तथा रेही, तिघरा, भांभेय, करम्भा, बागरीदी, आत्रेय प्रभृतिन के यहाँ आक की शाखा आवे ।

१२-भोजन-संकल्प

यज्ञोपवीत तथा विवाह के भोजनपंक्ति के चारों भोजन में सङ्कल्प होय ।

यज्ञोपवीत में दूलह को पिता तथा विवाह में दूलह-दुलहन के पिता सङ्कल्प करें। सङ्कल्प या प्रकार होय—

एको विष्णुर्महद्भूतं प्रथग्भूतान्यनेकशः।
त्रीन् लोकान्व्याप्त भूतात्मा भुंक्ते विश्वभुगव्ययः॥

अनेन ब्राह्मण समाराधनेन भगवान् श्रीगोपीजनवल्लभप्रीयताम्। हरिः ॐ उपास्मै गायता नरः। पवमानाय इन्दवे। अभिदेवां इयक्षते। अभिते मधुना-पयोऽथर्वाणो अशिश्रयुः। देवं देवाय देवयुः। सनः पवस्वशंगवे। संजनाय समर्वते। स ँ राजन्नोषधीभ्यः। बभ्रवेनुस्वतवसेऽरुणाय दिविस्पृशे। सोमाय गाथमर्चत। हस्तच्युतेभिरद्रिभिः। सुतं सोमं पुनीतनः। मधावा धावता मधु। ओदनमुद्ब्रुवते। परमेष्ठी वा एषः। यदोदनः परमामे वैन ँ श्रियं गमयति। यं तु नदयो वर्षन्तु पर्जन्याः। सुपिप्पला ओषधयो भवन्तु। अन्नवता मोदनवता मामिक्षवतामेषा ँ राजा भूयासं। (सुभोज्यमस्तु)

१३—कुलदेव-विसर्जन

यज्ञोपवीत तथा विवाह में कुलदेवता-विसर्जन षष्ठ दिवस छोड़कें समदिवस होय, पञ्चम तथा सप्तम कूँ छोड़कें विषमदिवस नहीं होय।

समे च दिवसे कुर्याद्देवकोत्थापनं बुधः।
षष्ठं च विषमं नेष्टं मुक्त्वा पंचमसप्तमौ॥

यदि नान्दीश्राद्ध के अनन्तर तथा कुलदेवता-विसर्जन सूँ पूर्व वर-कन्या की माता कूँ अटकाव होय जाय तो श्रीशान्ति होय। ता पीछे कुलदेव-विसर्जन होय।

१४—समित्समारोपण

विवाह के होम को अग्नि है, सो स्मार्ताग्नि कहावे है। ये अग्नि

आजीवन घर में राखनो। ता अग्नि को मन्त्रन द्वारा समिधा में आरोप करनो। याकों समित्समारोपण कहें हैं। एक बेर समिधा में आरोपण कियो भयो अग्नि बारह दिन ताईं रहे। १३ वें दिन उपाध्यायजी सों अग्नि सिद्ध कराय समित्समारोपण करनो। सो समिधा सुरक्षित रहे। होम के समय अग्नि में समिधा पधराई जाय। सायं प्रातः नित्य होम होय। होम के अन्त में नित्य आरोपण होय तथा दर्शपौर्णमास इष्टि यथासमय होती रहें। 'विश्वप्रकाश' ग्रन्थ के अनुसार समिधा में, दक्षिण हस्त में तथा आत्मा में अग्नि को आरोप होय है। परन्तु समिधा में आरोप को मुख्य प्रचार है।

१५—गीत

जिनके पिता विद्यमान हों, उनके जन्म-दिवस कूँ जच्चा गवें। जिनके पिता विद्यमान न होंय, तिनके बधावा गवें। अठमासा में साध गवें। यज्ञोपवीत में घोड़ी-बन्ना गवें। यज्ञोपवीत की वर्षदिन ताईं चारों आरतीन में घोड़ी-बन्ना गवें। विवाह में दोऊ आड़ी घोड़ी-लाड़ी गवें।

१६—कठिनशब्द-सरलार्थ

अभिषेक—कलश के जल सूँ आम्रपल्लव द्वारा वैदिकमन्त्रन सूँ संस्कार्य तथा उनके माता-पिता को मार्जन।

अण्टलपूसा—काच की पोत, सोने के मनकान संग पुवो भयो मङ्गलसूत्र।

आखत—गेहूँ, चामर आदि जो मालिन प्रभृति कूँ प्रस्ताव-सम्बन्धी कोई वस्तु लावे, तब नेग-परोत के पहिले दिये जांय, जासूँ वो खाली हाथ न जाय।

आखू—माखन-मिश्री, जो बालक कूँ चौथे महीना चटाये जांय।

आज्यस्थाली—होम के घी को पात्र।

इन्द्रवन्या—हाथी-पुतरी के छापा की साड़ी।

उकर—मूंग की अथवा उर्द की पिसी दार की पिट्ठी कूँ घी में सेकके बूरा मिलाय लडुआ बाँधें अथवा खुलो राखो जाय, सो सामग्री।

उल्र्या—अन्नप्राशन के दिन देवे को रेशमी रूमाल।

उत्तरी—चार अंगुल चौड़ी किनारी की अस्तरदार पट्टी, जो जामापे जनेऊ की तरह पहरी जाय।

ऋतु—मासिकधर्म।

कड़ियल—पठौनी के दिन वरपक्ष के यहाँ देवे को उपरणा, रोकड़ आदि।

कट्ठन—उपाध्याय, पण्डया, धाय, दासी, इनकी पहरामनी।

कन्ता—कावड़ की सब वस्तु आगे साजकें जो धरी जांय, सो।

कमीन—नाई, वारी, कुम्हारी, धोबी, महतर।

कुरूकुरू—मोटालू के दिन केलू, लोढी पूजे जांय, सो।

केलू—चपटो खपरैल।

गड़गड़ी—चौक पूरकें चार कूलड़ा चार कोनेपे धरकें त्रिसूत्र सूँ चारों आड़ी बाँधे जांय। दो कूलड़ान में गरम जल, दोन में ठण्डो जल भरो जाय, तासूँ स्नान होय।

गोठी साड़ी—अठमासे में पहरवे की साड़ी।

गोसकी—ऋतु के समय बटवे की वस्तु के वायन।

ग्रन्थिबन्धन—गठजोड़ा।

चक्कीमूसर—वृद्धि की रात्रि कूं चक्कीमूसर की पूजा की विधि।

चकुली—मैदा तथा चोरीठा तथा तिल की नमकीन सामग्री।

चरुआ—बालक के जन्म के तीसरे वा पाँचवें दिन चूल्हेपें पूजा करकें जच्चा के पीवे को जल ओंटायवे के लिये चढ़ायो गयो पात्र।

चरुस्थाली—होम को भात सिद्ध करबे को पात्र।

चीरा—पाग के ऊपर बाँधबे की चार अंगुल चौड़ी किनारी की अस्तरदार पट्टी।

चौरीठा—चामर को चून।

चौरी—चौंतरा के चारों कौनेपे बाँधबे के उतार-चढ़ाव के चित्र किये भये मांटी के वासन।

छटावर—छटी के दिन बहनबेटी के लायबे की वस्तु।

छायल—विधवा के पहरबे योग्य छापा की सफ़ेद साड़ी।

छायादान—कांसे के छालिया में पतरो घी तथा दक्षिणा धरकें, मुख तथा नख देखकें जो दान कियो जाय।

टण्डुल—दरयाई वस्त्र के टूक में पीरे अक्षत बाँधकें दुलहन के माँथे में बाँधो जाय।

ढेवरी—उर्द की दार के चून में तिल डारकें घी को मोन देकें पेठा के रस में सानो जाय। हथेली सूं टिकिया करके सुखायी जांय, तिन्हें तली जांय, सो सामग्री।

तलंताट—विवाह में दूलह-दुलहन के उबटने की वस्तु, जो थारी में साजकें ले जांय।

तमोल—बालक के जन्म भये पीछे जो जाति में रोकड़ा, वायन बँटे।

थापा—पूरी हथेली में कुंकुम अथवा हरदी लगायकें भीतपें मांड़े जांय।

दण्ड—ढाक की लकड़ी, जो ब्रह्मचारी धारण करे। अग्र सहित सूधी ब्रह्मचारी के कान सूँ ऊँची रहे।

दलम—प्रथम ऋतु समय तीर की नोंक सूँ दूध के छींटा तेल चढ़वे की रीति सूं दिये जांय, सो रीति।

दसतोइया की चोली—विवाह की चोली, जिनमें लाल मगजी तथा लाल साथिया कपड़ा को लगे तथा बहुत सी तनी लगें।

दसूठन—जच्चा के दसवें दिन न्हायवे को नाम तथा वा दिन जो बायन बँटें, तिनको नाम।

नागपसायन—सौभाग्यवती स्त्री, जाँको अटकाव जातो रहे।

नीमा—जामा के नीचे पहरबे को इकहरा वस्त्र।

नेग—मङ्गल-कार्य के समय माली, नाई प्रभृति नेगीन कूँ जो नगद रु० १।) प्रभृति दिये जांय।

पगमण्डा—चलते समय बिछायवे की पीरी को कपड़ा।

पट्टू—चौकपे बिछायवेकी पीरी।

पहरामनी—मङ्गल-कार्य में पहरवे के ५, ४ अथवा २ कपड़ा, जो नाड़ा सूँ बाँधके दिये जांय।

परोत—नेगी तथा बहनबेटी आदि कूँ गेहूँ ऽ५ सेर, गुड़ ऽ१ सेर दिये जांय।

पटोरा—रेशमी वस्त्र, जो दुलहन पठौनी के दिन पहरे।

पनवाड़ा—आम के पतौआ की पातर।

पाटिया-चटाई की सेवा—सेंमई, बड़ी-मगोड़ी आदि करनो।

पिंडरू—जननाशौच, जामें जल चिकनाई नहीं छूनी।

पीतांचली—रेशमी वस्त्र, विधवा के पहरवे के।

प्रोलू—पठौनी के दिन नाना के आड़ी की कन्या के घर मण्डलपे धरवे की पहरामनी।

बड़क—जनेऊ में ब्रह्मचारी माता के संग भोजन करे, सो विधि।

बलगुती—प्रथम ऋतुमती के पास दलम-समय बैठें, सो कन्या।

बाररुकाई—गृहप्रवेश के समय द्वारपे बहनबेटी रोकें, सो रीति।

बायन—बहनबेटीन में जो वस्तु पीरी, बतासा आदि बटें, सो।

भात—वर-कन्या के नाना के आड़ी सूँ दीनी पहरामनी, रोकड़ा आदि।

भूयसी—वैदिक-कार्यन में विभाग करके बांटी जाय, सो दक्षिणा।

मसोदा—रसोई में हाथ पोंछवे, धरवे उठायवे के छन्ना।

महमद—पीरी रँगी भयी कारे पल्ला की साड़ी।

मङ्गलस्नान—पुत्र-जन्म के समय गाजा-बाजासूँ जो प्रथम पिता स्नान करे।

मन्त्राक्षता—वेदमन्त्रन सूँ चौकपे बैठे, उनपें मङ्गलाशीर्वाद के जो पीताक्षत डारे जांय।

मनसेरू—पुरुषवर्ग।

मौंजीमेखला—मूंज की तिगुनी रस्सी रेशम मढ़ी, जो ब्रह्मचारी कमर में धारण करे। याके संग मृगचर्म की रेशममढ़ी पट्टी जनेऊ की नांई ब्रह्मचारी धारण करे ताकूं अजिन कहें हैं; किन्तु आजकल याकूँ मेखला कही जाय है।

मूसवायन—ढके वायन सूपड़ी के विवाह तथा पठौनी के दिन के।

मोटालू—बालक के जन्म पीछे तीसरे अथवा पाँचवें दिन की रीति।

रेजा—कापड़ा, साड़ी के संग जो धरो जाय।

व्रतेश्वरी—पण्डया, तीर्थवासी, पुरोहित आदि. जो वृत्ति पावें।

समधोरा—विवाह के दिन समधिन कूँ जो गहना, पहरामनी आदि दिये जांय।

साचोनी—गिंदोरा सरीखी खांड़ की छोटी टिकिया।

साध—अठमासा की दुलहन कूँ देवे के कपड़ा आदि तथा खवायवे की वस्तु।

सिखोरी—मैदा की मेवाटी, जिनमें कूर अथवा वेसन भरो जाय, मेवा नहीं।

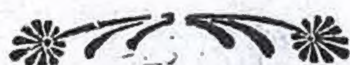
सेहरा—दूलह-दुलहन को माथा में बाँधवे को खजूर को मौर, जामें ऊपर तथा नीचे फूल बँधें।

शंकुल—विवाह के दिन वर की आड़ी सूं कन्या के घर पीतांचली तथा सामग्री जांय, सो।

शकुनपिष्ट—मढ़े चून की चिड़िया।

हथौना—सीरा-पूरी, जो तेल चढ़वे के समय दियो जाय।

॥ शुभम् ॥



शुद्धि-पत्रक

अशुद्धि	पृष्ठ	पंक्ति	शुद्धि
विज्ञाप्ति	४	२५	विज्ञप्ति
डरनो	१६	५	डारनो
समते	२०	१०	समेत
दोयपूजा	२१	२४	ढोलपूजा
चौके	२२	२	चौक
जाव	२४	१८	जाय
रेशमी हाथ चार को	३१	२३	रेशमी टूक हाथ चार को
होय	३७	१८	दोय
ढोल के	४०	७	ढोलपूजा के
आयी हौं	५०	२२	आयी होंय
टीका	५५	२	टीको
डोलू	६०	१८	ओलू वा ओलू (मारवाड़ी शब्द)
"श्री के नीचे	६७	१३	"श्रीहरि" के नीचे
ओलू	७६	१६	अथवा ओलू (मारवाड़ी शब्द)

आवश्यक टिप्पणी

पृष्ठ ७०—तिलक को प्रचलित क्रम ये है—

(१) श्रीमहाप्रभुजी के मान्य द्राविड़ा उपाध्यायजी।

(२) प्रान्तीय उपाध्यायजी।

(३) घर के उपाध्यायजी यदि कर्म कराय रहे होंय तो उनकी पुस्तक को अर्चन। और जाति के पीछे उन्हें तिलक।

(४) अन्य प्रान्तन के उपाध्यायजी।

(५) श्रीनाथजी के टीकैत।

(६) वयोवृद्ध क्रम सूं समस्त गोस्वामी-बालक ।

(७) वयोवृद्ध क्रम सूं गोकुलस्थवर्ग ।

(८) वयोवृद्ध क्रम सूं दाक्षिणात्यवर्ग ।

(९) वयोवृद्ध क्रम सूं मथुरास्थवर्ग ।

(१०) बड़े चौबेजी ।

(११) बड़े मुखियाजी ।

(१२) प्रान्तन के पण्ड्या ।

किन्तु कतिपय घरन में या क्रम में कछु भेद भी पायो जाय, जैसे श्रीचन्द्रमाजी के घर में प्रथम बड़े चौबेजी तथा बड़े मुखियाजी कूं होय, अनन्तर प्रचलित क्रम सूं । या ही प्रकार कहूँ-कहूँ उपाध्यायन के तिलक-क्रम में भी अन्तर है । अतएव जहाँ जैसी कुल-मर्यादा होय, तहाँ वैसी रीति करनी ।

पृष्ठ ७१—कुलदेवता की तारी प्रायः सोने की गोल टिकड़ी के बीच में नाड़ा बाँधवे को छेद होय, ऐसी तैयार करायी जाय । कतिपय स्थानन में या पृष्ठ में उल्लिखित रूप की भी होय है । अतः यामें भिन्न-भिन्न घरन में भेद है, सर्वत्र एकसी नहीं ।

पृष्ठ ७२—भोजन-सङ्कल्प (उपास्मै) में कछु अशुद्धि रह गयी हैं, अतः उन्हें शुद्ध कर या प्रकार समझनो—

एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ।
त्रीन् लोकान्व्याप्त भूतात्मा भुंक्ते विश्वभुगव्ययः ॥

(अनेन ब्राह्मण समाराधनेन भगवान् श्रीगोपीजनवल्लभः प्रीयताम्) हरिः ओं । उपास्मै गायता नरः । पवमानायेन्दवे । अभिदेवा इयक्षते । अभि ते मधुना पयोऽथर्वाणो अशिश्रयुः । देवं देवाय देवयु । सनः पवस्व शं गवे । शं जनायशमर्वते । शं राजन्नोषधीभ्यः ॥ बभ्रवे नु स्वतवसेऽरुणाय दिविस्पृशे । सोमाय गाथमर्चत । हस्तच्युतेभिरद्रिभिः । सुतं सोमं पुनीतन । मधावा धावता मधु । ओदनमुद्बुवते । परमेष्ठी वा एषः । यदोदनः । परमामेवैनँ श्रियं गमयति ॥ यं तु नदयो वर्षन्तु पर्जन्याः । सुपिप्पला ओषधयो भवन्तु । अन्नवतामोदनवतामामिक्षवताम् । एषाँ राजा भूयासं । (सुभोज्यमस्तु) ॥